बरिस 5 अंक 19

www.sirijan.com

सिरिजन

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका

जनवरी-मार्च 2023

लोर भरल बा आँख में , दुख में बा परिवार।

स्मृति में अनुभूति के, सरधा सुमन हजार ॥

श्रद्धांजलि

/jaibhojpurijaibhojpuria @sirijanbhojpuri 9801230034

सिरिजन

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका
सिरिजन (अंक 19: जनवरी-मार्च 2023)

प्रबंध निदेशक	:	सतीश कुमार त्रिपाठी
संरक्षक	:	1. सुरेश कुमार, (मुम्बई)
		2. नरसिंह तिवारी , (दिल्ली)
प्रधान सम्पादक	:	सुभाष पाण्डेय
सम्पादक	:	डॉ अनिल चौबे
बिशिष्ट सम्पादक	:	बृजभूषण तिवारी
उप सम्पादक कार्यकारी सम्पादक सलाहकार सम्पादक	: : :	तारकेश्वर राय संजय कुमार मिश्र राजीव उपाध्याय
सह सम्पादक	:	1. भावेश अंजन
		2. अमरेन्द्र कुमार सिंह
		3. माया चौबे
		4. गणेश नाथ तिवारी
		5. राम प्रकाश तिवारी
प्रबंध सम्पादक	:	माया शर्मा
आमंत्रित सम्पादक	:	चंद्र भूषण यादव
बिदेश प्रतिनिधि	:	रवि शंकर तिवारी
ब्यूरो चीफ	:	ज्वाला सिंह
ब्यूरो चीफ (बिहार)	:	1.अरविंद सिंह, 2. मिथिलेश साह
ब्यूरो चीफ (प. बंगाल)	:	दीपक कुमार सिंह
ब्यूरो चीफ (उत्तर प्रदेश)	:	1. राजन द्विवेदी 2. अनुपम तिवारी
ब्यूरो चीफ (झारखण्ड)	:	राठौर नितान्त
पश्चिम भारत प्रतिनिधि	:	बिजय शुक्ला
दिल्ली, NCR प्रतिनिधि	:	बिनोद गिरी
क़ानूनी सलाहकार	:	नंदेश्वर मिश्र (अधिवक्ता)

(कुल्हि पद अवैतनिक बाड़न स)

स्वामित्व, प्रकाशक सतीश कुमार त्रिपाठी के ओरी से : 657, छठवीं मंजिल, अग्रवाल मेट्रो हाइट, प्लाट नंबर इ-5 नेताजी सुभाष पैलेस, सेंट्रल वजीरपुर,पीतमपुरा, दिल्ली – 110001, सिरिजन में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरूरी नइखे की सम्पादक के बिचार लेखक के बिचार से मिले। रचना प बिवाद के जिम्मेदारी रचनाकार के रही। कुल्हि बिवादन के निपटारा नई दिल्ली के सक्षम अदालत अउर फ़ोरम में करल जाई।

अनुक्रम

संपादकीय

- संपादकीय - डॉ अनिल चौबे / 4

आपन बात

- आपन बात - तारकेश्वर राय / 5

कनखी

- रउवो डेराइले का सर्दी से? - डॉ. अनिल चौबे / 26

कथा-कहानी

- बखरा - डॉ शिप्रा मिश्रा / 35
- सनकेसिया - डॉ सुशीला ओझा / 39
- जइसे हीरा के चमक के - विद्या शंकर विद्यार्थी/47
- फूलमतिया - मीनाधर पाठक / 52
- कराटे - डॉ मधुबाला सिन्हा / 58
- आत्मा - तारकेश्वर राय "तारक" / 59
- नारी महान - सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा / 65
- दहेज - नन्दीश्वर द्विवेदी "राजन" / 89

कविता

- दोहा - हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' / 27
- राधा मनबाधा - दिनेश पाण्डेय / 28
- ओरहन - दिनेश पाण्डेय / 28
- कुतूहल - दिनेश पाण्डेय / 28
- राधा तू आधा - दिनेश पाण्डेय / 28
- बुढियाइल साँझ - नथुनी पांडेय "नागेंद्र" / 31
- भूख का भाषा में ... - नथुनी पांडेय "नागेंद्र"/31
- भोजपुरी दोहा - अखिलेश्वर मिश्र / 41
- चटकल दीयना - देवेन्द्र कुमार राय / 42
- पूष क जाड़ा - राकेश कुमार पाण्डेय / 43
- सुन रे चंदा - गीता चौबे गूँज / 46
- दिहे रोटी जन बसिआइन-विद्या शंकर विद्यार्थी/48
- का इहे दुनियां ह ? - माया चौबे / 51
- ए सुगना - राम सागर सिंह / 68
- दीप शलभ - मार्कण्डेय शारदेय / 71
- नारी - पुरन्जय गुप्ता "चमन देहाती" / 84
- अईसन रतिया फेरू नू आई - ऋषि तिवारी / 85
- भोजपुरी के जन बिसराईं - बृजेश शुक्ला / 86

गीत/ गजल

- डॉ. जौहर शफियाबादी के कुछ ग़ज़ल / 25
- खन में हँसे खने में रोवे - डॉ. कमलेश राय / 32
- हम ऐना - डॉ. कमलेश राय / 33
- फूले सरसइया के खेतवा - इंद्र कुमार दीक्षित / 34
- इन्द्रधनुही के रंग में रंगल जिन्दगी - संगीत सुभाष / 36
- बात बहुते रहे - संगीत सुभाष / 36
- घर उदास बा रे माई - कनक किशोर / 37
- खेत सगरो बिला गइल बाटे - सन्तोष कुमार /38
- लिहलऽ घर संसार से मुँहवा मोड़ि -गणेश नाथ तिवारी/44
- माया बजार में - मोहन पाण्डेय 'भ्रमर' / 45
- तीन गजल - विद्या शंकर विद्यार्थी / 49
- सर्प के फन में कबो ना चीनी बा- विद्या शंकर विद्यार्थी / 50
- लखनलाल सेवा करे - माया शर्मा / 78
- देसवा ह सोने के चिरइया-रामेश्वर तिवारी 'राजन' / 81
- कहाँ बा ? - शैलेन्द्र कुमार / 82
- के बा ? - शैलेन्द्र कुमार / 82
- भारतवासी - दीपक तिवारी / 83

पुरुखन के कोठार से

- स्व पंडित धरीक्षण मिश्र जी के कविता / 23
- अंजन जी कऽ चारगो मुक्तक / 24

आलेख/निबंध

- दीया के अँजोर में - परिचय दास / 29
- भारतीय संविधान आ ओकर रख-रखाव - डॉ. ज्योत्स्ना प्रसाद / 60
- पियबऽ त मुअबऽ - प्रशान्त करण / 69

संस्मरण

- नाम के किस्सा - मनोज कुमार वर्मा / 76
- कवन दिन देखावेलन विधाता - सुहानी राय /87

रसिक जी के समर्पित पन्ना - 7-21

हँसी-ठिठोली- निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव / 79

समाचार – 97-103

सतमेझरा – 1-3,22,80, 82,96,104-106

रसिकाय तस्मै: स्वधा

डॉ. अनिल चौबे
सम्पादक, सिरिजन

कुछ लोग चलेला त धरती बोझ अनुभव करेली आ कुछ के चलल नीक लीक बन जाला। प्रकृति आवाज लगावेली कि आईं फेरु से हम रऊआ अयन में एकटक नयन बिछवले बानीं।

अइसने रहनीं कन्हैया प्रसाद तिवारी "रसिक" जी। बिहार के जिला- रोहतास, थाना- दावथ, पोस्ट-सकरी (हसन बाज़ार) के हथडीहाँ गाँव में इहाँ के जन्म भइल रहे।

भारतीय वायुसेना से अवकाश प्राप्त सैनिक के रूप में बंगलोर में रहत साहित्य साधनारत रहनीं। हिन्दी, अंग्रेज़ी आ भोजपुरी भाषा में बराबर रचना रचेवाला, "जय भोजपुरी जय भोजपुरिया" संस्था के आ "सिरिजन" पत्रिका के वरिष्ठ संरक्षक सह मार्गदर्शक भी रहनीं।

मृत्यु एह नश्वर दुनिया के शाश्वत सत्य ह, बाकी बहुत सत्य अइसन होला जे छाती छेद के आँखी से लोर ढरकावेला। रसिक जी के एह लोक से गइल एगो अइसने सत्य रहे। ई सभे जानता कि आत्मा अजर अमर ह, शरीर त्यागते जब आत्मा अमरत्व की ओर प्रस्थान करेला त शरीर से सम्बन्धित सम्बन्ध अऊरी सम्बन्धित लोग के तात्कालिक ज्ञान ई माने के तइयार ना होला। सभे शोक की बाढ़ में डूब जाला।

फौज के समर्पित जीवन कन्हैया के रचनाकार रूप रसिक भी एगो चमत्कार ही रहे। लेकिन कन्हैया के रसिक भइल आश्चर्य ना ह, इहो शाश्वत् सत्य ही होला।

रसिक जी हमनी के सघन भोजपुरी गाँव के बीचो-बीच एगो अइसन विशाल बर के पेड़ रहनीं जेकरी चरण के चौतरा की शीतल छाँह में बइठ के कुछ देर सुस्ता लिहल जात रल। अब ऊ पेड़ नइखे। बस आगे आवेवाली पीढ़ी कथा में सुन पाई।

रसिक जी के पुण्य स्मृति हमेशा "जय भोजपुरी जय भोजपुरिया"आ "सिरिजन" के साथे हजारो लाखों लोग के हृदिया में विशेष रूप से शेष रही। बस अब आँखि भर गइल, शब्द साथ नइखे देत। सादर शब्द सुमनांज़लि समर्पित बा- रसिकाय तस्मै: स्वधा।

◆◆◆

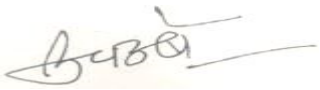

डॉ. अनिल चौबे
सम्पादक, सिरिजन

'जे आइल बा ओके जाहीं के बा' ई बात लरिकाइएँ से हमनी के कान में जाए लागेला। अबोधपन में एकर मतलब समुझ में ना आवे लेकिन समय के साथे कुल्हिए समझ में आवे लागेला। पाकड़ पर बइठल चिरई के जिनगी में बनूख के गोली के आवाज से जवन खलल पैदा होला ओइसने कुछ अहसास भइल 10 नवम्बर 2022 दिन, बेफे के, जब सिरिजन के संरक्षक पूजनीय कन्हैया प्रसाद तिवारी "रसिक" जी के के मृत्यु के समाचार सुनि के, सबके काठ मार दिहलस। बिधना के मरजी के आगे केकर चलल बा? लोर भरल आँखिन के संगे एह कडवी सच्चाई के घोटें के ही परल। हिन्दी अंग्रेजी भोजपुरी साहित्य के आढ़तिया, मिलनसार, हँसमुख रसिक जी के निगिचा से निहारे के मोका मिलल बा। अपना घर के आटा गिल क के साहित्य साधना के नशा रसिक जी के विशेषता रहे। उमिर उनकरा ऊपर कबो हावी होखत ना दिखल, हमेशा ऊर्जा से भरपूर, हर बयस के आदमी से आसानी से घुल मिल जाए वाला सुभाव। वायुसैनिक के रूप में उहाँ के देश के सेवा कइनी आ अवकाश प्राप्त जीवन के पूर्णरूप से साहित्य के समर्पित क दिहनी। आशु कवि रहनी रसिक जी, कबो सोच के कविता करत हम ना देखनी, बात बात में कविताई कइल उनकर सामान्य जीवन चर्या रहे। नामाक्षरी बिधा के माहिर खिलाड़ी रहनी, जन्मदिन के मोका पर सब जानेवाला हित मीत पाठक के एहि बिधा में आपन आशिर्वाद देके लोग के खुश क देत रहनी। कविता कहानी आलेख हास्य कहे के मतलब हर बिधा में उहाँ के लेखनी सरपट धउरे। जानतानी जा अब रसिक जी से कबो मिलन ना हो पाई लेकिन सूक्ष्म रूप से एह धरा धाम पर जहाँ भी बानी आपन आशीर्वाद हमनी सब पर जरूर बनवले राखब। उहाँ के अपना अनगिनत रचनन के मार्फ़त से हमेशा जियत रहब, सदा इयाद आवत रहब। हँसत-खेलत जे चलि जाला, ऊहे भगिमान कहाला। जगत के मलिकार से अरदास रही कि रसिक जी के आत्मा के शान्ति प्रदान करीं। "सगरी उमिरिया छछनत जियरा, कइसे तोहके पाईं। कवने बतिया पर कोहँनइलू, आहि रे बालम चिरई। कवने खोतवा में लुकइलू, आहि रे बालम चिरई" गहमरी जी के रचना बड़ी याद आवता। सिरिजन परिवार अपना संरक्षक के देहावसान से अपना के बेसहारा महसूस कर रहल बा,पूरा परिवार के तरफ से रसिक जी के लोर भरल सरधांजलि।

आवे वाला तिमाही के समहुत समय के नापे वाला सबसे अधिका प्रचलित अंग्रेजी साल के एक जनवरी से होखी। अंग्रेजी के नावा साल शुरू हो रहल बा। कुछ लोग आपन जिनिगी के बीतल समय भा जीवन क सिहावलोकन करत नववर्ष खातिर कुछ खास संकलप ले लन कि फलाना चीज के तियाग के हम नववर्ष के सुवागत करब। लेकिन समय बीतते रात गई बात गई वाला कहाउति चरितार्थ लउकेले, कवन त्याग कहाँ के त्याग यानि कि उहै पुरनका ढर्रा पर जीवन भागे लागेला। इहे शायद जिनगी के फलसफा ह।

जब सगरी जहान जनवरी महीने में नवका साल के खुशी के खुमारी से बाहर निकले के कोशिश में लागल रहेला ओहि समय प्रायः हर बरिस भारत में एगो निश्चित तारीख के, त्यौहार के आगमन होला जेके मकर संक्रांति नाव से जानेला सनातन धर्मी आ भोजपुरिया बघार में खिचड़ी के नाँव से गोहरावेला लोक कण्ठ। महीना भर से चलत खरवास के एहि दिन इतिश्री होला, महिना दिन से बन्द पड़ल मांगलिक काम जोश खरोश से एक बेर फिर से शुरू हो जाला। मकर संक्रांति मूलतः सुरुज भगवान के उपासना के परब ह, पुरनकी गाथा में कहल गइल बा कि ईहे ऊ दिन ह जब सुरुज देव आपन बेटा शनिदेव से नाराजगी के भुलवा के उनसे मिले खातिर उनका घरे गइल रहलन आ दुसरकी बात मकर संक्रांति के दिन ही भागीरथ जी के पाछे- पाछे चलके कपिल मुनि के आश्रम से होत, सागर में जा के समा गइल रहली गंगा जी, मिलन स्थल पर हर बरिस गंगा सागर के मेला लागेला। जेमा देश भर से श्रद्धालु लोग आवेलन। एहि दिन से तिल तिल दिन बड़हन होखे लागेला दिन, कहे के मतलब दिन रात से लमहर होखे लागेला। एहि चलते खेत मे बोवल फसल के अधिका रोशनी अउरी ऊर्जा भेटाला जेकरा चलते उपज में बढ़न्ती होला। एह परब पर फजीरे नहाके तिल गुड़ मूंगफली नीयन गरम धात के चीज खाये आ दान करे के परम्परा चलल आ रहल बा सदियों से, ताकि जाड़ा पाला के दिन में शरीर के अंदरूनी गरमी मिल सको।

आपन देश के आधिकारिक रूप से आजादी त 15 अगस्त 1947 के ही मिल गइल रहे लेकिन जनता के हित मे जनता के द्वारा प्रत्यक्ष भा अप्रत्यक्ष रूप से चुनल प्रतिनिधि द्वारा सर्वसहमति से कानून पारित क के शासन करे के अधिकार पहिला बेर मिलल आजादी के 2 साल 11

महीना अउरी 18 दिन बाद जब संविधान लागू भइल आ आपन देश के पूर्ण गणतंत्र के दर्जा मिलल। ऊ ऐतिहासिक दिन रहे सन 1950 के 26 जनवरी। देश के पहिलका राष्ट्रपति भोजपुरिया माटी के लाल डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी 21 तोप के सलामी के साथे झंडा फहरवलन आ भारत के पूर्ण गणतंत्र घोषित कइलन, तब से हर बरिस 26 जनवरी के देश में गणतंत्र दिवस मनावे के रिवाज के आगाज भइल। जनता के राज जनता के शासन अभी जमीनी स्तर पर खूब फलत फुलात त नइखे लउकत, अभी जनप्रतिनिधियन के ए दिशाई साँच मन से काम करे के जरूरत बा। देश ए बरिस आपन 74वां गणतंत्र दिवस मना रहल बा। सब देशवासी के गणतंत्र दिवस के बधाई।

वसंत के शुभागमन के साथे साथ एगो तेवहार आवेला जेके वसंतपचंमी, श्रीपंचमी, वसन्तोत्सव जइसन नाव से जानेला पढुआ समाज, लोक समाज त सरस्वती पूजा ही कहेला। वसंत पंचमी के शताब्दियों से विद्या, ज्ञान अउरी कला के देवी माता सरस्वती के पूजा होत आ रहल बा। माई 'सत्यम, शिवम, सुन्दरम,' के रूप में संसार में सुख, शान्ति, सौंदर्य के सृजन करेली। मन दिमाग मे भरल अन्हार के दूर क के ओहिजा ज्ञान के दिया जरावेली। जेकरा भीतर सात्विक ज्ञान के पियास बा ऊ सदा नावा ज्ञान के खोज में लागल रहेला उहे माई सरस्वती के वरद-पुत्र कहाए के काबिल बा।

'यस्य पूज्यंते नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवता:' के परम्परा के मानेवाला आपन देश मे भी आधी आबादी के रूप में जाने जाए वाली महिला के सही मायना में समाज में बराबरी के दर्जा नइखे मिल पावल। 8 मार्च के दिन के पूरा संसार अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनावेला, ई दिन महिला लोग के सम्मान के समर्पित होला उनकर भलाई के बारे में विशेष रूप से चिन्तन कइल जाला। ई दिन महिला के प्रति महिला के सशक्त बनावे के प्रयास करे खातिर मनावल जाला,तरह तरह के कार्यक्रम होला। हम भारतीय लोगन के सोझा खाली महिला दिवस के ही ना बल्कि हमनीके संस्कृति में हमेशा से ही महिला के पूजनीय मानल गइल बा, हर दिन महिला दिवस होखे उनकर सम्मान हरमेसा अक्षुण्ण रहे, ई सोच के पक्षधर ह हमनीके समाज।

फागुन के नाँव में थोरे मस्ती होला ऊ त मन मिजाज के चीज ह। जब तन मन स्वस्थ रही बेमारी हेमारी ईर्ष्या डाह जलन से मुक्त रही, तबे वातावरण आ आस पड़ोस में मस्ती लउकी हँसी गाई नाची कूदी चहकी बहकी। ना त रंग अबीर अछइत केहू लगावे भींजावे के खोजलो ना भेटाई। जिदगी रंगीन बनल रहो एकरा खातिर जरूरी बा तनी बुरबक सोझबक आ गवई बनल रहल। फगुवा गायी रंग अबीर के साथे हँसी खुशी बरिस दिन के तेवहार मनाई।

भोजपुरी क सेवा कइल आपन महतारी के सेवा कइल ह, जेकरा गोदी में बइठ के पियार से दुध पियनी जा ओहि माई के दिहल भाषा ह भोजपुरी, जेकर सम्मान कइल, देख भाल कइल, हमार राउर धर्म ह। पढ़ी पढाई प्रचार प्रसार करे में हमनीके साथ दिहीं।

◆◆◆

राऊर आपन,
तारकेश्वर राय
उप सम्पादक, सिरिजन

सिरिजन के ई भाग रसिक जी के समर्पित बा

नमन रसिक चरनन में

ईश्वर खातिर वेदन में लिखल बा-रसो वै सः। परमात्मा दूसर कुछ के ना रस के नाम ह। ओ रस के जे पान करे भा आत्मसात करे ऊ "रसिक"। अइसने रहनीं हमनीं के रसिक भइया।

पूरा नाम कन्हैया प्रसाद तिवारी "रसिक"। बिहार के रोहतास जिला के एगो छोटहन गाँव हथडीहाँ में पैदा भइनीं रसिक भइया। अपनी मेहनत आ लगन से भारतीय वायुसेना में भर्ती हो के ऊँचा पद हासिल कइनीं। सेना में रहियो के रसिक भइया साहित्य साधना से कबो अलग ना भइनीं। जवना के प्रमाण उहाँ के दू गो प्रकाशित किताब "ऊँ भ्रष्टाचार आय नमः" आ "पथिक पाथेय" के अलावे सैकड़न फुटकर रचना बाड़ी सन। रसिक भइया के अनगिनत रचना उहाँ के फेसबुक वाल पर पढ़ल जा सकत बा। रसिक भइया अंगरेजी, हिन्दी आ भोजपुरी में रचना करे में समान रूप से सिद्धहस्त रहनीं हँ। लेकिन जबसे "जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया" आ" सिरिजन" परिवार उहाँ के आपन संरक्षक स्वीकार कइल, उहाँ का भोजपुरिए अपना लिहनीं आ भोजपुरी में रचना करे लगनीं।

हम अपनी जिनिगी में अनगिनत रचनाकारन से मिलनीं लेकिन जवन सहजता, सरलता आ निश्छल भाव आ कविताई खातिर उत्साह. भइया में देखनीं ऊ "कवि श्रेष्ठ अंजन जी" की पाँती में उहाँ के स्थापित करे में रत्तियो भर कम ना रहे। सरल एतना कि लरिकन के साथे नाटक में भूमिका क लीं, सहज एतना कि दिन भर बात करीं तब्बो ना अगुताएबि। निश्छलता ई कि दिल खोलि के सब बता देत रहनीं। रचनन में गहिर भाव आ सरल शब्दावली उहाँ के भोजपुरी रचनाकारन की अगली पाँती में रखले रही। तब्बे त "जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया" परिवार के पहिला "अंजन सम्मान" उहाँ के देबे के सर्वसम्मति से निरनय भइल आ दिआइल।

भइया ए नश्वर शरीर आ संसार से १० नवम्बर २०२२ के विदा ले लिहनीं। "जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया" आ "सिरिजन" परिवार अपना संरक्षक बिना उदासल बा। लेकिन भइया के सरधांजली स्वरूप "जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया" आ" सिरिजन" परिवार ए उदासी आ शोक के कर्तव्य परायणता में बदली आ भइया के भोजपुरी खातिर देखल सपना के तन मन आ खूब मेहनत से पूरा करे के जुगुति करी।

अपना दिवंगत संरक्षक के लोर भर सरधांजली।
"जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया"
आ
"सिरिजन" परिवार।
सुभाष पाण्डेय,
प्रधान सम्पादक।

कन्हैया प्रसाद तिवारी "रसिक" जी के समर्पित सिरिजन पत्रिका के प्रबंध सम्पादक माया शर्मा जी के कुण्डलियाँ

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया परिवार के वरिष्ठ संरक्षक स्वर्गीय आदरणीय कन्हैया प्रसाद तिवारी 'रसिक' जी जब कि हमनी के बीच नइखीं। बाकिर उहाँ के भोजपुरी में सिखावल रचनाधर्मी ज्ञान आ राह हमेशा कामे आयी।एह अंक में उहांँ के परिचय करावत कुछ समर्पित कुण्डलिया प्रस्तुत बा-

धनि कन्हैया प्रसाद जी,रसिक सुघर सुभ नाँव।
जहाँ जनम पावन भइल,हथडीहा बा गाँव।
हथडीहा बा गाँव,जिला रोहतास परेला।
पूर्बी राज बिहार,भोजपुरिया जन देला।
भोजपुरी के लाल,देश सेवक रहनीं तनि।
भाषा अउरी देश,नमन करि बोले धनि-धनि ॥१॥

सेना में रहि के रसिक, लिहलें जब अवकास।
वायु सैन्य के जै रहो,कहलें रखि विस्वास।
कहलें रखि विस्वास,सम्हरलें माई भाषा।
रचलें कइयो छन्द,सुघर रखिके अभिलाषा।
निकसल कई किताब, भोजपुरिया रस बहि के।
रक्षा कइलें देश,रसिक सेना में रहिके ॥२॥

भाषा भोजपुरी कहे,धन्य ऊ लिखनिहार।
कुण्डलिया जस छन्द से,कइनीं बहुते प्यार।
कइनीं बहुते प्यार,रसिक जिनगी भर अपना।
सेवा करत अपार,होइ गइनीं अब सपना।
उहाँ क जइसन नाँव,कमाए के अभिलाषा।
जे राखी से धन्य,कहे भोजपुरी भाषा ॥३॥

◆ ◆ ◆

माया शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक- सिरिजन

पंचदेवरी, गोपालगंज

बिहार

याद रसिक क आवता

नैना नीर बहावऽता
याद रसिक के आवऽता
फिर से कैसेट चल गइल
आ बीतल बात बतावऽता

दिहल सनेह के थाती राउर
रखले हईं जोगाके
सिस नवाईं नित चरनन में
रोज सबेरे जा के

मन मंदिर में देव सरीखा
राउर छवि बा बनल
रउए पथ पर चलके हम
समाज में बानीं ढरल

अजुओ अंगुरी धके चलीं
रहिया हम दिन राती
अबहुँओ ओसहीं जोत जरत बा
जरवले रहीं जे बाती।

विबेक पाण्डेय

◆ ◆ ◆

1.
लोर भरल बा आँख में , दुख में बा परिवार।
स्मृति में अनुभूति के, सरधा सुमन हजार ॥
सरधा सुमन हजार, मुक्तमन विचरऽ नभ में ।
ढाढ़स कइसे धरसि, याद बा पेहम सभ में ॥
अविनासी बा कर्म, रसिक के जीभ जरल बा ।
मन में अति अवसाद, आँख में लोर भरल बा ॥

2.
मर्जी के मालिक हवें , सिर्फ एक करतार ।
जन्म मरण पोषण भरन , सबके लिखे लिलार ॥
सबके लिखे लिलार , ज्यादती लोग करेला ।
अपने मन के बात , बेमतलब भरम भरेला ॥
ऊँच नीच के बात , करे मनई ऊ फर्जी ।
बाहुबली, बिदवान , चलल ना उनुको मर्जी ॥

3.
दु करोड़ के झुलनी पिया पितरिया हो गइल ।
पेन्ह के जब झमकवनी मुँहवा करिया हो गइल ॥

4.
भोरे-भोरे देख के , फूलन के मुसुकात ।
प्रेम पियासल जस लगे, ना दिहले सौगात ॥
ना दिहले सौगात, प्रीत के डोर बढ़वले ।
खखनत राह लखात, सखी हो मन भरमवले ॥
चललो भइल मुहाल, दरद बा पोरे-पोरे ।
दिलवो नइखे पास, चुरा ले गइले भोरे ॥

5.
बड़ा लालची लोग बा , फोकट चाहीं माल ।
शातिर जन के चाल में , मुर्गा होत हलाल ॥
मुर्गा होत हलाल , भेद ना जाने कोई ।
सबुजबाग के ढेर , करस नेता दिलजोई ॥
बनिया बाँटे तेल , ताल ठोके मसालची ।
कचरा कचरे पान , रसिकवा बड़ा लालची ॥

6.
आज जियतानी काल्ह के हाल ना बताइब
आपन ओहदा से केहू के ना सताइब
आज समय सुधारल चाहता सभ केहू के
सुधर जाईं ना तऽ चपेटा में आ जाइब

7.
बिन संतोष बिहान न होई ,
जिनिगी में पहचान न होई
भगती रही भुखाइल हरदम
श्याम शरण असथान न होई

8.
आसमान के नापीं जमके, पुरहर पाँखि उड़ान भरीं ।
धरती पो बा बसन बसेरा, चौबीस घंटा ध्यान धरीं ।
पाहन से जब रहब बन्हाइल, गगन गमन ना हो पाई ।
सम्यक् सोच सहज मारग बा , सत मन से संधान करीं ।

◆ ◆ ◆

कन्हैया प्रसाद रसिक

संस्कार

जब बिरिधा आश्रम से सनेस मिलल कि बाबूजी के दुनो किडनी खराब हो गइल बा आ तोहार भाई अनुराग से कवनो संपर्क नइखे होखत । जदि तु चहतारू कि बाबूजी के जान बाचो त अपना से इलाज करावल लोग, बिरिधा आश्रम एतना बड़ इलाज खातिर समर्थ नइखे। तब बिरिधा आश्रम से अपना बाबूजी के निकाल के कुसुम कार में बइठा के अपना पति राजन से पसगयबत में बात करे लगली। बाबूजी के घरे ना ले जाके अस्पताल में भरती करा देहल जाव आ हम आपन एगो किडनी बाबूजी दान करे के सोचत बानी राउर का आदेश बा । कुसुम अपना पति के विचार जानल चहली , कुछ देर तक उनकर पति के कठेया मार देलस आ लोर बहावे लगलन। एह से लोर ना बहावत रहले कि उनकर पत्नी किडनी दे दीहें त आगे उनका तकलीफ हो सकेला । बाकी अपना पत्नी के कर्तव्यपरायणता पर खुशी से आँसू बहावत रहलें । कुसुम के भी एके लइकी रहे आ घर के लोग एगो लइका खातिर कुसुम पर दबाव डालत रहे। कुसुम दोबारा देह से भइली त उनकर ससुर एगो जान पहचान के डाक्टर से जाँच करवलन त लइकिये रहे , फिर का डाक्टर से बतिया के साफ करा देलन । इ बात के ओह घरी कुसुम के पता ना चलल रहे आ ना उनका पति के हीं , उ समझली कि कवनो क गलती हो गइल होई एहीसे नुकसान हो गइल ।

यह बात के पता तब चलल जब एक दिन उ अपना माई के मुह से उनका करम पो कोसत सुनले , उ कहत रही कि "बुझाता इहो निसतानिये होई का दो।" फिर बाबूजी से पुछलन त बाबूजी साफ साफ बता देलन । ओह घरी राजन के समझ में ठीक लागल रहे उहो चाहत रहले कि एगो लइका चाहता। बाकि कुसुम से कुछ ना बतवले रहलन। आज उहे घटना इयाद आ गइल रहे। हमनी के समाज में लोग लइका खातिर हाय हाय करता आ लइकी के हीन समझता लोग आज उहे कुसुम अपना बाबूजी खातिर हीन से महीन हो गइल बाड़ी । कुसुम के बाबूजी के साथे उ बात ना रहे उ बेटा बेटी में दु भाव ना करत रहन। फिर भी बेटा खातिर त पेयार उपरवछिये जाला । कुसुम के अपना भाई अनुराग पो नाज रहे , उ अगरा के कहत रही कि उनकर भाई विदेश में रहेला । कुसुम के ससुरा चल गइला के बाद बाबूजी के बड़हन घर भकसावन लागत रहे , उनकर माई त पहिलहीं गुजर गइल रही आ जले बाबूजी के हाथ गोड़ चलत रहे तले घर हीं में एगो नोकर राख के रहत रहन । कुसुम के बाबूजी के नाम बिसेसर रहे आ गाँव में उनकर एगो जिगरी दोस्त नारयण रहन।दुनो जाना एके संगे काम करत रहे लोग आ एके दिन रिटायर भइल रहन जा । नारायण के लइका बेरोजगार रहे घर के खेती बारी देखत रहे बाकि सेवा के नाम पो जहरे उगिलत रहे। एक दिन उ कहलस कि बाबूजी तु काहें नइख बिरिधा आश्रम चल जात तोहारा के निमन से देख भाल करीहेंसन।आ तोहार मनवो लागल करी , इहाँ दिन भर टरटरइला से त जान बाची ।

नारायण इ बात बिसेसर से कहलें त बिसेसरो बिरिधा आश्रम जाये के तइयार हो गइलें ।बिसेसर आपन दोस्ती के फरज निभावल ना भुलइले अपना साथे साथे नारायण के भी खरचा खुदे उठावस। पिनिसिन के पइसा आ जवन खेती के नगदी करत रहन उ सभ आश्रम में दे देत रहन साथे साथे केहु के कवनो परेशानी होत रहे त बढ़ चढ़के लागल रहत रहन । एह सुभाव से बिसेसर के सभे आश्रम में चाहत रहे । कुछ दिन पहिले नारायण , नारायण लोक में चल गइलन त बिसेसर अकेले पड़ गइलन , आपन संघतीया बिनु उदास रहे लगलन आ उनका अकेलपन काटे धावे लागल । एही बिच उनका एकदिन बोखार आइल आ पेशाब बंद हो गइल डाक्टर घून पेशाब जाँच कइलस त उनका पेशाब में इंफेक्सन रहे , खून में किरिटिन बढ़ गइल रहे एह से किडनी काम कइल बंद क देले रहे ।

कुसुम किडनी दान करे खातिर सभ टेस्ट करा लेली सभ सही निकलल त खुसी के ठेकाना ना रहे, उ अपना सवांग से कहली " लागता भगवान हमनी के सुन लेलन अब बाबूजी के कुछ ना होई । अपरेशन के दिन तय हो गइल आ अपरेशन करेवाला डाक्टर परितोष रहले । डाक्टर परितोष लंदन रिटर्न रहन आ उनकर बहुत चलती रहे।बाकि अभी तक परितोष के पता ना रहे कि उ केकर अपरेशन करे जात बाड़न।

अपरेशन सफल हो गइल करीब एक सप्ताह तक दुनो बाप बेटी एगो स्पेशल कमरा लेके लोग रहे । डाक्टर साहेब रोज देखे आवस आ बड़ा प्रेम से बतियावस । बाबूजी के अइसन बुझात रहे कि उ अपने लइका से बतियावत रहले।

दुनो बाप बेटी के अस्पताल से छुट्टी मिल गइल रहे बस बिल चुकता करे के रहे , राजन (कुसुम के पति) जब काउंटर पर गइलन त उनका अचरज के ठेकाना ना रहे कहें से कि बिल केहु भर देले रहे । उ कैशियर से पुछले कि बिल के भरल हि त कैशियर के जबाब रहे आप डाक्टर परितोष से जाकर पुछिये। राजन डाक्टर परितोष के केबिन में जा के पुछले सर हमार बिल के भरल हा। त डाक्टर बोलले कि केहु आपन फर्ज अदा कइले बा बिल भर के। राजन कुछ समझ ना पवलन फिर से पुछलन , बाकि के ?

डाक्टर परितोष कहले कि चलीं बाबूजी भीरी हम उहँवे बताइब। दुनो जाना बाबूजी भीरी गइलें डाक्टर सहेब के देख के बाबूजी हाथ जोर लेलन आ कहलन " रउआ भगवान बानी ।" डाक्टर साहेब बाबूजी के पैर छुवलन आ पुछलन कि " बाबूजी हमरा के पहचानतानी ? " बाबूजी ना में मुड़ी हिला देलन।

तब डाक्टर कहले हम परितोष हईं राउर लइका अनुराग के इसकुल में पढ़त रहीं हम उनका से एक कलास पीछे रहीं आ जवन भी उनकर छोड़ल किताब कापी आ टिउसन के नोट रहे रउआ हमरा के दे देत रहीं। हम एक बे रउआ से पुछले रहीं कि कितबिया के आधा पइसा लेलीं त राउर जबाब रहे कि " विद्या के दान कइल जाला बेंचल ना जाला ।"ओह घरी हमरा घर के हालत अइसन ना रहे कि हम किताब किन के पढ़ लीं ओह घरी रउआ हमरा खातिर भगवान बन के सहायता कइले रहनी। बारह पास क के हम डाक्टरी के इंतिहान देनी त पास हो गइनी, छात्रवृति मिले लागल आ छोट मोट खरचा लइकन के टिउसन पढ़ाके चलावत रहीं आज हम एह स्थिति में रउआ कृपा से बानी। पहिलहीं दिन जब रउआ के देखनीं त पहचान गइल रहीं ।आज हमार मोका आइल बा राउर सेवा करे के ।हमहीं राउर अपरेशन कइले बानी आ हमहीं सभ खरचा उठाइब हाथ जोरके बिनती बा रउआ मना मत करब । बाबूजी के आँख लोरा गइल आ परितोष के अंकवारी में भर लेलन बाबूजी आ कुसुम के छुट्टी हो गइल आ अपना घरे लोग चल गइल।

एक दिन सुतला राते फोन आइल त कुसुम हड़बड़ाके उठली रात में दु बजे के बेरा रहे, उनका हैलो करे के पहिलहीं आवाज आइल दीदी हम अनुराग बोलतोनी , "हँ बोल कह का कहतार" कुसुम कोहना के बोललीं ।

अनुराग समझ गइलन की दीदी गुस्सा में बाड़ी बाकि उनका दुख ना लागल। आपन गलती के उनका अनुमान त रहले रहे फिर भी कहलन दीदी हमार मोबाइल भुला गइल रहे एह से हमरा केहुसे संपर्क ना भइल, बाबूजी कइसन बाड़न बड़ा मुश्किल से त तोहार नंबर उपरजले बानी। कुसुम बात करेके तरीका से समझ गइली कि अनुराग झूठ नइखन बोलत फिर सउँसे कहानी अनुराग के सुनवली। अनुराग फोने पो भोकार पारके रोवे लगलन हमरा बाबूजी पो अतना संकट परल आ हमरा तनिको खबर ना मिलल। फिर कहलन दीदी हम परिवार साथे अगिला महीना आइब ।

आज खूब चहल पहल रहे अनुराग के घरे आ काहें ना होई बेटा विदेश से आइल बा आ बाबूजी के दोसरका जनम भइल बा दुगना खुशी बा चहल पहल त रहबे करी । अनुराग सतनारायन भगवान के काथा सुनके संउसे गाँव के भोज खिअवलन आ रात में भजन कीर्तन के मंडली आइल रहे, एही बिच अनुराग माइक लेके सभके से चुप रहे के गोहार लगवले। सभे चुपा गइल त अनुराग कहलन आजकल हमनी के विज्ञान पो जाता भरोसा क के आपन जिनिगी के अनमोल पल छोड़ दे तनी जा आज चिठ्ठी पतरी लाखात रहित त एको महीना में समाचार मिलिये जाइत , हमार मोबाइल भुला गइला से छव महीना से हमरा कवनो अता पता ना मिलत रहे के कइसन बा कुछ ना पता चलत रहे एही बिचे बाबूजी पो अतना बढ़ संकट परल । केहु सुनी त इहे नु कही कि बिसेसरो बाबा के लइका नालायक हो गइल । हम बितल समय के फेरसे ना ला सकेनी बाकी आगे अइसन संकट हमरा जियते ना आई, हम अपना साथे बाबूजी के भी विदेश ले जाइब, आ एह में बाबूजी रावा मना मत करब , बाबूजी के तरफ इसारा क के अनुराग कहले। सबहर गाँव ताली पीटके अनुराग के बारे में कानाफूसी करे लागल , " बेटा होखे त अनुराग जइसन "

आ हँ बाबूजी के गाँव से बहुत लगाव रहे उहाँके लइकन से बहुत पेयार करत रहीं त इ आपन घर में लइकन के पढ़े खातिर पुस्तकालय खोल देतानी जवन लइका पढ़ल चाहीं हमार सहयोग ओकरा खातिर रही । परितोष भी जलसा में शामिल रहले उ अनुराग के बात बिचे में काटके कहले , हमहुँ एह नेक काम में अनुराग के साथ देत बानी आ एह गाँव के केहु के

तकलीफ होई त हम उनकर इलाज मय दवाई मुफ़ुत में करब। पुरा गाँव खुशी से नाचे लागल आ अनुराग , परितोष आ कुसुम दीदी के जयकार होखे लागल । इ दृश्य देखके बाबूजी के आँख में खुशी के लोर ढ़रके लागल । राजन के अपना पत्नी पर गर्व रहे आ आगे से निरनय कइले बेटा बेटी में फरक ना करीहें एगो बेटी बड़ी उहे हमार धनसुत रहीहें ।

◆ ◆ ◆

कन्हैया प्रसाद तिवारी रसिक

जिनिगी के खेवईया

गते गते बितता समइया हो
रमइया कहिया कहब बबुआ
जिनिगी के उहे बा खेवईया हो
रमइया कहिया कहब बबुआ ॥

गोदिया में जननी के सरग समाइल
अंगुरी के पोर रोज रोज पकड़ाइल
बाबूजी से बड़ ना सहईया हो
रमइया कहिया कहब बबुआ ॥

जाहि दिन मेहरी से तन लटपटाइल
ओही दिन जिनिगी के मकसद बुझाइल
खुश भइले सृष्टि के रचईया हो
रमइया कहिया कहब बबुआ ॥

आव ए सुभाष आस तोहरे बा लागल
बोल बतियाव तनि बनल बानी पागल
हाथ जोर कहेले कन्हईया हो
रमइया कहिया कहब बबुआ ॥

गते गते बितता समइया हो
रमइया कहिया कहब बबुआ
जिनिगी के उहे बा खेवईया हो
रमइया कहिया कहब बबुआ ॥

◆ ◆ ◆

जीये खातिर भूख बा

जिनिगी तबाह भइल बात के बतंगड़ से
पनही मजाक करे ए' गोड़ के लंगड़ से
चेफुआ पेरात देख , गाभी मारत ऊख बा ॥

निकसता पानी निसानी खाली बाँचल बा
बेंगवन क गीते-नादे असरा सवाँचल बा
कबो रहे हरियरी अब ठूँठवे के कूँख बा ॥

आजियो के दरदा पटाय ना दवाई से
छटकता गोड़ रोज अङ्गना के काई से
अटरिया त अपने ह, केहु अउके रसूख बा ॥

फेरा में त बिलरो दबोच लेला मूस के ।
जोंकवो अघाइ रहे मय खून चूस के ॥
बहरी पहरुआ के हाथे में बनूख बा ॥

◆ ◆ ◆

जे लत के कठपुतली बनिहें ,ऊ सगरो लतियावल जइहें ।
जेकर लत लुत्ती लहकावल, ओकर लंक जरावल जइहें ।
संभव बा सभ लत बाउर ना, जे कल्यान बदे लागेला ।
ओकर गनना देव तुल्य बा , ऊ दिल में बइठावल जइहें ।

◆ ◆ ◆

कन्हैया प्रसाद तिवारी रसिक

1
अँखिया से लोर बहे मथनी करेज महे ।
घात क के गात से परात रे सुगनवा ।

लोग उतजोग करे हीत मीत रहे घरे ।
कवनो बहाने अझुरात रे सुगनवा ॥

काल के कपाल लाल बदलेला रोज चाल ।
परले लाचार अँउजात रे सुगनवाँ

बिधना के बात सुनऽ तनिका सा मने गुनऽ ।
काहें खुदगरजी भोरात रे सुगनवा ॥

2
लइका जवान बूढ़, चाहे मनई हो गूढ़ ।
गोदा जस सब कचरात रे सुगनवा ॥

पीर बढ़े गते गते समझीं लोगिन भंते ।
जख्मी बदन करकरात रे सुगनवा ॥

कद काठी ठीक बढ़े , नीमने विचार गढ़े ।
तबहूँ करेज पपरात रे सुगनवा ॥

विधि के बनावेवाला , गिरता जहान खाला ।
करे हथजोरी दिन रात रे सुगनवा ॥

◆ ◆ ◆

चर्चा रहे जवार में , गोपीचन कंजूस ।
दमड़ी ना निकले कभी, भले जेठ भा पूस ॥
भले जेठ भा पूस , खर्च से सरपट भागे ।
कीर्तन पूजा पाठ , धर्म कटवावन लागे ॥
जाली नोट निकाल, यज्ञ में कइलन खर्चा ।
गइल गुलबिया साथ, शहर में बाटे चर्चा ॥

पता चलल तब हाय , पकड़लन गोपी खाटी ।
चौदह दिन बिन अन्न, पनरहे सुतलन टाटी ॥

◆ ◆ ◆

कन्हैया प्रसाद तिवारी रसिक

अपने मन के भइल कहाँ बा

सरग के तरई तुरल चाहीं ,
अपने मन के भइल कहाँ बा ?

सोंचत रहनी होई बड़ाई
पट जाई आपस के खाई
पनखी फेंकी प्रीत पेंड़ में
अब ना होई हाथापाई
पर तरास बढ़ते ही जाता
गगरी में रस धइल कहाँ बा ?

लोग कहे मन मस्त रहेला
सुख-दुख गरमी ताप सहेला
बेकहले बदलेला पाला
किसिम किसिम के भाव गढ़ेला
बहरी से निरमल लउकेला
भीतर से मल गइल कहाँ बा ?

चाचा के चाहत बा बेसी
कम खरचा में पुरहर ठेसी
पहुना पाहुर लेके भागल
बँचल-खुचल उदरस्थ मवेसी
बैतरनी भय भरमावत बा
दान-पुन्य कुछ कइल कहाँ बा ?

◆ ◆ ◆

का फैदा बा

बेमतलब के अगरइला से का फैदा बा ।
अरकच बथुआ के पइला से का फैदा बा ॥

अपने जिनिगी में सभ नीमन काम करीं जा ।
समय निकलले पछतइला से का फैदा बा ॥

लोग भरम में अकड़ल बाटे बरियारी से ।
परला पर अब सरमइला से का फैदा बा ॥

आपन अनकर भेद बढ़ावल नीमन ना हऽ ।
बसिआइल बरफी खइला से का फैदा बा ॥

पनही फाटल खोजे में सतबादी जन के ।
बइमानन घर धन धइला से का फैदा बा ॥

दुख के बदरी कहियो इक दिन छँट जाई हो ।
आफत देखत घबरइला से का फैदा बा ॥

करम कमाई कइला में परसानी होता ।
पूजा पाठ बरत कइला से का फैदा बा ॥

◆ ◆ ◆

आपन विचार के ओतने उर्ध्वगामी होखे द
जतना जरि जमीन के भीतर जाये ।
चहुँप जाये द ब्रह्माण्ड में ।

सिरिजन त अन्हरिये में होला,
सिरिजल के प्रभाव देदीप्यमान होखेला ।
शून्य से ब्रहमांड तक ।

◆ ◆ ◆

कन्हैया प्रसाद तिवारी रसिक

1.
कुसुम काँट साथे रहे , जइसे छाया घाम ।
दुर्जन के मन मल भले , भीतर बइठस राम ॥
उत्तम मध्यम अधम से , बढ़के होला प्रीत ।
माथ हाथ रघुनाथ के, ना होला भयभीत ।
पूर्ण समर्पण जीव के, इचिका भर ना खोट ।
सतसंगत सम स्वर्ग बा , ना परदा ना ओट ।
रसिक सराहे राम के, जग में बन बकलोल ।
चिता चतुरी चल गइल , ओढ़ प्रेम के खोल ॥

◆ ◆ ◆

2.
खुश होके मिलला से, मधु रस टपकेला ।
रोंआ-रोंआ भींज जाला, फगुनी फुहार से ॥

अदिमी के हँसी-खुशी, अदिमी के वजहे ह ।
अचल आनंद भेंटे, प्रभु के जुहार से ।

एक बेर देख लीहीं, ऐनक में अपना के।
भेद सभ मिट जाई, मान मनुहार से ॥

दीन दुखियारी बाटे, लोग बैर पलला से ।
रसिक के रामजी उबारेले अन्हार से ॥2

◆ ◆ ◆

काँच के टुकड़ा गड़ल बा गोड़ में ।
बथ रहल हऽ का कहीं हर जोड़ में।

गुप्त बातन के उघेटल ठीक ना ।
कूर बाघा छिप रहल लिलघोड़ में

साथ लेके के गइल छेदाम भी,
खेल रोजो हो रहल बा ओड़ में।

जोस हमरे बा अधिक संसार में
जिन्दगी के सार बा मटकोड़ में ॥

बुद्धि बल सामर्थ्य के हम हीं धनी
लिप्त बानी कर्म से घर तोड़ में ॥

ई वतन हऽ बुद्ध के महबीर के ।
शक्ति बा संचित सदा दिल जोड़ में ।

प्यार से कहले रसिक आपन बचन
ना रहेलन सौ करोड़ी होड़ में ॥

◆ ◆ ◆

कन्हैया प्रसाद तिवारी रसिक

लोहा बाबा

ए लोहा बाबा काल्ह सुमितरी खातिर लइका देखे जायेके बा रउआ चलेम नु रामदेयाल कहलन। लोहा बाबा कान पो जनेव चढ़वले लोटा लेके खेत में दुलुकिये चाल से जात रहन एह से कुछ बोललन ना खाली हाँ में मुड़ी हिला देले ।रामदेयाल समझ गइलन आ बाबा के दलानी पो जाके राह देखे लगलन। फराकित होके बाबा जब अइनी त रामदेयाल पो बरस गइनी , अरे नालायक ! तोरा इ ना बुझाला कि कब केकरा से का बोले के चाहीं, का भइल बाबा कवनो भादारा भा पाचाखा चढ़ल रहे का कि बतियावे के मुहुरत ना रहे रामदेयाल बात के काट देलन। बाबा अवरू भिनभिना गइले कहले कि जब हाकिम के अडर आ जाला त पिउन लोग पंजरा से हट जाला आ तें राहता में आके बाधा डालत रहले।आच्छा बाबा समझ गइनी गलती हो गइल । त काल्ह सुमितरी खातिर लइका देखे जायेके बा चलेम नु। का हमार गइल जरूरी बा पहिले तोहनी देखल सन बाद में ठीक करे के बेर हम चलेम।ना बाबा रउआ चलेके बा पसन पर जाई त बरछेया भी आजे क दिआई। बाबा तैयार हो गइलन।

बाबा के असली नाम पंडित गिरधारी पान्डेय रहे लेकिन उ नाम धराऊँ रहे सभे लोहा बाबा के नाम से जानत रहे।कबो कबो बहर के आदमी बाबा के खोजत गाँव में आवे आ पुछे पंडित गिरधारी पान्डेय के कवन घर ह त केहु ना बतावे हार थाक के उनका लौट जायेके पड़त रहे।लोहा बाबा लोग असहीं ना कहत रहे बचपन में बहुत जिद्दी रहले जवन एक बेर मन में ठान लेत रहले तवन बात मनवा लेत रहन आ जबान के पक्का रहन आ उ आदत बुढ़ारियो में बा ।कवनो उलझन होखे गाँव में सबके समाधान रहस लोहा बाबा देह धाजा से पकठाइल आ चेट से भी चहकत रहन। गाँव के का जवार के भी लोग लोहा बाबा के लोहा मानत रहले। आ परतोख दियात रहे आदमी होखे त लोहा बाबा जइसन।कवनो जादा पढ़ल लिखल त ना रहन चौथा कलास तक हीं स्कूल के मुँह देखले रहन महटर साहेब एक दिन ना पढ़ला खातिर धुन देले रहले ओह दिन से उनकर पढ़ाई से मन भागल त भागले रह गइल । बाप के एकलौता संतान आ खेत बधार चालीस बिगहा , का कमी रहे । ना पढ़लन त ना पढ़लन केहु से कम थोड़े बाड़न उनकर बाबूजी मूँछ पो ताव देके कहत रहले।जवानी में जब अपना पो भइलें त जम के खेती करस चरबरधिया हर चलत रहे आ दुआर पो चार गो बड़के बैल दु गो भंइस ए गो गाय सालो भर शोभा बढ़वत रही सन। दु गो चरवाहा आ दु गो हरवाह बाबा के अपना परिवार के अंग रहसन। बाबा केहु के साथ दु भाव ना करत रहन जवन अपने खास उहे बनिहारन के भी खियावत रहन। दूध दही पर भी बनिहारन के ओतने हक रहे जेतना बाबा के इहे सब गुन से बाबा के लोग जान से जादा मानत रहे। लोहा बाबा के बाबुजी बढ़िया पंडित रहन उनका पंडिताई बिरासत में मिलल रहे , लोहा बाबा भी बाबूजी के साथे अंगेया खाये जात जात दुचार गो श्लोक इयाद कर लेले रहन आ ओकरे के हमेशा सुतले बइठले दोहरावत रहन , गाँव के लोग त जादा पढ़ल लिखल रहे ना आ उनका के श्लोक पढ़त देखके विद्वान समझे लागल फिर का लोहा बाबा के विद्वता के सटिफिकेट मिल गइल। जब उनका बाबूजी के गंगालाभ हो गइल त सब जिम्मेदारी लोहा बाबा पो आ गइल , खेती बारी , जर जजमनिका, हित नाता बाहर भितर सभ देखेके परत रहे।बाबा घर के इकलौता संतान होखेसे अपना मन के राजा हो गइल रहलें ओही राजशाही में एगो आदत पकड़ लेलन गाँजा पियेके आ उ गांजा के गुलाम हो गइलन। ओह समय गाँजा के लोग राजसी नशा कहत रहे काहें से कि असली पियक्कड अपना साथे दु चार गो अवरू फोकटिया पियक्कड़ राखत रहे जे से कि ओकर बादशाहत बरकरार रहत रहे ।आ उ सब फोकटिया पियक्कड़ अपना गुरू के छाया रहत रहसन। लोहा बाबा के भी चार गो फोकटिया पियक्कड़ रहे लोग जेकरा के बाबा शंकरजी के गण कहत रहन। अकसरहाँ गाँजा पियेवाला गाँजा के शंकरजी के बूटी कहेला लोग ।

बिहान खानी लोहा बाबा अपना चारो गण के साथ रामदेयाल के अगुअइ में चल देलन भर रहता बर बाजार पो बैठकी लगावत सांझ के लइका वाला के दुआरी पर पहुँच गइलन। अगुआ जान के खूब खातिरदारी भइल। रात त असहीं हाल समाचार पुछे में बित गइल बिहान भइला पो अगुअइ के काम शुरू भइल। लइका के बाबूजी के बोलाके लोहा बाबा बात शुरू कइलन , पहिले आपन परिचय देलन कि हम रामदेयाल के

पुरोहित हईं, एही बिच में चारो गण में से एगो कहलस कि बाबा जइसन विद्वान रउआ ढ़िबरी लेके खोजब तबहुँ ना मिलिहें। बाबा ओकरा के चुप कराके बात आगे बढ़वलन आ पुछलन , खेत बधार , सवांग , गोल सब पुछला के बाद असली बात पो अइलन कहलन कि राउर का मांग बा। एह पो लइका के बाप आपन बड़ाई के पुल बाँध के बीस हजार रूपेया के मांग ठोक देलन, बिना जनले कि केकरा से बतियावत बानी काहें से कि आज तक लोहा बाबा के बात में केहु ना हरा पवले रहे आ कवनो गलत बात ना नु बोलत रहन साँच के अइसन परोसत रहलन कि लोग उल्टी कर देत रहे। कहलन बीस हजार रावा अपना औकात से जादा नइखीं मंगले , अइसन स्पष्ट आ खरा बात के लइका के बाप के अंदाजा न रहे कि केहु असहुँ बोली, "अभी त लोहा बाबा के बात के हथौड़ी चलल बा हथौड़ा त अभी बाकिये बा ।" लइका के बाप कहलन कि हमरा का कमी बा घर दुआर देखते बानी खेती बारी सब ठीके बा लइका देह धाजा से केहु से कम नइखे त कहें ना हम बीस हजार मांगब । ठीक कहनीहा रावा घरे सब बा बाकिर मुँह मत खोलवाईं रउआ पाँच हजार से जादा लायक नइखीं , इ बात सुन के लइका के बाप के तितिकी लाग गइल आ एने माहौल गरम देख के बाबा के गण तैयार हो गइल बाबा के ईशारा खातिर कि ईशारा मिले त पूर्णाहूति कर दीं। लइका के बाप बाबा के तेवर भांप गइलें आ ताव में कहले कि का कमी बा हमरा में जे हम पाँच हजार लायक बानी । बाबा आपन आवाज मोलायम क के कहलन देखीं कमी त सभके में बा हमरो में बे रउओ में बा रामोदेयाल में बा त छोड़ी उ सब बात के आ हई लिहीं पाँच सौ के बरछेया आ शादी पाँच हजार पो तय करीं। बीस से एको छेदाम कम ना होई दहाड़ के लइका के बाप कहलें , एह पो बाबा के हथौड़ा चलावे के परल आ कहलें सुनी हम बीस ना पचीस हजार देब लाकिन हम राउर परीक्षा लेब पास हो जाइब त पचीस देब आ ना त पाँच में शादी करे के परी।

लइका के बाप अपना जिनिगी में अइसन खरा आ स्पष्ट बोलेवाला आदमी ना देखले रहले कुछ देर तक सन्न रह गइलें फिर अपना भूत वर्तमान पर नजर दौड़ाके आपन कमी के देखे के कोशिश कइले त अपना अंदर कवनो कमी ना लउकल तबहुँ सहम के बाबा से कहलन ठीक बा लिहीं हमार परीक्षा बाकि अपना बात से पीछे मत हटब । एने रामदेयाल के भी ओह परिवार में कवनो कमीं ना लउकत रहे त बाबा के कान में जाके कहलन कि छोड़ी लोहा बाबा जाये दीहीं हम बीस हजार देबे खातिर तैयार बानी, उ सोचलन कि खांमखां पाँच हजार के घाटा बबवा लगा रहल बा का कमी बा ओह परिवार में। बाबा रामदेयाल के डपट देलन कहलन कि फेर हमरा के काहें खातिर ले आइल रहस जब सभ तोरा अपने से करेके रहे आ जब ले आइल बाड़े त चुप रह आ देखत रह केंग इ रहता पो आवत बाड़े। ते पाँच के इंतजाम कर शादी पाँचे में होई। रामदेयाल माथा पीट लेलन मन हीं मन बाबा के ले अइला पर पछतावे लगलन बाकि का कइल जाव जवन होई तवन देखल जाई , आ इहो भरोसा रहे आज तक केहु बबवा के हरवले नइखे इ सोच के खुश भी होत रहन।

लइका के बाप के पचीस हजार लउके लागल एहसे दाँव खेले पो तैयार हो गइलन , वैसे हर जुआड़ी अपना जीत के दावा करेला बाकि केहु आज तक जुआ से अमीर नइखे भइल लुटाइले बा।लइका के बाप भी उहे गलती कइलन आ लोहा बाबा के प्रस्ताव सकार लेलन। लोहा बाबा फिर से कहलन सोच विचार के कहीं इ ना कि बाद में नाकार जाईं ।इ मर्द के जबान ह कवनो छुछबेहर ना हईं जे अपना बात से मुकर जाइब। तब बाबा पुछलन खि रउआ परिवार में क गो सवांग लोग बा एहपर लइका के बाप जोड़के बतवलन कुल मिलाके पंद्रह गो जे में तीन जाना बाहर रहेलन दुगो लइका लोग कवलेज में पढ़ेला गाँव पो दस आदमी बा। तब लोहा बाबा कहलन कवनो बात ना दसो आदमी जे गाँव पो रहेला अपना अपना पैर में पनही पहिर के हमरा सोझा आईं सभे हम पचीस गिने खातिर तैयार बानी ।एतना सुनते लइका के बाप सन्न रह गइलन काहें से कि ओह घरी परिवार में एक दु गो जूता किनात रहे अधिकांश लोग खालीए पैर चलत रहे ना त काठ के चटकी । सुखी संपन्न आदमी हवाई चप्पल पहिरत रहे। लइका के बाप कहलन इ त कवनो बात ना ह रउआ त जानते बानी केहु जूता ना पेन्हेला ए जो दु गो जूता होला आ जेकरा कहीं हितई नाता में जाये के होला उ हे पहिर के जाला बाकी समय में कपड़ा में बान्ह के ताखा पो रखा जाला, फिर कभी टोला परोसा के जेकरा जरूरत परेला उ पालिस करवा के पेन्हेला।अक्सरहाँ लोग जे हितई में जाय रहे उ जूता पालिस करवा के झोरा में रख लिही आ गाँव के गएड़े जा के पेन्हत रही जादा से जादा एक किलोमीटर जूता पहिरल जाय रहे। ओतने में जूता गोड़ काटके फिर से झोला में आसीन हो जात रहे।

लोहा बाबा जीत गइल रहले लइका के बाप के इ कतई आशंका ना रहे कि केहु अइसनो सवाल पूछी चूँकि जबान हार गइल रहलें एह से शादी पाँचे हजार में तय करे के पड़ल।

कन्हैया प्रसाद तिवारी रसिक

नाती बेटा के साथे रसिक जी

सिरिजन ई-पत्रिका

समान्य अंक

भोजपुरी के आचार्य कवि
पं. धरीक्षण मिश्र

स्व. पं. धरीक्षण निश्र जी के कविता
कौना दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ

भारत स्वतंत्र भैल साढ़े तीन प्लान गैल ।
बहुत सुधार भैल जानि गैल दुनियाँ ।
वोट के मिलल अधिकार मेहरारुन का
किन्तु कम भैल ना दहेज के चलनियाँ ।
एही दहेज खातिर बेटिहा पेरात बाटे
तेली मनों गारि गारि परेत बा घनियाँ ।
बेटी के जनम बा बवाल भैल भारत में
एही दुखें डोली में रोवति जाति कनियाँ ॥1॥

दिल्ली का गद्दी पर बैठल मेहरारुवे बा
ओही के बाटे उहाँ चलत परधनियाँ ।
जल थल आ नभ तीनूँ सेना के सेनापति
दागे सलामी ओके साथ ले पलटनियाँ ।
यू.पी. में तिरिया राज बाटे सुतारन भैल
गुप्ता आ त्रिपाठी जी में होत बा बजनियाँ ।
एहू तिरिया राज में ना सुख भैल बेटिन का
एही दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ ॥2॥

एके दू कौर खा के रातो दिन रहे के परी
देहि के जरावे लगी भूखि के अगिनियाँ ।
खैला का पहिले आ पाछे थारी जाँच करे
अइहें बला के कुछ माई आ बहिनियाँ ।
अधिका खैला से लोग लागी बदनाम करें
ऐसने बा एकरा खन्दान के रहनियाँ ।
एही तरे केतने महीना ले रहे के परी
एही दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ ॥3॥

◆◆◆

अंजन जी कऽ चारगो मुक्तक

भोजपरी गीत सम्राट
पं० राधा मोहन चौबे
'अंजन जी'

1. चाही ले जे धावत रही,
राउरे गीत गावत रही,
डरामा बंद होइ त केहू रुकीना,
एसे राउरे आँखि में अंजन रचावत रही,

2. हमरा चाह नइखे, बोलाई मति,
बईठि गइल बानी, दऊराई मति,
 मन करि त चुपेसे बतिया लिहल जाइ,
भिड़ी में नाची के खुदकाई मति,

3. हम राउरे हई आँखि खोली के देखीं,
पार लागे त बोलाके, बोलि के देखीं,
हरदम मेला त लागते आइल बा -
कुछु डोला के देखीं, कुछु डोलिके देखीं,

4.सपनवाँ अँखियन के किनी लीह,
दरदिया जिनगी के छीनि लीह,
जब आँसू के मोती छिटाये लागे
त हाथ बढ़ा-बढ़ा के बीनि ली।

◆ ◆ ◆

डॉ. जौहर शफियाबादी के कुछ गज़ल

डॉ. जौहर शफियाबादी
विभागाध्यक्ष (उर्दू)
डॉ. पी. एन. सिंह महाविद्यालय, छपरा

रो-रो के सनेहिया का पथ में

रो-रो के सनेहिया का पथ में,जे आस के सावन तक पहुँचल ।
ई दर्द उहे बस जानी जे, चितकार के चितवन तक पहुँचल ॥

के जीत गइल, के हार गइल, के हार गइल, के जीत गइल।
निर्णय ई भइल जब ज्ञान मिथक, संकल्प के चंदन तक पहुँचल ॥

मन हार गइल, तन जीत गइल, तन जीत गइल मन हार गइल।
जब नेह का सागर के पानी, विश्वास के आँगन तक पहुँचल ॥

जब घोर अन्हरिया के पीड़ा दुतकार गइल दुर्योधन के।
तब धर्म धरासाई हो के, टंकार के उपवन तक पहुँचल॥

हर सांस के बाटे ताजमहल, हर आस के कुरूक्षेत्र जहाँ ।
ओह गाँव के हम संसार कहीं, जब साध के मधुवन तक पहुँचल॥

जौहर के महाभारत में खड़ा विश्वास के अर्जुन साखी बा।
कब भीष्म पितामह के शय्या, हुंकार के दर्पण तक पहुँचल ॥

◆ ◆ ◆

छन-छन के बनल-बिगड़ल

छन-छन के बनल-बिगड़ल,टाँकल बा हथेली पर ।
आवेले हंसी हमरा, जिनगी का पहेली पर ॥

शुभ याद के परिछाहीं,सुसुकेले अँगनवा में ।
जब चाँदनी उतरेले, सुनसान हवेली पर ॥

जीअत आ मुअत खाता,लागत बा कि बेटहा ह ।
जे गाँव का तरकुल का,बइठल बा मथेली पर ॥

अब विधने भरम राखस,चुटकी भर सेनुरवा के ।
धड़कत बा करेजा की,गुजरल का सहेली पर ॥

जिनगी का अन्हरिया में,कइसन ई अँजोरिया ह ।
बा नाम लिखल कवनो,मनरूप चमेली पर ॥

जौहर जे निखरले बा,निअरे से जिनिगिया के ।
विश्वास करी ऊ का,माया के बहेली पर ॥

◆ ◆ ◆

रउवो डेराइले का सर्दी से?

टी से आ टी सर्ट वाला से। टी (चाय) से सर्दी डेराले। टी सर्ट वाला से भी सर्दी डेरात बिया। रजाई ओढ़ के हाथ में एक कप टी लेके चिन्तन कइल जा सकेला सर्दी में, टी सर्ट में चिन्तन खातिर बैंकाक जाये के पड़ी। सर्दी बढ़ेला त एक कप टी हाथ में लेके रजाई में घुसिया के हमार अन्तरराष्ट्रीय चिन्तन चालू हो जाला। बैंकाक गमन के सभ्य समाज चरित्र की दृष्टि से ऊँच निगाह से ना देखेला। एही से हम स्व रजाई में ही चिन्तन उचित मानिलें। जाड़े में कुहरा घनघोर होखे त हाथ में एक कप चाह लेके कड़ी निदा के साथे केहू के मुँह तोड़ जवाब दिहल जा सकेला। सर्दी सबके लागेला। जेकरा ना लागत होई, या त ऊ पप्पू होई ना त पागल।

ए भाई, देखादेखी रउओ टी सर्ट पेन्ह के मत कवनो यात्रा पर निकल जाइब ना त ऊ यात्रा अन्तिम यात्रा हो जाई। बाद में मत कहबि कि बतवलऽ ना। वोसहूँ अपना देस में देवाल पर लिख के बतलावल जाला कि देवाल पर लिखल मना बा। सर्दी से केहू काँपत रहो, चादर मजार पर चढ़ावला के परम्परा बा। अइसन लोग सर्दी से काहे डेराई जी। रउवा डेराईं, पटवनी करे जाइब त हाथ गोड़ कठुआ जाई।

गान्ही जी उघारे रहत रहनीं। ऊँहा से अंग्रेज डेरा सन्। इहो गान्ही जी टी सर्ट में आ गइल बाड़ें। जहिया टी सटवो उतार दीहें सरकार इनहूँ से डेराए लागी, भारत जुड़ जाई।

छोड़ीं ई कुल बाति। केहू के सर्दी लागे भा जनि लागे, केहू पहिरो भा नंगे रहो, हमनीं के का क सकेनीं जा। जब नागा बाबा लोग प्रयागराज की ओर लउके लागे त बुझीं कि कुम्भ नहान नियराइल बा आ नेता लोग नंगई पर उतरल टीबी पर लउके लागे लो त बुझि लेब कि चुनाव नियराइल बा। लड्डु के मौसी “हैप्पी न्यू ईयर” भेजले बाड़ी। एही में से थोरे रउओ के “हैप्पी न्यू ईयर” भेजत बानीं। बाकी बताइब जरुर कि रउवो डेराइले का सर्दी से?

◆ ◆ ◆

डॉ. अनिल चौबे

सम्पादक, सिरिजन

दोहा

बतछीलन से ना बने, कवनो अजगुत काम।
बरँगा तरकन के चला, कहवाँ मिलल मुकाम?

खउलत राँगा के नदी, रूप आन के आन।
पारा कजरौटा बनल, जीवन - आँखिन सान।

आँचर खींचत सभ मिलल, चिउटी काटत लोग।
चोर-आँखि ताकत सभे, मन गदुरा बड़ रोग।

आँगन से पूछे सूरुज, कितना दिहीं अकाश?
कतना दिहीं हुलास कहु, रितुअन के रंग, बास?

करिखा के डिबिया भरल, गमगम उजर कपूर।
झरना अस ओढ़नी हँसे, भीतर भरल सबूर।

धड़कन - धड़कन रागिनी, प्रान अनाहद नाद।
साँस- साँस जब तार अस, पाईं अमृत- स्वाद।

बिजुकल सभके भाव बा, बा सवाल मुँहजोर।
चाह- ज्वार बा सिधु के, सभकेहू अँखिफोर।

सब रिश्ता बा नीम अस, तींता तिकछा स्वाद।
मिलत-जुलत में पीर बा, भरल रसायन खाद।

उखरि गइल पग तीर से, आँखिन तर मजधार।
कहाँ पसेना के पता, टूटल हिय के तार?

कविता-पेनी में कहाँ, अब अरथन के आँच?
ना डभकल संवेदना, ना अनुभूती. साँच।

चुप चुप पपनी के छुअल, छिप - छिप कवनो याद।
डभ डभ आँखिन के भइल, सपना से संवाद।

जब भरोस के किरिनिया, राह गइलि कुछ भूलि।
अपनापन सकि- डोर - कसि, गर्दन गइलसि झूलि।

खुशी सनेह दुलार के, हुलस जीत आ हार।
बरजत- बरजत सुखि गइल, हरख- दर्द के धार।

टूटि गइल सुर नेह के, सूखल कँवल करेज।
हूके पगलाइलि हवा, चुकल उमीदो- तेज।

◆ ◆ ◆

हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'
राँची,झारखंड

राधा मनबाधा

सूरति के सुरुता परे, मुख मुसुकी छितराय ।
ठकहरिया सखियन लगे, का राधा बउराय ? १

राधा मनबाधा उधो, अनमिट एक पिआस।
हम जवरे तबहूँ बिलग, कहि हरि हेर अकास । २

अहले भोरे के पुलक, चढ़ल कटीली डार ।
निपट बिजन के केतकी, नखरा एक हजार । ३

इचि सकोच तनिका अलस, रात-बयस के पात ।
कर रहली नखरा किरिन, घुरिघुरि आवत जात। ४

इनिको नखरा अलहदा, हरियारी पर लुब्ध ।
आखिर ललियो बृख-धिया, बेगर जवरे छुब्ध । ५

ओरहन

एहो बनवारी तू त बेसी ना बजावऽ बंसी,
इँतरी छहेंतरी के मन बड़ा ढुलमुल।
बनेया बहेंगवा-सी बखरी से भागी-भागी,
बने-बने माके बौरी बेकल बेबस तुल।
राति के गहनता में बावरी बतास बहे,
बोल बँसवारी सुनि, ताके बौखी मुलमुल।
बिधना के सिरिजल धन अनबोलता ई,
बाछी मोरी अगते त रही बड़ी हुलचुल।

कुतूहल

आधा खुल रधिका अधर, अँटकल अधर सुनैन।
जलधर गिरधर सम बरन, समुझ भेद बेचैन।
समुझ भेद बेचैन, धरा ब्रज के गति एके।
धारन धरन अधार, बात सब महज कहे के।
गति बिसात से पूर, चकरधर तज हर बाधा।
छिटक बिरज से तान, रहल का आधा-आधा?

राधा तू आधा

एक तुहें त रहलू राधे
जेकर मौजूदगी में कुछ अउरि बात रहे,
तोहर रूप-रंग, देह-गंध, परस, सबद सभ
सिसिर-अगन लहकावल
समूचे वजूद में,
माटी, पानी, आग, हवा, अकास में
सगरे तूँही त रहलू
नीमन-जबून में,
खाक-बिहूद में,
हमार हम लोपित भ गइल कहईं
अमव्सा के चान अस।
एहि तिरन के का नाँव दिहल जाव?
सबद-बंध से परे।
एहिके बान्हे के हर जतन कइले
छहल जाला,
हर भेव क अंत इहवाँ।
सबद त रूप के, अरूप के परगटन क जरिया ह
दुनो से आन के ई का छानी?
पानी में लहर कि लहर में पानी?
बानी में अरथ कि अरथ में बानी?
अइसन चीझ के कउची कहल जाला?
हम तोहसे बिलग कब रहनीं राधे?

◆ ◆ ◆

दिनेश पाण्डेय
पटना,बिहार

दीया के अँजोर में

जब हमनीं के एक दीया बारल जाला त अनिवार्यत: एगो छहियों उपस्थित होले । ई प्रकृति के साखी ह । ई संग-नि:संग होखल हवे । अपनहीं अंतर्द्वंद्व । अपन अस्मिता में आत्मस्थ होखले क जतन ! रोशनी स्मृति आ आशा क मिलल-जुलल हमनीं के आतंरिक मुक्ति ह । एगो अगम पथ पर श्रद्धा, विस्मय ,मुग्धता क ज्योति से यात्रा कइल ।

दीया क रोशनी आंतरिक भाषा क बोधगम्यता, स्वच्छता, ऋजुता, सगरो अतिशय क निषिद्धता, जीवन के उत्फुल्ल व्याकरन के गतिशीलता क सृजन ह । ई रूपरीति आ विषयवस्तु के समन्वयन जइसन हवे । ज्ञान, धन-दौलत आ हिंसा के नकारात्मक अतिरेक जीवन के अन्धकार से भर देला ।

अन्हियार में समकालीन मानस क अन्तर्द्वन्द्व, दोहरापन आ गोड़े के नीचे के भुईं क अनुपलब्धता क आभास होला । अतीत पर गर्व क अर्थ अतीत के भार से समाधिस्थ होखल ना । समय के विस्फोट से नष्ट हो गइलो रोशनी से विमुखता ह । स्वस्ति-वाचन से आरम्भ कऽके बन्हल-बन्हायल नियमन से टूटन कइल ज्योति -पुंज होखल हवे ।

अन्हियार बतावेला कि दुनिया के संशोधन क ज़रूरत सदा बनल रही । भाषा से रोशनी आवेले आ मौनो से, बस ओम्में सच्चापन होखे ! नि:शब्दितो हमनीं के आंतरिक प्रकाश देले । रोशनी-अन्हियार क द्वंद्व आ समन्वयन: बोधगम्यता, अर्थपूर्णता, जटिलता आ अर्थहीनता क असम्बद्ध संसार ह । मनई जब बन्हल पुतला में बदल जाला, जीवन तब एगो अनिवार्य नियति ताड़ित निष्ठुरता बन जाले । उहवें ओके रोशनी चाहीं ।

जइसे अर्थविहीन शब्द खाली ध्वनि होलें, उन्हनीं के बाति ना कहल जा सकल जाला, वइसहीं जीवन में रंग होखे जे चाहीं, जवन रोशनी ले आवेले । एसे शब्द के ओकर अर्थ फेरू से मिलेला, व्याकरन लौटेला, तार्किकता आवेले, ई मनुष्य क उत्कट संभावना हवे ! हमनीं के प्रकाश के प्यार कइल जाला जवन रस्ता देखावेला, अन्हियार के दखल कइल जाला जवन सितारा देखावेला । ढेर रोशनी दीठ के अस्पष्ट क सकले जबकि अन्हियार में सच्चाई हो सकेले ।

प्रकाश के चमक से विचलित ना होखे के चाहीं जवन अन्हियार में मौजूद गहन वास्तविकता के छुपा लेला । बहरी वस्तु बहरी वास्तविकता क प्रतिनिधित्व करेली सन जवन अन्हियार में मौजूद गहन सत्य के स्पष्ट ना करेलीं । अन्हियार आ रोशनी । नकारात्मकता आ सकारात्मकता । एम्में से कवनहूं आंतरिक रूप से खराब चाहे अच्छा ना हवे । जवने तरह एक नकारात्मक आ सकारात्मक चार्ज के बिना बिजुरी क अस्तित्व ना ह, एह ब्रह्मांड में जीवन के अनुभव के साथे जुड़े खातिर अन्हियार आ प्रकाश दूनों आवश्यक हवें । आजो खाली प्रकाशे होत त हमरा लगेला कि जीवन आ अस्तित्व अनंत ऊब नीयन होइहें । विविधता होखला के साथे हमनीं में एगो दिव्य अस्तित्व होला । आजो सगरो लोग अन्हियरवे में होइहें त कुछऊ देख आ अनुभव ना कऽ सकेलें । दुनिया में सगरो अन्हियार दिया के प्रकाश के नष्ट ना कऽ सकेलें ।

हमनीं के प्रकाश आ अन्हियार दुनहुने क आवश्यकता हवे । जइसे कि कवनहूं नीक फोटोग्राफर आपके बताई कि सौंदर्य प्रकाश आ छाया क संतुलन ह जवन जीवन के सुग्घर आ रहस्य से सम्पृक्त बनावेला । ई प्रकाश, अन्हियार आ रंगन आ परिवर्तनन क अनंत इंद्रधनुष हवे जवन जीवन के समृद्धि प्रदान करेला ।

जीवन सामंजस्यपूर्ण आ आनंदमय होला जब हमनीं के प्रकाश आ अन्हियार दुनहुन क स्वागत कइल जाला आ दुनहुन के बीच एगो सामंजस्यपूर्ण संतुलन पावल जाला । ई मध्य मार्ग हो सकेला जवन बौद्ध धर्म क जरूरी हिस्सा हवे । अइसन हो सकेला कि जब हमनीं के प्रकाश आ अन्हियार के बीच में नृत्य कइल सीखीं त हमनीं के ढेर मज़ा आवे ।

याद रखीं कि अन्हियार आ प्रकाश के ध्रुवन के बीच आकर्षक रंगन क एगो अनंत इंद्रधनुष हवे। कुरूपता के कारने सौंदर्य के देखल जाला । महानतो में कमी हो सकेले, लघुतो में श्रेष्ठता । शून्यता आ परिपूर्णता एक दूसरे से पैदा होली सन । कठिनाई आ आसानी से एक दूसरे के संयुक्त कऽके जीवन बनावल जाला । लमहर आ छोट एक दूसरे के जोड़ल जाला । उच्च आ निम्न एक दूसरे के परिपूर्ण करेलन । ध्वनि आ श्रवन एक दूसरे के पूरक हवें । समाज के अग्रभाग आ पश्चभाग एक दूसरे क अनुसरण करेलँ सन ।

कहल जाला-बदरवन के छाँह में सूरज लुका ना सकेता । जइसे चंद्रमा समुद्री ज्वार के रोक ना सकेला । एगो छिपल सितारा कब्बो । मुस्किया सकेला । रात के अन्हियार पर करिया जादू नियन असर होला । एह से अपना भित्तर के संवाद के सुशोभित करीं । आपन आंतरिक दुनिया के प्रकाश आ करुना से सुवासित करीं । जीवन सुग्घर होखी । आपके जीवन में कुछ सबसे सुंदर चीज कटवन के मुकुट में लपेटल आवेली सन ।

जइसे एगो चित्रकार के आपन तस्वीर के फिनिशिग टच देवे खातिर प्रकाश क आवश्यकता होले, ओइसहीं हर केहू के एगो आंतरिक ज्योति के आवश्यकता होले । अन्हियार अन्हियार अन्हियार के बहराँ ना भगा सकेला: खाली प्रकाशे अइसन कऽ सकेला । नफरत नफरत से बहराँ ना निकरि सकेले: खाली प्यारे अइसन कऽ सकेला । बेला जिनगी में चांदनी रात क महकेले । जहवाँ बहुते अन्हियार होला, उहवाँ तरइन के कारन प्रकाश के बिंदु उपस्थित होलन सन । केहू के जीवन के सबसे अन्हियार छन में एगो मोमबत्ती के रोशन कइल सीखीं । प्रकाश बनीं जवन दुसरा के देखला में मदद करेला; ई उहे ह जवन जीवन के सबसे गहिर महत्व देला । सनातन तलाश क प्रेरणा दिहल हवे ! इहे दिया-देवारी क हेतु ह।

◆ ◆ ◆

(परिचय दास, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, नव नालंदा महाविहार सम विश्वविद्यालय (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार), नालन्दा, आ पूर्व सचिव, हिंदी अकादमी, दिल्ली सरकार एवं पूर्व सचिव, मैथिली व भोजपुरी अकादमी, दिल्ली सरकार, भारत)

परिचय दास

बुढियाइल साँझ

बुढियाइल साँझ,
झुरियाइल चाम झुलावत आइल।
फटही लुगरी में लपटाइल
अन्हार के मोटरी माथ पर धइले,
धधा के जवान रात का गोड़ पर ढिमुला गइल।
अन्हार के मोटरी खुल के छिटा गइल, छितरा गइल पसर गइल।
जवानी का जोश में रात का ऊँच खाल भी ना बुझाइल,
जहाँ लात ना धरे के तहाँ बात धरा गइल।
जोन्हिन में गुजर बुजुर होखे लागल,
चकुदार हाँक लगवलस-...
"जागत रहिह लोग हो...
रात गाभिन बा..."
पता लागल कि रात के नकछेदी का घर मे सेंध परल बा,
चिखुरी के बकरी गायब बिया,
लेदर पाँड़े के बैल खुल गइल बाड़ेसन,
सितबिया चँवरा में खटिया पर बेहोश परल बिया।

◆ ◆ ◆

भूख का भाषा में कलपत कविता

भदराह भादो में,
भींजल गोंइठा पर,
गील आटा का लीट्टी जइसन,
जिनगी धुँआत चल आइल।।
खून का कमी से बेमार मनई जइसन,
मुँह के सवाद घुघुआत चल आइल।।

माई, बाबूजी, मलिकाइन, भाई, बहिन,
धुँआ के सपना तापत,
कबो ना पाकेवाला लीट्टी का ओर ताकत,
भूताह अन्हरिया में,
एक दोसरा का आँख में,
भूख का भाषा में रात भर
कविता कलपत रह गइनीं जाँ।।

आज गैस बा, कूकर बा,
फ्रिज बा, हिटर बा, सोलर बा,
बाकिर पेट का आग पर भादो के बोखार भी
बोखरिया जाता।
ई सूरज का संतोष के लील जाई,

चान का चानी के चबा जाई,
आसमान का नीलाई के नीलाम क दी,
धरती का धुसराई के धुरछक छोड़ा दी,
तबो के जाने बुताई कि ना?

◆ ◆ ◆

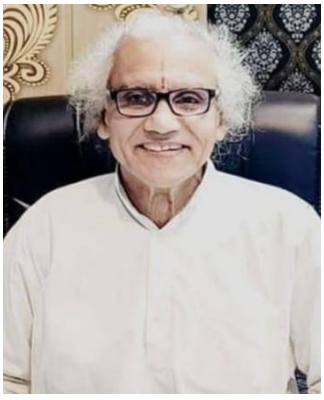

नथुनी पांडेय "नागेंद्र"
रैपूरा, कटेया, गोपालगंज

खन में हँसे खने में रोवे

आँखि अछइते आन्हर होके
कइसे भला बतासे धाईं
खन में हँसे खने में रोवे
अइसन आँखि कहाँ से पाईं

असरा कहीं सपन बा कतहीं
दीया कहीं उजियारा
भरमल लोग साँझि के पहरा
के जाने भिनसारा
दीद दीद में दीठि जगा दे
कइसे अइसन हुनर जुहाईं
खन में...

खुदगरजी में रोज नेह क
दरपन तोरल जाता
सोना जइसन भोर गँवाके
राति अगोरल जाता
कवना जतन जोग से हम
पाथर के ऊपर दूब जमाईं
खन में...

हम जुग क कुम्भन कबीर
का जानीं सिकरी , कासी
हिया - कठौती चन्नन पानी
हम अइसन रैदासी
रेत परल मन में, अब कइसे
सूखलि नदिया नाइ चलाईं
खन में...

◆ ◆ ◆

डॉ. कमलेश राय
गाजीपुर,उत्तरप्रदेश

हम ऐना

हम ऐना हर घर आंगन कऽ
हर चेहरा कऽ रखवार हईं
राखऽ सहेजि तऽ एगो हम
तोरऽ तऽ कई हजार हईं ।

हिय में सनेह से राखीलां
दुख कऽ पीरा सुख कऽ उछाह
निरखीलां रोज थीर रहिके
जिनगी कऽ सगरी धूप-छाँह
खन में अधरन कऽ मीठ हँसी
खन में अँसुवन कऽ धार हईं ।

हर घरी समय के साँच बदे
हमहीं साखी हमहीं नजीर
हमके काशी काबा से का
सगरे जुग कऽ हमहीं कबीर
पहिचान जोगाईलां सबकर
अँखियन कऽ हम उजियार हईं ।

हम सबकर रूप -रंग बाकिर
ना रंग - रूप कवनो हमार
हमके निहारिके सिरिजन के
हर सूरत कऽ सँवरे सिगार
हम सूरुज कऽ निरछल अँजोर
सबका मन कऽ एतबार हईं ।

◆ ◆ ◆

डॉ. कमलेश राय
गाजीपुर,उत्तरप्रदेश

फूले सरसइया के खेतवा

फूले सरसइया के खेतवा,
बलम कलकतवा न जइहऽ हो!

पीयर पीयर होला सगरे सिवनवाँ
नई नई बहुअरि आवेली गवनवाँ॥
नदिया छोड़ेले बलुरेतवा
बलम कलकतवा न जइहऽ हो!

रीतिया- पीरितिया ओराले न बतिया
लुत्ती अस दिन होला, फीता अस रतिया॥
पियराला पेड़वन के पतवा
बलम कलकतवा न जइहऽ हो!

सर सर सिरकेले पछुआ बेयरिया
तीर अस लागेले माघ के अजोरिया॥
थर थर काँपे करेजवा
बलम कलकतवा न जइहऽ हो!

चढ़ते फगुनवा मोजरि जाला अमवा
सूति उठि बाँटेला नेहिया पवनवा॥
चिरई लगावेली खोतवा,
बलम कलकतवा न जइहऽ हो!

◆ ◆ ◆

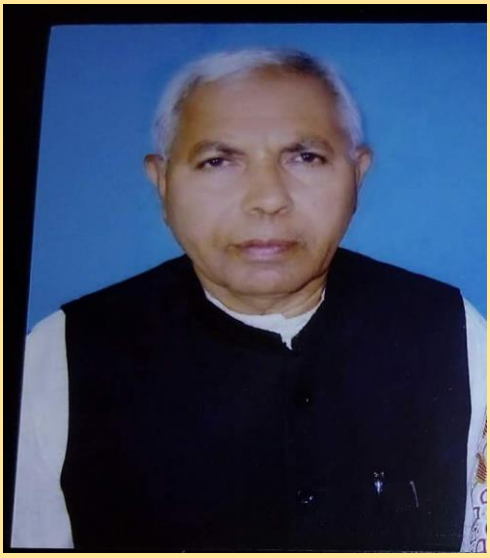

इंद्र कुमार दीक्षित
देवरिया(उ.प्र.)

बखरा

"देखबे ईया! हमरा के केतना छोट देले बाड़े.. हमरा के बड़का दे.. ऊँ ऊऊऊऽऽऽ"

"रे करियठा! अब गाछ बिरिछ के फर- फरहरी कहीं जोख के मिलेला.. खा ले इहे लीची.. कालवा दू गो देम तोरा के.. मलकिनी पाँचे गो त देली ह. एगो सरले निकल गइल ह. "

"हूँ.. हम ना खाएम जो.. काल्हे दू गो दीहे... हे नकचिपटा के एगो.. तबे हिसाब फरियाई.. "

ईया के मन रहे एगो अपनो लीचिया खाए के मने एकनी के मारे का ठेकी.. बाप त ओराइए गइलें.. अब ईयो ना देखस त के देखी... ईया के अब उमिर बा चउका बरतन करे के. तबो लागल बाड़ी.आपन बँसवारी दोसर के अगोरी.. अब इहे करम में बा त केकरा से गोहराईं.

घोनसारी से भूजा आइल ना कि सब लइका उलिट गइले सन...तनी हमरो के तनी हमरो के। लोटिनिया मने मने चहलस कि भउर में सोंनाइल अलुआ लुकवा के धऽ दीं। लेकिन मुँहटेढ़ी देख लेहलस।

अब त एकरो के देवे के होई। भंटा रहित त उहो पाकित। लइकन के लुटला से जौन बाच गइल ओमें दुनू गोड़िन के बखरा लागल। नीचे त खाली किन किन रहे।ओही में उचिला के जवन मिलल ओही में सबूर करे के होई।

ईया के भूजओ ना भेंटाइल.. हई चारि गो जनमा के उधियवना बिला गइल..अब एकनी के पोसल ठठ्ठा बा. ईया के हड़री झुरा गइल एकनी के परवस्ती करे में.

"रे हमार जमा काहें पेन्हले बाड़े.. उतार ना चहल देम.. ते बड़का खटिया पर सुतबे.. आ हम गोनतारी.. उतर..जरिए से बड़का झींटे के लखुत हो गइल बा.. कपारे फार देम.."

"ते त बड़का बेईमान हउए.. सब में निमने चाहीं. दही के हड़िया ले के बइठ जाले. आव फरिया लेवे के अजुए."

ईया टुटही खटिया पर पिछवाड़े परल बाड़ी. किरिया करम कइल बलाए भइल बा. कवनो अलम नइखे. एकनी के भूजा, सतुआ खा के पोसनीं.. कूटनी, पिसनी क के जियइनीं.. हमार ना भइले सन. अब त कमातो बाड़े सन.. कबो- कबो झाँकी पार जाले सन..

"ईया! मछरी खइबे.. गोस खइबे.. आन दीं."

"तोनी के चिड़उनी भइल बानीं रे उधियवना सन.. हम मछरी, गोस खानीं. मछरी, गोस खइतीं त तोनी के केतरा जियत सन रे.. भाग इहा से.. भाग.. "

"का रे! ए गछिया में हमार बखरा नइखे. हमरा छौड़ी के हथवा से काहे छीन लेले ह. तोरा के अवकात देखावल जरूरी बा. आवे दे काले हमरा सरवा के. बिधाएक जी के डराइबर ह. उजार के फेंकवा देम तोनी के."

"जो रे सारे जो! लुका जो भऊजी के अँचरा में.. मउगाड़ी.. हमरा के कम बुझऽतारे का.. हमार त ससुरे ढेर बाड़े तोरा खातिर.. दिन रात कलक्टरे के लगे रहेलें.. बोलाव अपना सार के छठियार होइए जाव एमकी."

ईया सुरग से आजो ताकते बाड़ी.. देहिया के बखरा ना लागल इहे ढेर बा..लागित त का होइत..हमार गोड़वा हथवा के बखरा ना लगवले सन इहे ढेर बा. बाकिर ई सुरगवो में बखरा लाग जाइत.. मूड़ी सुरग में आइत आ गोड़वा नरकवा में.. हथवा सुरग में त पेटवा नरकवे में..

ई बखरा कहियो ना ओराई..

◆ ◆ ◆

डॉ शिप्रा मिश्रा
बेतिया,प० चम्पारण,बिहार

इन्द्रधनुही के रंग में रंगल जिन्दगी

इन्द्रधनुही के रंग में रंगल जिन्दगी
कुछ अँजोरिया भरल, कुछ अन्हरिया भरल।
कबहुँ सुख के समुन्दर पखारे चरन
कबहुँ माथे प दुख के बदरिया ढरल।

कबहुँ अँजुरी भ' अमरित बिना श्रम मिले
कबहुँ चुटकी भ' चाहत छिटा के गिरे
कबहुँ पौरुख के पाथर निशानी गड़ल
कबहुँ गतरे-गतर रोग आ के हिरे
जब ले पानी रहे त'ले पानी मिले
कबहुँ पनघट पहुँचि ना गगरिया भरल।

देखि मुखड़ा सुघर काल्हि जे आ गइल
आजु दोसर भेंटाते छिटिक दूर बा।
प्रीति के पाँव ठुमुकत दुआरे चलल
टूटि के सुख सपन अब भइल चूर बा
ताज सनमान के माथ सोहत रहे
चूक तनिका भइल त पगरिया गिरल।

सुनि अवाई सजावल गइल सब सड़क
पग धरा ना परे बिछि गइल फूल बा
नाम पद रोब पदवी तनिक कम भइल
राह सँकरो में अनगिन भरल शूल बा
एक नजर का बदे लोग पागल रहे
आजु तरसत नजर ना नजरिया फिरल।

भोर ललकी किरिन स्वागतम कहि गइलि
तन जरल दूपहर के दुसह घाम से
साँझि होते सुनाइल विदा शुभ विदा
सुति गइलि राति बिस्तर पर आराम से
सुर सधल ना सदा शुद्ध 'संगीत' के
कंठ में सुर विवादी पइसि के थिरल।

◆ ◆ ◆

बात बहुते रहे

बात बहुते रहे जे कहल ना गइल।
कुछ त रउरो तरफ से पहल ना भइल।

हास में लोर के, पीर में प्यार के
जीत के ना कथा नित मिलल हार के
मिटि गइल सब हरफ खत के' धइले
धइल।

जाड़ के राति ठिठुरलि रजाई बिना
जेठ सोचत ह बेना किनाई कि ना
अब त सावन परा जात फइले फइल।

देश घर गाँव जनता के' सरकार के
काटि टुकड़ा करनिहार किरदार के
साफ कुरुता के' नीचे लभेरल मइल।

ज्ञान के भौन से बेसुरा तान के
साथ में ढोल फाटल पिटत डॉन के
घोरि के पी गइल सब शराफत कइल।

◆ ◆ ◆

संगीत सुभाष
प्रधान सम्पादक-सिरिजन

घर उदास बा रे माई

इयाद बड़ुए बाकी, घर उदास बा रे माई
आज खर जीउतिया, सून घर बार बा रे माई।

माई एगो आखर ना, करतार तूही माई
कतरा कतरा खूनवा के, कर्जदार बा रे माई।

हथवा तोहार माथे, जग के ना बुझनीं
अब मथवा प बोझवा, सवार बा रे माई।

ममता के छँहिया, छिना गइल जहिया से
गँउवा के रहिया अब, अन्हार बा रे माई।

छोट जाना बढ़िया से, बसावत बाड़े धरवा
नाती पोता सब लोग, जुझार बा रे माई।

विकास बाटे लउकत, चहुँओर घरवा दुआरे
आज तोरा बिना, घरे अन्हार बा रे माई।

किशोर ताके सगरो, चाहस माई के देखल
अंतर में उठत बा , जवार बा रे माई।

◆ ◆ ◆

कनक किशोर
राँची(झारखंड)

खेत सगरो बिला गइल बाटे

खेत सगरो बिला गइल बाटे।
गाँव शहरे में आ गइल बाटे।

वक्त पर आज साथे ना केहू,
लोग आपन कहा गइल बाटे।

ख्वाब सगरो दफ़न भइल दिल में,
केहू हमके रुला गइल बाटे।

कोक, पेप्सी जुबाने चढ़ल बा,
गूड़ महिया हेरा गइल बाटे।

अब अमावस भइलि रहे जिनगी,
घाम सुख के लुका गइल बाटे।

साँस जिनगी रहल जे भी हमरो,
काँट दिल में घुसा गइल बाटे।

सूर्य जिनगी जियाने ह भाई,
यार नश्तर चुभा गइल बाटे|

◆ ◆ ◆

सन्तोष कुमार विश्वकर्मा 'सूर्य'
तुर्कपट्टी, बन्जरिया, देवरिया

सनकेसिया

जइसन नाम ओइसन रूप। सनकेसिया के बाल एकदम सन अइसन रहे। हाँलाकि जनमते सन खनिया ना होई।लेकिन हम जबसे देखतानीं सनकेसिया के सन अइसन बाल। पता ना ओकर माई बाप इनाम काहे दिहलस? ई त सरग में जाइ के पूछे के परी। ओकर माई बाप बहुत पहिले मर गइल।

वियाह ना होत रहे । गरीब के बेटी उठावे के ताकत नू चाहीं। से ऊ बहुत दिन ले कुँआर रहे। खेत बारी जाल पथार, गाय -गोरु दुअरा पर रहे। बाकि बुद्धिया चरे चल जाए। जाल पथार ,खेती बारी ओकरा खतिरा एगो बलाय रहे। ऊ समुझे हमरा खनिया सुन्नर आ लछमीवान दुनिया में के बा। ऊ पैदल ना चले ओकरा चले के आदत ना रहे। कहे हम इनर के परी हईं। हमार बाप-दादा पुरखा -पुरनियाँ काहे के उपरजले बा? सास्तर झूठ ना कहेला -"जलक ले जिनगी रही, खूब माजा क लऽ, करजो ले के घीव पीयऽ लोग। सनकेसिया के एगो भाई रहे भिखरिया। लइका ना होत रहे। डाइन कोख खा गइल रहे। बड़ी मूड़ी पटकला पर बिसनु देवी के गोहरवला पर भिखरिया के जनम भइल। भले चार काठा बिकाई त बिकाई माने बिसनुदेबी के भारा उतारब।भिखरिया गाँवभर लंगटे घूमें। ना कहियो बाल झराए ना कहियो मुँह पोंछाय, बिसनु देवी के मांगल हवन।भिखरिया के केस में सउसे सउसे जाटा हो गइल। अब ऊ महादेव बाबा हो गइल। छाछात महादेव जवन ऊ कहि दे ओकरा के करहीं के बा।

भिखरिया के जनमे के बेर चार गाँव के लोग खाइल ।ऊ अहमक दहमक कि जिला जवार के लोग हैप रहे।

सब परोजन खेतवे के बल पर होखे। महतारी बेटा -बेटी सब कार से आवस जास। ओहिमें हँसत ठठात एकदम राजसी ठाट। हमनीं के मोटका चाउर ना घोंटाला। बिना मीट मछरी के कवनो खाना ह। बाजार में सबसे महंग तरकारी सनकेसिया कीहें आई। भर रास्ता चिलइहन सन। हमरा खनिया ए जवार में के खइनिहार पहीनिनहार बा। पातर पहिनेनीं ,पातर खानीं स। कबो रेक्सा पर आवस त पूरा खुला रेक्सा हँसत ठिठियात। हम त पैदल चलेनीं त झलका हो जाला। बड़ी सुकवार हमार देह बा।

सनकेसिया के अपना सुनराई के बड़ा घमंड रहे। सबसे कहे हमरा अइसन के सुनर बा? गोर केहू गोर भभूका।हम दूध पियेनीं त सफा लौकेला घेंटवा में। पान खानीं त ओहि तरे घेंटवा में लाल -लाल लउकेला। अनसोहातो कहिहन स केहू के हजार , पाँच हजार , दस हजार के जरुरत हो त हमरा दुअरा आई। ऐसहीं करत-करत सब खेतवा बिका गइल। लोग समझाई लछमी केकरो ना हई। उनका के आदर कइल जाई त रहिहें। ना त भागत देर ना लागी। बड़-बड़ रजवाड़ बइठल खइला से ओरा गइल। माने ओकनी पर "पद्म पत्र"खनिया असर ना होई।

गाय बियाए त सब लोग मेंटा ले के ओकरा घरे जाई।सबलोग कही बुरबकवा के गाय बियाइल त सब लोग ओकरा दुआरी पर मेंटा ले के खाड़ हो गइल। सबके मेंटा में दूध मिले लागल।हर साल गाय किनाई खेत बेंच के आ बिसुक जाई त औने-पौने में बेंचा जाई।

केहु तरे भिखरिया के बियाह भइल कनिया के सुनराई खतिरा गाँव में झगरा हो गइल।ऐतना सुनर कनिया कवनो बाभनपटी में नईखे। अब ऊ कनिया दहेज में झगरा लेले अइली। चनरमा उनकर जोति देखिके लजा जास।

सब खेत बारी त भिखरिया के बियाह में रजवाड़ा देखावे में खतम हो गइल। सारा बाजार में ओकरा कनिया लायक समाने ना रहे। पटना, बनारस, दिल्ली से गहना कपड़ा मंगवावल जाय।

अब सनकेसिया के बियाह के समसिया सुरसा के मुँह खनिया खड़ा हो गइल। केहू तरे सनकेसिया के बियाह गोलावट भइल। भिखरिया के सार से सनकेसिया के बियाह भइल। सनकेसिया ससुरा गइलि। ओइजा खतिरा सनकेसिया बड़की संपति रहे। आठ गो देवर रहले सँ आ सब मुस्टंड कुँआर कवनो के बियाह ना होत रहे। अपने में सुन्द उपसुन्द खनिया तिलोतमा खतिरा लड़े लगलन सँ। सनकेसिया से जबर्दस्ती करे लगलन स। अब बेचारी का करो। सब ओकर दोहन करे लगलन स। इहाँ भिखरिया के मेहरारु दूध से कुल्ला करत रहे। हरदम ऊ मेकपे में रहे। ओठरंगना ओकरा ओठ से कबो ना उतरे। सनकेसिया कहे हमरा अइसन के सुनर बा ए जवार में।कबो अपना के माधुरी दीक्षित कहे कबो तनु। हमरा आगे सब हीरोइन फेल बा लोग। सनकेसिया के माई कहे हमरा बेटी खनिया ए जवार में कवन इनर के परी बा रे।कइसन नागिन खनिया हमार बबी चलेले। दहेज के नाम पर दानहा पलंग, कुरसी, टेबुल मिलल रहे। जवना में पाउडर झरत रहे। नइहरे के महा छुछुनदर दिन भर कहीं से आम चोरावे, कहीं से अमरुद, कहीं से बकला, कहीं से नेमुआ, कहीं से कोहड़ा के साग, कहीं से खेसारी के साग। लोग के छरदवाली फान के फूल, फलहरी सब उखाड़त चले। जे बोली ओकरा से झोंटा -झोंटी कर ली।राह में चलत रही। एगो लग्गी ले ले रही। सबके बाग उजारत चली। छानी पर के फलहरी एको ना बाँची ओकरा से। सउसे सउसे केरा के घवद एक क्षण में पाताले ठेका दी। लोग ऐकरा के देखके सहम जाई। आज केकर बगिया उजड़े के बा आ केकर मांग नोचाए के बा-"हाट उजरली बाट उजरली ठूठा कइली पीपर। आवतारी उहे जगदम्बा हाथ में ले ले मूसर।"

एक नंबर के झगड़ाहिन, चोरिन, झूठ बोले में पारंगत आ झूठ बोलके ओहि तरे फहिमा। अपने चोरा के दोसरा के नाम चट से लगा दी। देवरा दुलहवा के सामने सती हो जाई। कान में ओकनी के गलत सलत भरके मतवाला बना दी। जब साझी खा पी के अइहन स त लगिहन स लोग के बे पतित के गारी देबे। एकनी के अस्त्र-सस्त्र गरिए रहे। सनकेसिया जरिए के खेलाड़ी रहे। जग परोजन में केहू के घरे जाय त माटी के दुअछिया चूल्हा में थम्सअप, कोका कोला चोरावे। लिपस्टिक कवनो कवनो सामान चोरा के बैग में हुरले जात रहे। एही सब काम में बड़ी चतुर रहे। गाँव में केहू से ना पटे। ओकर निगार ओकरा बियाह में निकलले सन कवनो जेनरेटर में से तेल निकाल लेलस। अन्हारे में बिआह भइल आ बराती लोग के त एतना आदर भइल कि सभे भूखे पियासे अपना घरे आइल। तिरिया चरितर खूब जानत रहे। दूल्हा देवर सब ओकरा आगे पीछे घुमत रहे। नइहर के घमंडे आन्हर रहे। हम बड़का घर के लइकी हईं। हमरा किहें सब लोग सुनर बा। हीरो-हीरोईन से हमार घर भरल बा। नइहर के चीज ससुरा में ठेकावे आउर ससुरा के नइहर में। कगो जंतर मंतर पहिरा के दुलहा के मति मार लेले रहे। जहाँ पाई देवार में आपन पीठ रगरे लागी। खराब लागी त कही का करीं हगुआता ओहि से रगड़तानीं।

जहिआ कनिया बनके अइलस तहिए से लेकर कहीं में अस्थिरता ना रहे। चौका पर से उठके नया कनिया नाइटी पहिन के घूमे लागलि। जहिया अइलस तहिए चौहदी नापे लगलस। अपना के पढ़ल लिखल शहरुआ देखावे लगलस। जबकि अक्षर चीन्हत रहे अउरु कुछु ना जानत रहे। बस ओकर बुनीयादी गुन रहे कुछु झपट लेबे के, चोरा लेबे के। शीशम के गाछ पर चढ़िके शीशम पांग लेबे। अफलातून दइब के लाल रहे। एकदिन दुपहरिया में सब लोग सुतल रहे। सास ससुर के खटिया में बाँध लिहलस आ सब चीज चोरा के नइहर ठेका देलस आ इहाँ आके बुक्का फाड़के रोये लगलस।अ...ब...का...करी....हो रमऊ...सब ...घरवा के सामानवा.....चोरवा ... ले गइल...आछे चोरऊ ...लोगिन....भोगे ..ना पइबऽ लोग...तहन लोग के ...अँखिया...जांगरा..शीतला ...माई..ले जइहें। अइसही चोरियो क ली आ लोग के सरापे लागी। केहू के आँख, केहू के जांगर, केहू के बेटा,यकेहू के भतार सब शीतला माई के बलि चढ़ी।

सनकेसिया के बेटा भइल त जवार में मिठाई बटाइल..मछरी भात..के भोज क दिन चलल...सब उधारिए ..कबो सधी ..इहे नू सूद लिहन, दिआई..आ गाँव छोड़ के भाग जइहन स..आ फेरु उहाँ करजा में डुबिहन स त गाँवे भगिहन सँ।

अभी भी दबंगई उहे बा भले कुछु भीतर नइखे त का?

◆ ◆ ◆

डॉ सुशीला ओझा
बेतिया,प० चम्पारण,बिहार

भोजपुरी दोहा

सहर गाँव के ओर अब, फइलवले बा पाँव।
देरी नइखे अब बहुत, रही गाँव ना गाँव।।

गाछ बिरिछ बा घट गइल, दूर-दूर ना छाँव।।
ना कोयल कूकी बहुत, ना अँगना में काँव।।

धीरे-धीरे सहर जस, भइल गाँव अब ब्यस्त।
अब गँवई परिवेस के, हो जाई का अस्त।।

गाँवों में अब बा कहाँ, पहिले वाली बात।
मधुरी बोली बोल के, होता भीतर घात।।

गाँवों में कन्वेंट बा, बा दुकान जस मॉल।
गाँवों के अब लोग के, चाहीं मैरिज हॉल।।

नूडल पिज्जा अब उहाँ, पहुँच रहल बा रोज।
केक कटाता खूब अब, रेस्टोरेंट में भोज।।

जींस पैंट के दौर में, बदल गइल परिधान।
सादी में लउके उहों, लिट्टी चोखा नॉन।।

अब बस मिली किताब में, खालिस गँवई बात।
नजर न आवे भोज में, केरा पुरइन पात।।

साँच बात बा गाँव में, होता रोज बिकास।
लेकिन अपनापन घटल, रिस्ता भइल उदास।

साधन बा बढ़िए गइल, कम हो गइल बनाव।
अब गाँवों के लोग में, लउके ढेर तनाव।।

भले गाँव में बिछ गइल, सब सुबिधा के जाल।
बूढ़ पुरनिया के उहों, जिनगी भइल बेहाल।।

पहिले इहवाँ ना रहे, भागदौड़ दिन रात।
केहू के फुर्सत कहाँ, मनभर होखो बात।।

पहिले खनिया कहाँ बा, आपस में सद्भाव।
आय भले बा बढ़ गइल, झलके प्रेम अभाव।।

रक्तचाप मधुमेह अब, गाँवों में बा आम।
गँउवों बाटे हो गइल, चिंता के अब धाम।।

आइल सोंचे के समय, कइसे रहीं निरोग।
खानपान सुभहित करीं, करीं समय से योग।।

◆ ◆ ◆

अखिलेश्वर मिश्र

पश्चिम चम्पारण, बिहार

चटकल दीयना

नेह खेत के माटी से बनल
अजबे चमकत दीयना रहे,
गाँव जवार जे जे भी देखल
अंजोर करी ई सभे कहे ॥

समरपन के पानी से सानल
मेहनत के माटी चिकनाइल,
आखर भाव के घाम तले
अचके दीयना छितराइल ॥

बिन आवाज के दीया फूटल
कतनो जोड़नी नाही जुटल,
आस लावल भइल बेमानी
लागे ओखरी में मुड़ी कुटल ॥

घरहीं के सँइचल दीयना में
नीयत के तेल भरवले रहीं
जाने दीयना काहे भभकल
राय ई मरम कहवाँ कहीं ॥

◆ ◆ ◆

देवेन्द्र कुमार राय
भोजपुर, बिहार

पूष क जाड़ा

पूष क जाड़ा थर-थर कापें-सूरुज चान जुड़ाइल।
चटक अँजोरिया रात सिथाइल-झर-झर ओस नहाइल।
बिना राग क चेंचा गावें-तलही ताल देखाइल,
झुंड-झुंड क बकुला सगरो-खेतवा बा उजिराइल।।

सरसों फुलत बा पीयर झक-झक-तीसी बा सँवराइल।
फुलल सफेदी लाल केरइया-असमानी उतिराइल।
खेत क शोभा भरल कोल्हाड़ी-महिया ऊख छिलाइल,
आलू भूजत चूल्हा झूँकत-कचरस भरल पेराइल।।

छोटहर दिन कोहरा से ढाँपल-सूरुज बा नरमाइल।
लुका-झिपी क खेल बिहाने-भुक से साँझ बुझाइल।
कउड़ा बारि के आड़े बइठीं-फूटत हाड़ जनाइल,
खोटुआ साग बनावें घरनी-सीजन इहे घोंटाइल।।

लगन सुदेवस अगहन बीतल-पाख अन्हरिया आइल।
खिचड़ी तक खरवाँस बा फुरसत-चिउरा धान कूटाइल।
गाँती बन्हले फाँड़ में चिउरा-लरिका खात देखाइल,
गरम गूर आ कचरस बढुआँ,मंठा डालि पिआइल।।

टिकई बो भउजी क ढूँढा- बड़हर देखि पराइल,
भर परात- पलरा सरियवले-रसगर गूर बन्हाइल।
पानी आइल मुंह में देखते-लावा बा लपटाइल,
देसी कवन सुवाद बताईं-चिखलिन तबे लिखाइल।।

पूष महीना मुँह तोप्पा दिन-सिकुरल कुल्ही देखाइल।
गाय लखेद के राजा सभई-छूटल दूध दुहाइल।
गाँव में खोजले गाय मिली ना-ऊहो दिन अब आइल,
पशुपालन से भागत सबहीं-दुअरा छेरि बन्हाइल।।

◆ ◆ ◆

राकेश कुमार पाण्डेय
गाजीपुर,उत्तर प्रदेश।

लिहलऽ घर संसार से मुँहवा मोड़ि

लिहलऽ घर संसार से मुँहवा मोड़ि
ए सुगना गइलऽ पिजरवा के छोड़ि

तोहरे से रहे घर संसार फुलाइल
माई के छतिया में रहलऽ समाइल
गइलऽ माया के बजरिया छोड़ि
ए सुगना गइलऽ पिजरवा के छोड़ि

नान्ह उमरि बाटे पूतरी-पुतरिया के
मंगिया वीरान कइलऽ मेहरिया के
असमय लिहलऽ चदरिया के ओढ़ि
ए सुगना गइलऽ पिजरवा के छोड़ि

एकहे गो बतिया कबो ना भुलाई
कब के केकरा के छोड़ि के जाई
दिहलऽ करेजा सजनिया के कोड़ि
ए सुगना गइलऽ पिजरवा के छोड़ि

काँचे मटिया के मानुस तनवा
साँचे बाटे राम नाम भजनवा
लिहलऽ गणेश से नातवा तोड़ि
ए सुगना गइलऽ पिजरवा के छोड़ि

लिहलऽ घर संसार से मुँहवा मोड़ि
ए सुगना गइलऽ पिजरवा के छोड़ि

◆ ◆ ◆

गणेश नाथ तिवारी"विनायक"
श्रीकरपुर,सिवान

माया बजार में

करेल ऽ गुमान काहें माया बजार में,
उड़ि जाई सब चउआई बयार में ।

झूठ आ फरेब से, किसमत ते चमकी,
मान सम्मान, तुहरे लिलरा पे दमकी।
दाव,पेंच दबि जाई कहियो अड़ार में।
उड़ि जाई सब चउआई बयार में ।
करेल ऽ गुमान काहें ..... ॥

दीन दुखियन के चाहे जेतना सतइबऽ
मेवा मलाई भले रोज तुहूँ खइबऽ।
बिधना के लेख जवन रही लिलार में,
सब कुछ उड़ि जाई, काल के बयारमें ॥
करेलऽ गुमान काहें..... ॥

मतलब के दुनिया लोग तोहें भरमाई,
ए के संहतिया बाटे धरमे निभाई।
मोहन बिचारऽ न फँसऽ मझधार में ॥
उड़ि जाई सब चउआई बयार में ।
करेलऽ गुमान काहें..... ॥

◆ ◆ ◆

मोहन पाण्डेय 'भ्रमर'
हाटा, कुशीनगर

सुन रे चंदा

ए गो बा मासूम चंदा, जिम्मे एकरा काम कतना।
दुनिया भऽ के लोग धइले, ना जानिला नाम कतना।
मर्द-मानुस भा जनाना, चाहेला सँउसे जमाना।
जाति-बंधन से उपर बा, लोग एकर बा दिवाना।

चौदवीं भा ईद होखे, सब जने बस प्रेम देखे।
एहवाती कनिया त एह में, आपना साजन के निरेखे।
उपमा सजनी के सुंदरता, चाँद के बिन अउर कहवाँ!
चाहे कवनो कोना चल जा, साथ सभके चाँद उहवाँ।

बहिनी चंदा के गोहारे, भइया के संदेस दे दऽ।
चाहे कतहूँ भइया रऽहस, उनका के रखिया पऽ भेजऽ।
लइकन सभ के चाँद बाड़े, सबसे नीमन चंदा मामा।
सोने के कटोरवा में, ले के आवस दूध मामा।

माई के काथा में चंदा, बहिनी के राखी में चंदा।
प्रीत के बा डोर चंदा, आँख के बा लोर चंदा।
कबो दिल के दरद बाँटे, बिरही के दिन-रात काटे।
कबो रूसल पिया मनावे, कबो रोष के गड़हा पाटे।

चाँद के गुन का बताईं, कतना अँगुरी पऽ गिनाईं।
चाँद अइसन केहू नइखे, एह से बेसी का देखाईं।

◆ ◆ ◆

गीता चौबे गूँज
राँची झारखंड

जइसे हीरा के चमक के आभास

राम तपेसर अभी धधइले रहन कि फिर केहू छेड़ दिहल, आपन बेटा के काहे नइखऽ कस में राखत कि धूरी में जोर बरले चलऽता, आ कवनो लइका के चलते राह में ढुन देता, का हो तोहरा लघुतम आवेला ?

राम तपेसर अउरी धधा गइलन- " धान बेंच के पढ़ावत हईं धान... आवेला तबे त पूछेला कौनो जना से।"

धनेसर लजा गइलन कि ठीके कहऽताड़न राम तपेसर। गांँवे इसकुल पर डी0 एम0 साहेब आइल रहन। खिचड़ी चोखा के जाँच करे ना, बलुक ई हवाला लेवे कि इसकुल में पढ़ाई होता कि खाली खिचड़िये के पांघत चलता, मास्टर आ लइकन के। डी0 एम0 साहेब जब सवाल कलइन त बहुते जना थर-थर काँपे लगलन- "अब का होई, देवालो - वाल फान के त लम्मी नइखे लिहल जा सकत। केने से आ गइलन ई जहमत।" राम तपेसर के लइका पर एकर कवनो प्रतिकूल प्रभाव ना रहे। आ गुमानो नाम के चीझ ना रहे ओकरा।

डी0 एम0 साहेब कहलीं तब हेड मास्टर साहेब कवनो लइका के बोलाईं जवन कि सोरह आ अड़तालिस के लघुतम बता सके। हेड मास्टर साहेब के लागल कि अब पानी ना रही। खिचड़ी-चोखा त बंदे होई आ अब छव महिना के वेतनो डूबी। सब लइकन के मुँह पर धूर उड़त रहे आ तरे-तरे काँपतो रहसन कि हेड मास्टर साहेब काल्ह बोखार छोड़ा दिहें। छकुनी तूर दिहें। हमनिये से मंगा के हमनिये पर। हमनी के ना पढ़इनीं जा त तुहनी के घरे काहे ना पढ़त रहसन।

एही बीच में राम तपेसर के लइका मुनमुन टपक गइल- "हम बताइब, हम। गोबरे रहबऽ लोग।"

डी0 एम0 साहेब मुस्कात कहलीं - "बता दोगे?"

"जी। बना दिहीं कि उत्तर बता दिहीं। ''डी0 एम0 साहेब ओकर साहस भरल बोली पर चकित रहीं, बाकि संदेह में रहीं कि बोलिए के हमार बोली त नइखे बंद कइल चाहत। उहांँ के कहलीं, "बिना बनाये और उत्तर बता दोगे?"

"त और क्या? घर में कितने बार बना चुके हैं, हम।"

"तो उत्तर ही बताओ, मुझे।"

"अड़तालिस होगा, साहेब।''

सब गुरू लोग के ताली गूंज उठल। कुछ साँच के ताली त कुछ झूठ के ताली, कुछ उत्साह के ताली त कुछ हतोत्साह के ताली। गाँव से आइल कुछ गार्जियन भी अब गर्व अनुभव करत रहन।

'मेधावी बनो, शाबाश मेधावी, तुम्हें आशीर्वाद है मेरा।"

डी0 एम0 साहेब बधाई दिहलीं आ गोदी उठा लिहलीं। जइसे हीरा के चमक के आभास हो जाला।

◆ ◆ ◆

विद्या शंकर विद्यार्थी

रामगढ़, झारखण्ड

दिहे रोटी जन बसिआइन

माई के आरती बाबू के सेवा
सोना असर्फी आ इहे ह मेवा
गुहे आ मूते जे जीवन संवारे
कइसे ऊ बेटा से घरे में हारे

सरवन जोहे कहाँ केहू जाई
माई के बेटा खिआई त खाई
गोड़ के टूटल गरगटी से पूछीं
माई के कइसे बिकाइल छूँछी

बाली बिकाइल टीका धराइल
गगरा बिकाइल डगरा धराइल
लागल जार आइल हलकानी
माई के सिवा दोसर के जानी

सुखल हलफ से माई डेराइल
बबुआ रे एही में कुल्ही धराइल
सोखी ना जानीं सोखा ना जानीं
सरल हृदय हईं धोखा ना जानीं

तोरा के लेदरा बिछौलीं रे बबुआ
अपना सुते खाती चुनलीं रे भूँआ
बाबुओ ओरचना टंगाई के रहलन
लेवा में गोड़तारी समाई के रहलन

खेलस जब तें तऽ धरावस शीशी
तोरा जीता के अपने रहस फिसी
अंगना आ दुअरा तूँ चलले पैंढ़ले
गोदी प चढ़ले आ कान्ही प बढ़ले

माई के बबुआ रे तोरा से आस बा
दुनिया के रहन से जिया उदास बा
दिहे रोटी बाकि जन बसिआइन
आ माई जनिहे, जन पितिआइन

जिनिगी में अउरी का होई रे फैदा
नून दिहे माड़ो में जवन होई कैदा
तोसक तकिया दिहे जन गलइचा
हरियर सुखइहे जन कबो बगइचा

माई के आरती बाबू के सेवा
सोना असर्फी आ इहे ह मेवा।

◆ ◆ ◆

विद्या शंकर विद्यार्थी

रामगढ़, झारखण्ड

तीन गजल

1.
आग अब ना कहाँ धइल बाटे
लाग में सब इहाँ भइल बाटे

ढाह के चल गइल महल केहू
लोग बाटे चिहा गइल बाटे

खेल में के कही जरा दिहलीं
खोंस के तीर जे गइल बाटे

आदमी बा जहाँ मइल लेके
घात ई जान के कइल बाटे

राख में पाल धुआँ राखल
आग तवने जरा गइल बाटे।

2.
लाज के बात बा कहीं कइसे
सांस के साथ बा सहीं कइसे

रोशनी बांँट के करीं चरचा
दूध में कांच बा महीं कइसे

तूर के धर दिही सपना केहू
धार के बात बा चलीं कइसे

कांट के गाँव में कलह बाटे
पेच के राह में चलीं कइसे

आदमी बात के भुला देला
चेत के छांव में चलीं कइसे।

3.
नफरत मिटा के जागीं जा
कुछ बन सके तऽ पागीं जा

आपस के बल कामे आवेला
तोहमत हटा के लागीं जा

सटकल इहांँ केहू नइखे
सुन गुन पटा के लांघी जा

जिनिगी दबा के जन जीहीं
मुहब्बत जुटा के जागीं जा।

लागल नजर के चानी बा
पेवन जुटा के तांगीं जा।

◆ ◆ ◆

विद्या शंकर विद्यार्थी

रामगढ़, झारखण्ड

सर्प के फन में कबो ना चीनी बा

सर्प के फन में कबो ना चीनी बा
लोग के बोली में जस महीनी बा

चेत के रहल वाजिब होला वोसे
दोस्ती शत्रु से जवन कि दिनी बा

दागा देला हरदम भरोसा में लेके
नकली बात ना ई तऽ जमीनी बा

पार के घात कइसे रोकल जाई
अभी कृस्नो के हाथे ना घिरनी बा।

◆ ◆ ◆

विद्या शंकर विद्यार्थी
रामगढ़, झारखण्ड

का इहे दुनियां ह ?

हम गावत रहनीं उनुके गीत

जे हमार कंठ दबावत रहे।

हम खात रहनीं किरिया

जे हमरा के जहर पिआवत रहे,

कइनीं अतना विश्वास तबो

हमरा के हमरे से छोड़ावत रहे।

जिनगी में हरदम मिलत रहल घात।

तबो विश्वास के छोड़नीं ना साथ।

होश जब आइल तब तक देर भइल।

बिखरल जिनगी भइल बरिस बात।

◆ ◆ ◆

माया चौबे

तिनसुकिया

फूलमतिया

फूलमतिया अपनी गाँव के एके नाउन ठकुराइन ह। गाँव भर में जेकरी घरे जचगी होला ओकरी घरे जच्चा-बच्चा के तेल बुकुआ ऊहे करेले। एतने ले ना, आस-पास के गाँवन में भी ऊ बोलावल जाले। रात-बेरात, दिन-दुपहरिया कहईं बोलावल जा, चल देले। ओकर मरद हजामत बनावेला। दूनू बेकति मिल जुल के शुभ-अशुभ सगरो रीति रिवाज संपन्न करावेला।

अबहिन मुर्गा ना बोलले रहे बाकिर फूलमतिया के आँखि खुल गइल रहे। ऊ हहुआ के उठलि आ जा के अपनी पतोहि के केवाड़ी खटखटावे लागलि- "हे, उठू रे दुलहिनिया! लवटि के आ के फेरु से सुत्ति रहिहे। ना त लवटे वाला लोग के तांता लागि जाई त कहीं सुबहित जगहि ना मिली।" कहि के ऊ खिरकी ओर से डिब्बा उठा ले आइल आ कल से पानी भर के देखलस त अबहिन केवाड़ी ना खुलल रहे। अबकी बेर जा के ऊ सीकड़ बजा दिहलस। तनिये देर में केवाड़ी खोल के सकुचायिल दुलहिनिया बहरा निकल आइल।

"जल्दी चला, ना त अबेर हो जाई। नया-नोहर दुलहिन के जल्दी लवटि आवे के चाहीं।" कहि के हाथे के डिब्बा पतोहि के थमा के अपना दूसर डिब्बा उठा के भरलस, आ अँगना में ताखा पर धयिल टार्च उठा के बहरा असोरा में आ गइल।

"सीकड़ी चढ़ा दे, ना त कुक्कुर बिलार ढुक के उतपात मचा दिहेंसन।" मुख्य दुआरि पर टार्च देखावत ऊ कहलस। लोटा नीचे ध के पतोहि किसोरिया केवाड़ी बंद क के सीकड़ी चढ़वलस आ सासु का पाछे चल दिहलस। गाँव पार क के टार्च के सहारे रास्ता देखत देखावत दूनू बगइचा के दोसरका छोर की ओर चल दिहलीसन।

गाँव में जब केहू के मरनी हो जा, त जेकरा बेंवत रहे ऊ नदी किनारे लेजा, आ जेकरा बेंवत ना रहे ऊ बगइचा के पार ले जा के फूँकि दे। एहिसे बगइचा पार जल्दी केहू बइठे ना जाउ। दूसर बाति ई कि तनी लामे केहू जाइल ना चाहे। एसे ओने बइठे खातिर साफ़-सुथरा जगहि मिल जा।

बगइचा में सूखल पतई खानत टार्च के सहारे दूनू सास- पतोह ओ छोर पर पहुँच गइल जहाँ से रहरि आ ऊँखि के खेत शुरू होत रहे। ई खेत पार क जा, त दूसरे गाँव के सीमा प्रारम्भ हो जात रहे।

फूलमतिया साफ़ जगहि देखि के पतोहि के एक ओर बइठा के अपना रहरी की खेत के मेड ध के तनी लामे जा के बयिठि गइल। अबहिन ओकरी बइठले तनिए देर भइल रहे कि धप्प-धप्प के आवाज सुनाई दीहल। ऊ सोचलस कि केहू पानी खोलत होई। बाकिर लगातार आवत आवाज से ओकर कान खड़ा हो गइल।

"एतना देर त ना लागेला पानी खोलला में! नाली त पहिले से बनल बा; मेढ़ी काट के माटी हटावते पानी सरसरा के बहि जाला। ए दादा! जे केहू पानी नइखे खोलत त ए सुनसान में अउरी के हो सकेला!" सोचि के ओकर जीउ तनी डेराइल। बाकिर ई डर भूत परेत के ना रहे। अकेल रहित त कवनो डर ना रहे बाकिर साथे जवान जहान पतोहि रहे। ओकर जीउ धक् धक् करे लागल। ऊ पतोहिया की ओर देखलस, त करेजा कूदि के कंठ में अटक गइल। जहाँ ओकरा के बइठा आइल रहे, ओहिजा ऊ ना रहे। उठि के ढहत धिमिलात भागलि।

"दुलहिन, ए दुलहिनिया !" धीरे-धीरे बोलवत जात रहे। बाकिर ओने से कवनो जबाब ना मिलत रहे। अबे कुछू दिन पहिलवे त रमेसरा की पतोहि की साथे...! आ किसना के गवनहरी बेटी...! पोखरा में कूदि के आपन परान दे दिहलस। बेचारी कवन मुँह ले के ससुरा जाइत ! हे भगवान जी! रछा करब...! सोचत सोचत बुझाइल की अबे ओकरा भोंकार छूटि जाई। तबे पाछे से आवाज आइल "का ह अम्मा जी!"

फूलमतिया चिहा गइल। पतोहि के बोली सुनि के ओकर जीउ में जीउ आइल। लाज के मारे पतोहिया तनी पेड़ की आड़ में घुसुक गइल रहे।

"कुच्छु ना, जा बइठा।" ऊ पतोहि के टार्च थमा दिहलस आ जा के अपनी जगहि पर बइठी गइल। ऊ अपनी मन के पाप पतोहि से ना बतवलस कि ऊहो डेरा जाई। अइसन ना रहे कि किसोरिया ना सुनत रहे, बाकिर ऊ ढेर ध्यान ना

दिहलस। सोचलस कि केहू आपन खेत कोड़त होई।

रहरी की खेते की दहिने थोड़ी दूर पर एगो पोखरा रहे। ओहिजा एगो पुरान पकड़ी आ पीपर के पेड़ रहे। आवाज ओनहिए से आवत रहे। ऊ आसमान की ओर देखलस। बुझात रहे कि आजु ऊ तनी जल्दिए निकलि आइल रहे। पतोहिया की ओर तकलस, ऊ अबहिन ले पेड़ की आड़ से निकलल ना रहे। फूलमतिया सोचत रहे कि "ऊ झुट्ठे डेरा गइल। अनेरे अवाँट-बवाँट सोचल करेले।" तब्बे फेरू से आवाज आ गइल, "धप्प धप्प धप्प !

"ऊ महटिया गइल। होई केहू ओकरा का करे के बा! बाकिर का जाने काहें लगातार धप्प-धप्प सुनि के ऊ बेचैन होखे लागल। अब ओकरा रुकल ना गइल। पानी गिरा के उठलि आ बिना कुच्छु आगा पीछा सोचले बड़हन डेग उठावत चल दिहलस। अन्हारे में आँखि गड़वले जब पोखरा के नगीच पहुँचलस त ओकरा दूगो फरछाहीं देखा गइल। ऊ तनी पेड़े की आड़ में हो गइल। एगो फरछहियाँ माटी खोदत रहे आ एगो ठाड़ रहे। ओकर करेजा कूदे लागल। बुझात रहे कि ओकनियों के कुच्छु आहट मिल गइल रहे। कोड़े वाली फरछाहीं रुकि के एने ओने देखे लागल। जब ओकरा बुझा गइल कि केहू नइखे त फेरू से खोदे लागल- 'धप्प-धप्प- धप्प।'

"एहिजा त नान्ह लइकन के गाड़ल जाला। बाकिर ए बेरा ! हे भगवान जी !" फूलमतिया के छत्तीस बुद्धि दउड़े लागल। ऊ उलटे गोड़ भागल। देखलस त किसोरिया ठाड़ रहे।

"जल्दी चलु एहिजा से।" कहि के ओकरी हाथे से टार्च झपट के आगे-आगे चल दिहलस। अबहिन चल्खुर ना भइल रहे। घरे पहुँच के ऊ झट से हाथ गोड़ धोवलस आ पतोहि से दुआरि बंद करे के कहि के ओसारा के कोने में धइल कुदारी उठा के तेजी से बगयिचा लाँघत-फाँदत पोखरा ओर चल दिहलस। मन में हजार गो शंका उठत रहे।

"जरूर ई लोग लइका गाड़े आइल होई। जरूर कवनों के कोखि से धिया जनम लिहले होई आ चाहें कवनों बिना बिअहल बेटी के कोखि फूटल होई। तब्बे ए अन्हारे में ओकरी आँखि पर ढेला धरे आ गइल लोग, ना त उजियार भइला के राह काहें ना देखल लोग!"

मनेमन सोचत ऊ पोखरा पर पहुँच गइल। ओकरी माथ पर पसीना के धार फूटि गइल रहे। भोरहर के ठंडा बेयारि ले ओकरी माथ के पसीना सोखला में असमर्थ रहे। पोखरा पर जगहि-जगहि जामल मूँज हवा से लहरात रहे। पकड़ी आ पीपर जइसे एक-दोसरे के काने में कुच्छु खुसफुसात रहे। पोखरा शांत रहे। ऊ ठाड़ हो के चारू ओर देखलस, केहू ना रहे। अब ऊ टार्च बरलस आ धरती पर कुच्छु जोहे लागल। कुच्छु देर खोजला के बाद एक जगहि पर ओकर टार्च से निकलल प्रकाश के गोला ठहर गइल आ ओकर करेजा लोहारे की धोंकनी तरे चले लागल।

जगहि चीन्हि के बरले टार्च धरती पर ध दिहलस फूलमतिया आ जल्दी-जल्दी कुदारी से माटी हटावे लागल। माटी नरम रहे, आसानी से हटत जात रहे। तनी गहिरे माटी निकल गइल त ऊ टार्च उठा के ओमे देखलस आ बइठि के अब हाथे से माटी निकाले लागल। कुछू देर बादे जवन देखाइल कि देखि के ओकरी मुँहे चीख निकल गइल। जल्दी से मटिहा हाथ से आपन मुँह दबा लिहलस। देहि काँपि गइल। बुझाइल कि अबे घुमटा खा के गिर जाई। कुच्छु देर बइठले रहि गइल फूलमतिया। बाकिर जल्दिए अपना के सम्हार लिहलस।

ओकर सुबहा सहि निकलल रहे। लाल रंग के कपड़ा में लपेटल नान्हबुटी के लइका जइसे कहँरत रहे। मानुस गंध पा के ओकरी ऊपर केंचुआ, गोंजर अ नान्ह-नान्ह के केतना कीरा रेंगे लागल रहले सन। ऊ हबर-हबर ओकरी ऊपर के मटिहा कीरा-मकोड़ा हटा के लइका के निकाल लिहलस। केतना लइकन के तेल बुकुआ मलेले ऊ बाकिर आजु ए बचवा के उठावत घरी ओकर हाथ काँपत रहे। जीउ कचोटत रहे। लइका हाथ गोड़ चला के जीवन आ मृत्यु से संघर्ष करत रहे। ओकर साँस तेज-तेज चलत रहे| तनिएसा देर हो गइल रहत त का जाने का भइल रहत। लाल कपड़ा भींजल रहे आ ओपर छोट-छोट कीरा सटल रहलेंसन। टार्च के उजियार में ऊ लइका के देहि पर से कपड़ा हटा के ओही गड़हा में फेंकि दिहलस आ अपनी साड़ी की चुन्नट से ओकरा के नीके झारे-पोंछे लागल बाकिर एकदम से ओकरा के एक साथे कइगो बिच्छी के डंक लागल। ओकरी गोडे के नीचे से धरती खिसक गइल, आ जइसे मूड़ी पर आसमान फाटि परल।

"त एहिसे ए नान्ह के जान लेबे आइल रहे लोग! ओह्ह! बाकिर अब हम का करीं? का हमहूँ ए जीव के एही गड़हा में तोपि दीं ? ना ना ! हे भगवान जी ! अइसन पाप के बाति हमरी मन में उपज गइल ! ई मन बड़ा पापी ह। कुच्छु सोचे लागेला। रउरा हमरा के खींचि के एहिजा ए जीव के बचावे खातिर ले अइनी हँ, त जरूर कुछु सोचले होखब ! बाकिर एके हम घरे ले जाईं त हमार खैर नइखे। मरद जिए ना दी कि राति बेराति ते पोखरा की ओर काहें गइले! जे ऊ लोग तोरा के देखि लीत, त तोरो के मुआ के गाड़ि दिहले रहित। हे भगवान् जी! अब आपे रास्ता देखाईं।" आसमान की ओर

देखि के ऊ बुद्बुदाइल।

तबे ओकरी गोदी में लइका कुनमुनायिल। फूलमतिया चिहुकि गइल। ओकर ध्यान नान्ह के जीउ से भटकि गइल रहे। अब हाली-हाली ऊ बचवा के थपकावे लागल। ओकर फूल जइसन मुलायम तलवा रगरे लागल। जब अउरी कुच्छु ना बुझाइल त जल्दी से अपनी अँचरा में लपेट के करेजा से सटा लिहलस ताकि ओकरी देहि में गरमी पहुँचे।
अब ओकरी आगे भारी समस्या ठाड़ हो गइल रहे। "ई लइका के कहाँ ले जाईं ? केकरा के दीं! आ के ली ए बचवा के? अबे कुच्छु देर में अँजोर हो जाई आ लइका के जान फेरु से सासत में पड़ि जाई। का करीं, का ना, सोचते रहे कि तबे का जाने का मन में आइल कि ऊ लइका लिहले गाँव की ओर भागलि।

भूधर राय गाँव के प्रतिष्ठित आ सम्भ्रान्त व्यक्ति हउवन। पुरुखा लोग से उनके भारी संपत्ति बिरासत में मिलल रहे। आजु उनकर पुश्तैनी हवेली के सजावट देखते बनत रहे। खूब चहल-पहल भइल रहे। तरह-तरह के पकवान बनत रहे। साँझ के जलसा के आयोजन रहे। बड़-बड़ अधिकारी लोग आ गाँव गिराँव के प्रतिष्ठित लोगन के बोलावल गइल रहे। भूधर राय के पत्नी; राजवंत, के ख़ुशी के ठेकान ना रहे। ऊ घूम-घूम के सगरो व्यवस्था देखत रहली। उनका तनी थकाई बुझाइल त अपनी कक्ष में आ के पलंग पर ढहि गइली। महीना भर से आजु के दिन खातिर तइयारी होत रहे। काम त सब नोकर चाकर करत रहे लोग बाकिर देख भाल करत-करत उनके खोइया छूटि गइल रहे। पलंग पर पीठ धइली त आँखि मुना गइल, आ आँखि मुनाते मन अतीत के ओ समय में पहुँचि गइल जहाँ आजु की ख़ुशी के बीया अँखुआइल रहे।

उनका मन परल, जब फूलमतिया हाँफ़त उनकी लगे आइल रहे। फूलमतिया उनके ख़ास परजा रहे। ऊ रोज घर के कार का साथे उनहूँ के सेवा-अरदास करे। उनके बाल सँवारे। कपड़ा धोवे-सुखावे, गोड़ दबावे। ऊ जवन कहें, ऊ करे। का मजाल कि कबो ओकरी मुँहे ना निकल जाउ। ऊहो ओकरा के नेग निछावर से निहाल कइले रहें।
भूधर राय लगे अपार धन संपत्ति रहे बाकिर एक उमिर भइला के बादो ए संपत्ति के भोगे वाला केहू ना रहे। माने राजवंत आ भूधर राय निसंतान रहे लोग। कुच्छु उठा ना धइले रहलें भूधर राय। दवा बीरो से ले के मन्दिर-मस्जिद सब कइले रहलें। अब हारि-पाछि के बइठ गइल रहलें। राजवंत उनसे दूसर बिआह करे खातिर खूब दबाव बनवली। भूधर राय तइयारो हो गइलें बाकिर अपनी एगो डाक्टर मित्र भुवनेश्वर पाँड़े की कहला पर आपन जाँच करवलें त उनहीं में दोस निकर आइल। अब त दूसरे बियाह के कवनों गुंजाइसे ना बचल बाकिर ई बाति ऊ राजवंत से छिपा गइलें। कहि दिहलें कि राउर जगहि केहू दूसर ना ले सकेला।

बाकिर दुःख आ क्षोभ से ऊ आपन मन पूजा पाठ, दान पुन, धरम करम के कार में लगा लिहलें। तब्बे एक दिन भिन्सारे उनके कक्ष के केवाडि खड़कल। जा के देखलें त हाँफ़त-डाँफत नाउन ठकुराइन फूलमतिया अँचरा में कुछ लुकवले ठाड़ रहे। एक निगाह उनपर डाल के ऊ भागल राजवंत के लगे पहुँचि गइल। आ उनके देखते अपनी अँचरा में लुकवावल बचवा के उनकी फाँड़े में डाल दिहलस।

एकदम से अपनी आगे नान्ह के जीउ देखि के राजवंत चिहुकि गइली। उनके आँखि निकलि आइल। ईहे हालि भूधर राय के रहे।
"ई का ह हो! ई का उठा ले अइलू ! आ कहँवा से? केकर ह?" एक साथे कई गो प्रश्न क दिहली राजवंत। फूलमतिया ठाड़ हो के हाँफ़त रहे। तनी साँस में साँस आइल त ऊ सब बाति बता दिहलस।
"ई सब त ठीक बा, बाकिर हम का करब ए बचवा के ? ना एने में, ना ओने में!" ऊ आँख निकाल के कहली।
त का करीं मलकिन, कहाँ फेंकि आयीं हम एकरा के? रउरे बतायीं।"

"तूँ त हमके भारी धरम संकट में डाल दिहलू ए फूलमती ?"

राजवंत के लिलार पर सिकुड़ा पड़ गइल। ऊ भूधर राय के ओर देखली। ऊ अबहिन ले मूक बधिर नई ठाड़ रहलें। बाकिर अब उनके दिमाग तेजी से काम करत रहे।
"ठीक बा, बाकिर ई जानि ले कि ई बाति हम तीनू के अलावा चउथा केहू ना जाने पावे।" मनेमन कुच्छु सोचि के ऊ फूलमतिया से कहलें।

"मालिक, जीयत भर ई बाति हमरी जबान पर कबो ना आई, आ जे कबो आ जाउ त रउआ हमार घेंटु ममोर देब।"
"त अब जो तें। आ आपन बाति इयाद रखिहे।" ऊ कड़ेरे कहलें।
फूलमतिया हाथ जोड़ लिहलस। "मालिक, रउआ हमरी ऊपर बड़ा उपकार कइनी।"
"ठीक बा, जो अब एहिजा से।"
फूलमतिया चल गइल। घटनाक्रम एतना तेजी से घाटल कि केहू जान ना पावल कि एकदम से ई का हो गइल!
"ई रउआ का कइनी जी...! अब का होई ?" राजवंत के चेहरा सफ़ेद हो गइल रहे।

"जवन ईश्वर के मर्जी बाकिर अब्बे त इनका के डाक्टर की लगे ले जाए के पड़ी।" कहि के ऊ बचवा की माथे पर हाथ लगवलें। लइका के देहि कुच्छु ढेर गरमा गइल रहे। ऊ हाल्दे कपड़ा पहिनलें रुपया निकाल के धइलें आ जीप निकाल के राजवंत के बइठा लिहलें। राजवंत साफ़ तउली में लइका के लपेट के अपनी छाती से लगवले रहली। उनकी मन में कुच्छु असमंजस के भाव रहे बाकिर कहीं न कहीं भीतर एगो वात्सल्य के सोत फूटि गइल रहे।

दुसरे दिने फुलामिता हवेली गइल त पता चलल कि एकाएक मलिकायिन के तबीयत बिगड़ गइल त उनका के देखावे खातिर मालिक गोरखपुर गइल बानी, साँझि ले आ जाइब, बाकिर देखते देखत महीना बीति गइल। पता चलल कि मलिकाइन के बेमारी एहिजा के मान के नइखे। मालिक उनका के ले के दिल्ली चलि गइल बानी। आ फेरू कुछ दिन बाद खबर आइल कि मलिकइन की कोखि में बीया परि गइल बा। अब उहाँ के दिल्ली में कवनो बड़का अस्पताल में भरती बानी।
अब एहिजा के जिम्मेवारी मुनीम जी के माथे बा। ओकरी मन के शान्ति मिलल। अब ओ जीव के रक्षा भ गइल रहे। सोचि के ऊ निश्चिन्त हो गइल। बाकिर जब-जब ओ राति के घटना मन परे, तब-तब ओकर हियरा काँपि जा। ऊ बचवा केकर हो सकेला? ए गाँव में केहू के घरे लइका होखे, आ ओकरा पता ना चले, ई कइसे हो सकेला! हो सकेला कि आसपास के कवनो गाँव के होखे बाकिर ओनहियो त ऊ बोलावल जाले। सोची-सोचि ओकर कपार बत्थे लागे बाकिर कवनो जवाब ना मिले। सूतत जागत ईहे बिचार ओकरा के खइले रहे। समय बीतत पते ना चलल आ गाँव में खबर आइल कि बड़ी दवा-बीरो से मलिकाइन बेटी जनमवले बाड़ी। हवेली की साथे सगरो गाँव में खुसहाली छा गइल।
ओने लइकी धीरे-धीरे बड़ होत रहे। राजवंत बड़ी दुलार से ओकर नाँव भूमिजा धइली बाकिर अब भूधर राय के चिंता सतावत रहे कि आगे का होई! बेटी के ले के गाँवे कइसे जाइल जाई। लोग सच्चाई जानि गइल त का होई! ए बच्ची के भविष्य के का होई! ई सब सोचि-सोचि दूनू परानी के नीन उड़ल रहे।
"हम का करीं! कुछ बुझात नइखे।" एक दिने अपनी डाक्टर मित्र पाँड़े से कहलें भूधर राय। डाक्टर साहेब ओने से बड़ी देर ले कुछ बतिअवलें। भूधर राय चुपचाप सुनलें आ तनी चिंतित दिखलें।
"एकरी अलावा अउरी कवनों रस्ता नइखे राय साहेब।" बाकिर एकरी बाद ए बचवा के जिनगी बदल जाई।"
"ई संभव बा? कवनो परेशानी त ना बढ़ी ? ससंकित रहलें भूधर राय।
"ना महाराज कवनो परेशानी ना होई। रउरा एकदम निश्चिन्त हो जाईं। अबहिन बहुत समय बा।"
भूधर राय निश्चिन्त हो गइलन। बकिर राजवंत गाँवे आवे खातिर तैयार ना भइली। उनकर कहलो सही रहे कि गाँव में सभे जानी, त हँसाई होई। अइसन ना रहे कि भूधर राय ई बाति ना बूझत रहलें। ऊ गाँव जा-आवें बाकिर राजवंत ना गइली।
पइसा में बड़ा बल होला। जहाँ पइसा होला उहाँ सब संभव हो जाला। भूमिजा तनी बड़ भयिली त उनके स्कूल में नाँव लिखा गइल। समय बीतल आ भूमिजा बरहँवीं पास क लिहली।
अब ऊ समय आ गइल रहे जवना खातिर भूधर राय राजवंत के ले के दिल्ली रुकल रहलें।

"रउरो के साथे चले के पड़ी डाक्टर साहेब।" भूधर राय डाक्टर भुवनेश्वर पाँडे से फोन पर बतिया के कहलें।
"एहिजा के देखी? रउआ चलीं, हम समय पर आ जायिब।" डाक्टर साहेब के बाति सुन के ऊ निश्चिन्त हो गइलन। आ उनकी कहला पर राजवंत आ भूमिजा के ले के इलाज खातिर ऊ बिदेश चल गइलन।
केहू के कनोकान पता ना चले दिहलन कि भूमिजा कवनो सामान्य बच्ची ना रहली। तमाम टेस्ट, जाँच पड़ताल के बाद ऑपरेशन भइल। पइसा पानी की तरे बहि गइल बाकिर भूमिजा पूरी तरह से ठीक हो गइली। बाद में कुच्छु दिन ओहिजा रुकि के भूमिजा के उच्च शिक्षा के बेवस्था क के दूनू मर्द मेहरारू लोग देश लवटि आइल।

"चलीं मलकिन, बीबी जी के मोटर आ गइल। जल्दी चलीं।" एकदम से किसोरिया के बोली सुनि के राजवंत चिहुकि के उठली आ मुख्य द्वार की ओर भगली। गाड़ी से पिता की साथे बेटी के उतरत देखि के उनके आँखि छलक गइल। आजु बरीसन बाद बेटी के देखत रहली। भूमिजा के ले के भूधर राय उनके आगे ठाड़ हो गइल रहलें। एक टक बेटी के निहारते रहि गइली। कइसन गोर-पियर देहि, पातर-पातर ओठ, बड़की-बड़की आँखिन आ सुतवा नाक! उनके बुझाते ना रहे कि भूमिजा उनकी कोखि के जनमल ना हई।
"का देखतानी ! इ रउरे बेटी हई।" सुनि के चिहुकि गइली राजवंत। भूमिजो महतारी के एतना दिन पर देखत रहली। दूनू महतारी बेटी बेल नाई लपट गइल लोग। ममता आ नेह के गगरी छलके लागल।
बीतल पचीस छब्बीस बरीस में भूधर राय अपनी गाँव में खूब काम कइलें। अपनी आस पास के खेत में कई गो पोखरा खोदवा दिहलें। खेत के मेडे से ले के सड़क किनारे ले जहाँ-जहाँ संभव रहे पेड़ लगवा दिहलें। ओ समय सरकारी

सौचालय के सुबिधा ना रहे। भूधर राय सबसे बड़का काम कइलें कि गाँव के दूनू टोला में सार्वजनिक सौचालय बनवा दिहलें। जेसे केहू की बेटी-पतोह के राति-बेराति बहरा बइठे खातिर ना जाए के पड़े। भाग दौड़ क के बगीचा में प्राइमरी स्कूल खोलवा दिहले रहलें। अब गाँव के छोट-छोट लइकन के बस्ता लादि के दूसरे गाँवे पढ़े ना जाये के पड़े। जे लामें की डरे आपन छोटहन लइका पढ़े ना भेजत रहे, ओहू के लइका पढ़े जाए लागल रहे। समय-समय पर गाँवभर के लोग की साथे बइठकी क के साफ़-सफाई खातिर जागरूक करत रहलें। उनकी प्रयास से गाँव में इण्टर कालेज के बाद अब डिगिरी कॉलेज के नेइ खोदात रहे। उनहीं की अथक परिश्रम आ प्रयास से उनके गाँव के नाँव आदर्श गाँव की सूची में लिखा गइल रहे।

फुलामतियो के उमर हो गइल रहे। बुढ़ापा के बेमारी की साथे ओकर आधा अंग सुन्न हो गइल रहे। सही इलाज के अभाव में ऊ खटिया ध लिहले रहे। ओकर पतोहि अब ओकर सब कार करत रहे। राजवंत फूलमतिया के हालचाल किसोरिया से पा जात रहली। कबो-कबो ओकरा के देखहूँ चलि जात रहली। जवन हो सकत रहे ऊ मदद करत रहली। बाकिर ओकरी बेरामी में कवनो फायदा ना रहे।

एकदम से गाड़ी रुकला के आवाज सुनि के फुलमतिया दुआरी की ओर देखे लागल। राजवंत ओकरी कोठरी में आ के ठाड़ हो गइली। बाकिर ऊ अकेल ना रहली।
"मलिकाइन की साथे ई के ह ?" सोचत रहे फूलमतिया।
किसोरिया झट दे छोट-छोट दू गो चउकी ले आ के बइठे खातिर ध दिहलस।
"देखा त के आइल बा तोहके देखे खातिर?" राजवंत मुस्का के फूलमतिया से कहली।

फूलमतिया भूमिजा के ऊपर से ले के नीचे ले दुकुर-टुकुर निहारत रहे। भूमिजा ओकरा के एंगा देखत देखि के मुस्कियात रहली। काहें से महतारी बतवले रहली कि उनही के हाथे ओकर जनम भइल रहे।
"ना चिन्हलू ? हमार बेटी, तूहीं न जन्म की बाद सबसे पहिले हाथे में उठवले रहलू इनके। भुला गइलू?" कहत कहत उनके चेहरा दीपदीपा उठल रहे।
सुनि के फुलमतिया की आँखी से लोर बहे लागल। ऊ कुच्छु बोले के प्रयास करत रहे बाकिर ओकर बोली साफ़ ना निकलत रहे। ओकरी आँखी के आगे बरीसन पहिले के घटना घूमत रहे।

ओकर गोंगिआयिल सुनि के राजवंत बुझि गइली कि ऊ का कहल चाहतिया।
"ऊहे हई, देखा ठीक से। अब एकदम तन्दुरुस्त बाड़ी। जवन बेमारी रहे ऊ ठीक हो गइल। तूँ जल्दी ठीक हो जा, काहें से कि इनकी बिआहे में हरदी बुकुआ तोहरे के लगावे के बा। खैर छोड़ा ई कुल बाति, अब ई बड़हन डाक्टर हो गइल बाड़ी आ तोहके देखे खातिर आइल बाड़ी।"
सुनि के अचम्भा से फूलमतिया के आँखि फाटि गइल रहे। ऊ भूमिजा के मुँह ताकत रहे। ओकरी मन में हजार-हजार प्रश्न उठत रहे आ भूमिजा बड़ी तन्मयता से ओकर परीक्षण करत रहली।
"इनको इलाज़ के लिए लखनऊ ले जाना होगा।" ओकर हाथ-गोड खूब हिला डुला, ठोक-पीट के देखला के बाद ऊ महतारी से कहली।
सुनते फूलमतिया आपन दुसरका सुबहित हाथ हिला के कहीं जाए से मना क दिहलस।
"आप वहाँ से पूरी तरह ठीक होकर वापस आएँगीं। भरोसा रखिये मुझपर। यहाँ इलाज की सुविधा नहीं है। इसलिए आपको जाना ही पड़ेगा।" ओकर बाति बूझि के भूमिजा कहली। राजवंतो ओकरा के देखि के मूड़ी हिला के हामी भरली।

"पापा ! आप से एक बात कहना चाहती हूँ।" भूधर राय के साथे डाइनिग टेबल पर खाए बइठल भूमिजा कहली।
"तो इसमें इतना सोचने की क्या बात है? बोलो।"
"पापा...! आपने इस गाँव के लिए क्या कुछ नहीं किया है! मेरी इच्छा है कि यहाँ पर एक हस्पताल भी हो, जहाँ लोगों को समय पर इलाज मिल सके। मैं देख रही हूँ कि यहाँ दूर-दूर तक मेडिकल की सुविधा नहीं है।"
"ये बात मेरे मन में भी आई थी बेटा, पर हस्पताल कौन संभालेगा! यही सोच कर चुप रह गया।"
"मैं संभालूँगी पापा! एक जन्म माँ ने दिया और उसे सँवार कर आपने दूसरा, नहीं तो मेरे जैसे लोगों का जीवन कैसा है! मुझसे छुपा नहीं है। मैं काँप जाती हूँ सोच कर कि मेरा जन्म कहीं और हुआ होता तो आज मैं क्या कर रही होती! अब यहीं रह कर लोगों की सेवा करना चाहती हूँ पापा।"
कहते कहत भूमिज़ा के लोर बहि गइल।
"तुमने तो मेरे दिल की बात कह दी बेटी! मैं भी यही चाहता था; पर तुमसे कह नहीं पा रहा था कि कहीं तुम ये ना सोचो कि पापा तुम्हें गाँव में रोक कर तुम्हारी उन्नति में बाधक बन रहे हैं।" कहत कहत ऊठि के बेटी के माथ चूमि लिहलें भूधर राय। राजवंतो अँचरा से आपन आँखि पोछे लगली।

अगिलहीं दिने फूलमतिया के ले के एगो एम्बुलेंस लखनऊ जाए वाली सड़क पर दउड़ल जात रहे। बाकिर गाडियों से तेज फूलमतिया के मन दउड़त रहे।

"ओ दिने जवन नान्ह बुदी बचवा के मलकिन की अँचरा में डलले रहनीं, ऊ त...! ओकर बेरामी कइसे ठीक हो गइल...! ओदिने कहीं हमार आँखि त धोखा ना खा गइल रहे! ना ना, बचवा के बड़ी साफ़ देखले रहनी हम। ऊ बचवा त 'खोजवा' रहे। आ खोजवा के बिआह...! कइसे...! हे भगवान जी...! आपन लीला आपे जानीं। रउरा त पथरे में जीउ डाल देनीं त ई कवन बड़हन कार बा!" एगो लमहर साँस ले के ऊ लगे बयिठल अपनी पतोहि के देखे लागल।

ऊ तनिको का बुझि पवलस कि ई चमत्कार भगवान् जी के ना, मेडिकल साइंस के ह। दिमागी कसरत के बाद फूलमतिया के अँखि भरमत रहे आ गाड़ी भागल जात रहे।

◆ ◆ ◆

मीनाधर पाठक

कराटे

साइकिल के घण्टी बजावत रमाउती स्कूल से चलल आवत रहली। साँझ भ गइल रहे आ ऊ जल्दी-जल्दी पैडिल मारत बढ़ल जात रहली। छोटकी नहरी वाला रस्ता से जल्दी कोई ना जाव, बाकिर देर भइला के वजह से ऊ बढ़ल जात रहली।

छोड़ऽ हमरा के.... माई हो.... बचावऽ.... भइया हो केने बाडऽ... के एगो लइकी के आवाज़ सुन के ऊ ठमक गइली। अतना त बुझाइये गइल रहे कि कवनो लइकी संकट में बिया। ऊ बिना आगा-पाछा सोंचले आवाज के तरफ बढ़ गइली। तनिका आगे गइला पर देखली कि दूगो लइका एगो लइकी के धइले रहलें सन। ऊ आव देखली न ताव आ कूद पड़ली ओकनी के बीचे। दुनु लइका हंँसे लगले सँ आ कहे लगले सँ कि आवऽ-आवऽ.. तहरे कमी रहल हऽ। दू जने हमनी बानीं सन त दूगो लइकियो हो गइली सन। एतना सुनत भइल कि उनका देह में जइसे करेन्ट समा गइल। ओहि लोग के बुझे-बुझे तले त धरती पर लोटाँस होखे लागल। छने भर में ताबड़तोड़ लात-घूँसा से ऊ ओकनी के धांँग दिहली आ लइकी ले के फ़रार।

घबड़ाइल लइकी अब मुस्कियात रहली अउ मन ही मन सोंचत रहली कि अब हमहुँ जुडो-कराटे जरुर सीखबि।

◆ ◆ ◆

डॉ मधुबाला सिन्हा
मोतिहारी,चम्पारण

आत्मा

"ए बाबा! पापा के मुहें हमेशा सुनीला कि पहिले हमनीके गाँव बारी बगइचा से तोपाइल रहे। दूर से गाँव लउकबे ना करे । गाँव के चारु ओरी जंगले जंगल रहे।"

"हँ, ए नाती! बात त तोहार पापा साँचे कहेलन। बात पुरान बा लेकिन साँच बा, फेड़े-रुख तब अदमी के जीए के अलम रहलनि, गरमी से बाँचे, फल-फलाहार आ लवनो पताई खातिर । समय के कान्ह धइले आबादी बढ़त गइल, फेड़-रुख कटात चल गइलनि आ सड़क पक्की बने लागल। शहर गाँव की ओर तेजी से धावे लागल । जंगल ओराये लागल आ संगे-संगे जंगल में रहे वाला जीया-जंतुओ खतम होखे लगलन स ।" बुधन साँस लेवे खातिर तनी रुकलन, अतीत उनकरा आँखि के सोझा नाचे लागल।

" बाबा हो, तू त कहेल कि कुल्हिए जीव-जन्तुओ में आत्मा होला, आ ऊ कबो ना मरे, ऊ त अजर-अमर होला। ऊ समय के साथे चोला बदल लेला।"

" हँ ए नाती! ई बात त आजुवो सोरह आना साँच बा।"

" उन्ह जंगली जानवरन के आत्मा कहाँ गइल बाबा ?"

नाती के बात सुनी के बुधन कहलन- "उन्ह जानवरन के आत्मा एहिजे रहे वाला अदमी के अन्दर समा गइल, एहीसे आज के ढेर इंसान में इंसानियत रहिये नइखे गइल, कुल जानवरन वाला सुभाव लउकता। आज लागता जेकरा भीतरी बड़का जानवर के आत्मा बा ऊ नंगा आ दबंग कहाता आ छोटका जानवर के आत्मा वाला अब्बर। ऊ हर मोका प अब्बर के दबेर देता, सता रहल बा, दबा रहल बा। मारे बरियारा रोवहुँ ना दे वाला कहउति आँखि के सोझा साफ लउकता । के बिरोध करी? नंगा से त दइबो डेरालन, अब्बर के त खाली भगवाने के असरा बा।"

बाबा के बाति सुनके नाती के मुँह खुलल के खुलले रह गइल।

◆ ◆ ◆

तारकेश्वर राय "तारक"
उप-सम्पादक
सिरिजन

भारतीय संविधान आ ओकर रख-रखाव

कवनो छोट से छोट संस्था के भी सुचारू रूप से चलावे खातिर एगो नियमावली होला जवना के आधार पर ओह संस्था के चलावल जाला, तब भला कवनो देश के सुचारू रूप से चलावे खातिर कवनो नियम-कानून कइसे ना होई? एह से कवनो भी स्वतंत्र देश के सुचारू रूप से चलावे खातिर ओकर आपन एगो संविधान होला, जे ओह देश के कानूनन के महत्त्वपूर्ण दस्तावेज होला। जवना में ओह देश के सरकार के मूल संरचना आ ओकरा कार्यन के निर्धारित कइल गइल रहेला। एह से कवनो देश के संविधान के आधार पर ही ओह देश के शासन चलेला। हर देश के सरकार अपना संविधान के अनुसार ही काम करेले। काहेकि कवनो भी देश के संविधान ही देश के अन्य सब कानून से श्रेष्ठ होला॥ इहे कारण बा कि संविधान के कवनो भी देश के सर्वोच्च क़ानून मानल जाला। ई उहाँ के सरकार के हर विभाग के आ ओह देश के नागरिकन के आधारभूत अधिकारन के परिभाषित आ सीमांकित भी करेला।

कवनो भी देश के संविधान ओह देश के स्वतंत्रता के भी अभिव्यक्ति देला। एह से कवनो गुलाम देश के आपन संविधान ना होला।

संविधान सरकार के मूलभूत ढाँचा के निश्चित करेला आ ओकरा मुख्य अंग- विधायिका, कार्यपालिका आ न्यायपालिका के व्यवस्था भी करेला। साथ ही ई सरकार के प्रत्येक अंग के अधिकार के परिभाषित भी करेला आ ओकरा दायित्व के सुनिश्चित भी करेला। एतने भर ना कवनो भी देश के संविधान ओह देश के सरकार के एह तीनों अंग के बीच के पारस्परिक संबंध के साथ ही जनता के साथे ओकरा संबंध के स्थापित भी करेला। कहे के अर्थ ई कि संविधान एक कानूनी किताब ह जवना के अनुसार कवनो देश के सरकार काम करेले। संविधान प्रायः लिखित क़ानून ह, जवना के आधारभूत क़ानून भी कहल जाला। एही के आधार पर कवनो देश के प्रशासन हेतु नियम बनवावल जाला, जे ओह देश के प्रत्येक नागरिकन खातिर मान्य होला।
संविधान से देश के प्रत्येक क्षेत्र में रहे वाला नागरिकन के बीच के आपसी संबंध एवं सरकार आ जनता के बीच के संबंध भी तय होला। ई एक साथ रहत लोगन के बीच भरोसा आ सहयोग के भी विकसित करेला। एतने भर ना, संविधान इहो स्पष्ट करेला कि ओह देश के सरकार के गठन कइसे होई आ देश खातिर फैसला लेबे के अधिकार केकर रही।

कवनो भी संविधान के एगो महत्त्वपूर्ण कार्य ह सरकार के अधिकारन के सीमा तय करना आ अपना नागरिक के ओकर अधिकार बताना। साथ ही ई एगो अच्छा समाज के गठन खातिर लोगन के आकांक्षा भी व्यक्त करेला।

हालाँकि भारतीय संविधान 26 जनवरी सन् 1950 में लागू भइल। बाकिर ओकरा पहिले लगभग 55 बरिस ले एह में कई उतार-चढ़ाव देखल गइल। संविधान सभा के एगो बैठक नवम्बर सन् 1949 में भइल। जेह दिन 284 लोग हस्ताक्षर कइलस। जवना में- सुचेता कृपलानी, दक्षायनी वेलायुधन, बेगम एजाज रसूल, कमला चौधरी, हंसाने जीवराज मेहता, दुर्गाबाई देशमुख, लीला राय, मालती चौधरी, पूर्णिमा बनर्जी, राजकुमारी अमृत कौर, एनी मसकैरिनी, सरोजनी नायडू, अम्मू स्वामीनाथन, विजयलक्ष्मी पण्डित आ रेणुका रे नाम के पन्द्रह गो महिला भी शामिल भइली।

भारतीय संविधान के लागू करे से पहिले 24 जनवरी सन् 1950 में ही एगो बैठक बुलावल गइल। जवना में डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद के राष्ट्रपति चुनल गइल। साथ ही राष्ट्रगीत आ राष्ट्रगान के भी अपनावल गइल।

अपना देश के लोगन द्वारा समय-समय पर ब्रिटिश शासक से अपना संविधान के मांग होत रहल बा। एह कड़ी में पहिला नाम रहे- बाल गंगाधर तिलक के। उहे ब्रिटिश सरकार से सबसे पहिले सन् 1895 में अपना 'स्वराज विधेयक' द्वारा एकर मांग कइले रहलें। ओकरा बाद 1916 में 'होमरूल लीग आन्दोलन' चलल। जवना में घरेलू शासन-संचालन के मांग

अंगरेजन से भइल। सन् 1922 में गाँधी जी द्वारा भी संविधान-सभा आ संविधान-निर्माण के अंगरेजन से मांग भइल आ कहल ई गइल कि जब भी भारत के स्वाधीनता मिली तब भारतीय संविधान के निर्माण भारतीय लोगन के इच्छा के मुताबिक ही होई। अगस्त 1928 में नेहरू रिपोर्ट बनावल गइल। जवना के अध्यक्षता पं. मोतीलाल नेहरू कइले। एकर निर्माण बम्बई में भइल। एकरा अन्तर्गत ब्रिटिश भारत के पहिला लिखित संविधान बनावल गइल। जवना में मौलिक अधिकार, अल्पसंख्यक के अधिकार, अखिल भारतीय संघ आ डोमोनियम स्टेट के प्रावधान रखल गइल। बाकिर एकर मुस्लिम लीग आ रियासत के राजा लोगन द्वारा प्रबल विरोध भइल।

सन् 1929 में जवाहरलाल नेहरू के अध्यक्षता मे कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन भइल। जवना में पूर्ण स्वराज के मांग भइल। 1936 में कांग्रेस के फैजपुर सम्मेलन भइल। जवना में कांग्रेस के मंच से पहिला बार चुनल संविधान-सभा आ संविधान निर्माण के मांग भइल।

फरवरी 1946 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लिमेण्ट रिचर्ड एट्ली 'हाउस ऑफ कॉमन्स' में ई घोषणा कइलें कि भारतीयों को स्वतंत्रत होने का पूर्ण अधिकार है। एह से एट्ली भारत में तीन सदस्यीय एगो उच्च स्तरीय शिष्टमंडल भेजे के निर्णय लेहलें। एह समिति के उद्देश्य भारत में शान्तिपूर्वक सत्ता के हस्तांतरण के उपाय आ संविधान तैयार करे के कार्य प्रणाली तय कइल रहे। मार्च 1946 में कैबिनेट मिशन भारत भेजल गइल। एह शिष्टमंडल में ब्रिटिश कैबिनेट के तीन सदस्य लार्ड पैथिक लारेंस (भारतीय सचिव), सर स्टेफर्ड क्रिप्स (व्यापार बोर्ड के अध्यक्ष), आ ए.वी. अलेक्जेंडर रहलें।

कैबिनेट मिशन के आधार पर भारतीय संविधान के निर्माण करे वाली संविधान सभा के गठन जुलाई 1946 के भइल। जवना में संविधान सभा के कुल सदस्यन के संख्या 389 निर्धारित कइल गइल। जवना में से प्रान्तन खातिर निर्धारित 296 सदस्यन खातिर चुनाव भइल। भारत के हैदराबाद ही एकमात्र अइसन देशी रियासत रहे जवना से संविधान-सभा में कवनो प्रतिनिधि शामिल ना भइलें।

प्रान्तन से आ देशी रियासतन के ओकरा जनसंख्या के आधार पर प्रतिनिधित्व मिलल। साधारणतया 10 लाख के आबादी पर एक स्थान के आवंटन कइल गइल। भारत से 292 सदस्य, चीफ कमिश्नर से 4 सदस्य, देशी रियासतन से 93 सदस्य रखल गइल। एही आयोग के सिफारिश के आधार पर जुलाई 1946 में चुनाव भइल। जवना में कांग्रेस के 208 सीट मिलल, मुस्लिम लीग के 73 आ अन्य के खाता 15 सीट गइल। एही के आधार पर अंतरिम सरकार के गठन सन् 1946 में भइल। जे 2 सितम्बर 1946 से कार्य कइल प्रारंभ क देहलस। जवना में मुस्लिम लीग भाग ना लेहलस। एह सरकार के अध्यक्ष तात्कालिक वायसराय लार्ॅड 'वेवल' आ उपाध्यक्ष पण्डित जवाहरलाल नेहरू रहलें। मार्च 1947 में माउंट बेटन भारत के वाइसराय बनलें। ऊ 3 जून 1947 में एक योजना प्रस्तुत कइलें। जवना के जून योजना के नाम से जानल जाला। एकरा के 18 जुलाई के ब्रिटेन के राजा पास कइलें। योजना की क्रियान्वयन 15 अगस्त 1947 के भारत स्वतंत्रता अधिनियम में भइल। जवना में हिन्दुस्तान के 2 डोमेनियल स्टेटन में बाँटल गइल- भारत आ पाकिस्तान। भारत से ब्रिटिश सम्राट के सब अधिकार हटा लेहल गइल।

9 दिसम्बर 1946 के संविधान सभा के पहिला बैठक भइल रहे, जवना में अस्थायी अध्यक्ष सच्चिदानन्द सिन्हा के बनवावल गइल रहे। ओकरा दुइये दिन बाद दुसरका बैठक 11 दिसम्बर 1946 के भइल। जवना में स्थायी अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के बनावल गइल। एह बैठक के उपाध्यक्ष एचसी मुखर्जी रहलन आ संवैधानिक सलाहकार बी एन राव रहलें।

संविधान सभा के तीसरा बैठक 13 दिसम्बर 1946 के बुलावल गइल जवना में नेहरू जी द्वारा 'उद्देश्य प्रस्ताव' पेश कइल गइल। जवना के संविधान-सभा 22 जनवरी 1947 के अपना लेहलस। एही उद्देश्य प्रस्ताव के आधार पर भारतीय संविधान के प्रस्तावना निर्मित भइल।

संविधान सभा के निर्माण खातिर 13 समितियन के गठन भइल। प्रारूप समिति के गठन 29 अगस्त 1947 में भइल आ संविधान निर्माण खातिर संविधान सभा के बैठक भइल। एही दिने 284 लोग हस्ताक्षर कइलस।

भारतीय संविधान के प्रारूप समिति (Drafting committee) में निम्नलिखित सातगो सदस्य रहलें- सर्वश्री (डाॅ.) भीमराव अम्बेडकर, एन.गोपाल स्वामी आयंगर, अल्लादी कृष्णा स्वामी अय्यर, कन्हैयालाल मणिकलाल मुन्शी, सैय्यद मोहम्मद सादुल्ला, एन. माधवराव (बी.एल. मित्र के स्थान पर), डी.पी. खेतान (इनकर मृत्यु भइला के बाद इनका स्थान पर टी.टी. कृष्णमाचारी बनलें)। एकर अध्यक्ष रहले डॉ. अम्बेडकर |

संविधान सभा के अंतिम बैठक 24 जनवरी 1950 ई. के भइल। ओही दिने संविधान सभा द्वारा डाॅ. राजेन्द्र प्रसाद के भारत के प्रथम राष्ट्रपति के रूप में चयन भइल।

जइसन कि हमनीं के जानतानीं कि भारत राज्यन के संघ ह। ई संसदीय प्रणाली के सरकार वाला एगो स्वतंत्र प्रभुसत्ता सम्पन्न समाजवादी लोकतंत्रात्मक गणराज्य ह। ई गणराज्य भारत के संविधान के अनुसार ही शासित होला। जवना के संविधान-सभा द्वारा 26 नवम्बर 1949 के ग्रहण कइल गइल आ 26 जनवरी 1950 के लागू कइल गइल। भारतीय संविधान विश्व के सबसे बड़ा लिखित संविधान मानल जाला। एह संविधान के लागू होखे के समय एकरा में 395 अनुच्छेद, 8 अनुसूची आ 22 भाग रहे, जे आज बढ़के 448 अनुच्छेद, 12 अनुसूची आ 25 भाग हो गइल बा। एकरा साथ ही एकरा में पाँच गो परिशिष्ट भी जोड़ देहल गइल बा जे शुरू में ना रहे।

भारतीय संविधान के गिनती विश्व के श्रेष्ठ संविधानन में होला। काहेकि एकरा में संविधान बनत समय के दोसरा देशन के संविधान के कई अच्छाइयन के समावेश कइल गइल बा। हालाँकि भारतीय संविधान सबसे अधिक अमेरिकन संविधान से प्रभावित बा। भारतीय संविधान के आत्मा कहे जाये वाला Preamble यानी 'प्रस्तावना' अमेरिकी संविधान से ही लेहल बा। संविधान के प्रस्तावना के शुरुआत 'We the people' से होता। प्रस्तावना के माध्यम से भारतीय संविधान के सार, अपेक्षा, उद्देश्य, लक्ष्य आ दर्शन प्रकट होता। प्रस्तावना ई घोषणा करता कि संविधान आपन शक्ति सीधे जनता से प्राप्त करेला। एही कारण भारत के संविधान 'हम भारत के लोग' वाक्य से ही प्रारम्भ होता। नीति निर्देशक तत्त्व जनतांत्रिक संवैधानिक विकास के नवीनतम तत्त्व ह। सबसे पहिले एकरा के 'directive principles of state policy' के नाम से आयरलैंड के संविधान में लागू कइल गइल रहे। आयरलैण्ड से ई भारत के संविधान में लेहल गइल। ई संविधान के अइसन तत्त्व ह जे संविधान के विकास के साथ ही विकसित भइल बा।

एह तरह से भारतीय संविधान के ज्यादातर प्रावधान अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, सोवियत संघ, आयरलैंड समेत अन्य कई देशन के संविधान से प्रेरित बा। एह से भारतीय संविधान के 'Bag of borrowings' भी कहल जाला।

भारतीय संविधान के विशेषता ई बा कि ई संघात्मक भी ह आ एकात्मक भी। भारत के संविधान में संघात्मक संविधान के सब विशेषता विद्यमान बा। बावजूद एकरा आपातकाल में भारतीय संविधान में एकात्मक संविधानन के अनुरूप केन्द्र के अधिक शक्तिशाली बनावे के प्रावधान भी निहित बा। भारतीय संविधान में एक नागरिकता के समावेश कइल गइल बा। साथ ही एके संविधान से केन्द्र आ राज्य दुनु सरकारन के कार्य संचालन के व्यवस्था भी प्रदान कइल गइल बा। एतने भर ना भारतीय संविधान में विश्व के अन्य संविधानन से केवल उहे बात ग्रहण कइल गइल बा जे भारतीय संदर्भ में भी उपयोगी होखे।

भारतीय संविधान में सरकार के अइसन संसदीय स्वरूप के व्यवस्था कइल गइल बा जवना के संरचना कतिपय एकात्मक विशिष्टतता के साथे संघीय होखे। केन्द्रीय कार्यपालिका के संवैधानिक प्रमुख राष्ट्रपति के बनावल गइल बा।

भारतीय संविधान के धारा 79 के अनुसार केन्द्रीय संसद के परिषद् में राष्ट्रपति के साथे दू गो सदन रही। जवना के राज्यन के परिषद् (राज्य सभा) आ लोगन के सदन (लोक सभा) के नाम से जानल जाई। संविधान के धारा 74(1) में ई व्यवस्था कइल गइल बा कि राष्ट्रपति के कार्यन में सहायता करे आ सलाह देबे खातिर एगो मंत्री परिषद् होई जवना के प्रमुख प्रधानमंत्री होइहें, जे राष्ट्रपति के सलाह के अनुसार अपना कार्य के निष्पादन करिहें। कहे के अर्थ ई कि भारतीय संविधान के अनुसार वास्तविक कार्यकारी शक्ति मंत्रिपरिषद् में ही निहित रही, जवना के प्रमुख प्रधानमंत्री होइहें।

भारतीय संविधान तीन प्रमुख बिन्दुअन पर काम करेला। पहिला राजनीतिक सिद्धांत। जवना अनुसार भारत एगो लोकतांत्रिक देश रही। ई सार्वभौम, धर्मनिरपेक्ष्य राज्य होई। दूसरा- भारतीय सरकारी संस्था के बीच कइसन संबंध रही, ऊ एक-दोसरा के साथे कवना तरह से काम करी, सरकारी संस्था के अधिकार आ कर्तव्य का होई आ एकरा साथ ही एह तरह के संस्था में कवना तरह के प्रक्रिया लागू होई एकर लेखा-जोखा बा। तीसरा बिन्दु ओकरा अपना नागरिकन के प्रति बा। ऊ ई बतावेला कि भारतीय नागरिकन के कवन-कवन अधिकार होई।

संविधान सभा के मतानुसार देश के चहुँमुखी विकास खातिर समय-समय पर उपयुक्त प्रावधान के संशोधन के आवश्यकता पड़ सकेला, जवना खातिर संविधान संशोधन के तीन विभिन्न प्रक्रिया देहल गइल बा। एही के आधार पर भारतीय संविधान में समय-समय पर संशोधन कइल गइल बा।

भारतीय संविधान अपना सब नागरिकन के जाति, रंग, नस्ल, लिग, धर्म चाहे भाषा के आधार पर कवनो भेद-भाव कइले बिना बराबर के अवसर प्रदान करेला। संविधान में साफ-साफ लिखल बा कि देश के ना कोई आधिकारिक धर्म होई ना कवनो धर्म के बढ़ावा ही देहल जाई। भारतीय संविधान में धर्मनिरपेक्षता आ समाजवादी शब्द 1976 में संविधान के 42 वाँ संशोधन द्वारा प्रस्तावना में जोड़ल गइल। एकरा पहिले धर्मनिरपेक्ष के स्थान पर पंथनिरपेक्ष रहे।

भारतीय संविधान बनावे खातिर जवन संविधान सभा बनावल गइल ओकर स्थायी अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद रहलें। भारतीय संविधान विश्व के सबसे लम्बा संविधान बा। एकरा के बनावे में 2 वर्ष, 11 माह, 18 दिन लागल आ जवना में 114 दिन बैठक भइल बा। एह संविधान में 465 अनुच्छेद बा, 12 अनुसूची बा आ ई 22 भाग में विभाजित बा। 26 जनवरी सन् 1950 के ही अशोक चक्र के बतौर राष्ट्रीय चिह्न स्वीकार कइल गइल। देश के संविधान सभा मौज़ूदा रूप में भारतीय संविधान के 26 नवम्बर 1949 के ही स्वीकार कइले रहे। हालाँकि ई लागू भइल 26 जनवरी 1950 में। एह से वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी अधिसूचना जारी करके 19 नवम्बर 2015 के ई घोषित कइले कि 26 नवम्बर के देश संविधान दिवस मनायी। तब से हर साल 26 नवम्बर के देश संविधान दिवस मनावेला।

भारतीय संविधान विश्व के सबसे बड़ा संविधान ह । ई एक अउर मामला में विश्व के अन्य देशन के संविधान से अलग बा, ऊ ह एकर मूल प्रति। भारतीय संविधान हाथ से बनल कागज पर हाथ से ही लिखाइल बा। यानी Hand written बा। ई मूल रूप से हिन्दी आ अंग्रेजी दुनु भाषा में बा। एकरा अंग्रेजी संस्करण में 117, 369 शब्द बा। भारतीय संविधान के हिन्दी आ अंग्रेजी के जवना मूल प्रति के 26 नवम्बर 1949 में स्वीकृत कइल गइल ऊ मुकम्मल तरीका से हाथ से लिखल संविधान के मसौदा के किताब के रूप में तैयार कइल गइल बा। एगो हिन्दी आ दोसर अंग्रेजी में। एह दुनु प्रति के प्रेम बिहारी नारायण रायज़ादा(भारतीय कैलीग्राफ़र) इटैलिक स्टाइल राइटिग में लिखले बाड़न। संविधान शान्ति निकेतन के कलाकारन द्वारा सजावल भी गइल बा।

जइसन कि हमनीं जानतानीं कि भारतीय संविधान हाथ से बनल कागज पर हाथ से लिखाइल बा। एह से एकरा के संजोके रखल भी एगो कठिन काम बा। पहिले एकरा के फलालेन के कपड़ा में लपेट के नेपथलीन बाॅल्स के साथ रखल गइल रहे। बाकिर पावल ई गइल कि संविधान के मूल प्रति सुरक्षित नइखे। एह से पता लगावल गइल कि विश्व के अन्य देशन के संविधान के सुरक्षित कइसे रखल गइल बा? वैज्ञानिक लोग एकर जाँच कइलस त पता चलल कि अमेरिका के संविधान ही सबसे सुरक्षित वातावरण में बा। एकरा बाद वैज्ञानिक लोग द्वारा संसद भवन के पुस्तकालय में एगो चैंबर तैयार कइल गइल। जवना के सुरक्षित बनावे खातिर अइसन गैस के प्रयोग भइल जवना के प्रभाव कागज चाहे स्याही पर ना पड़े। भारतीय संविधान के जवना मूल प्रति के 26 नवम्बर 1949 में स्वीकृत भइल ऊ हस्तलिखित होते हुए भी 72 बरीस बाद भी सुरक्षित बा आ हमेशा सुरक्षित रहे। एह से एकरा के संसद के लाइब्रेरी में हीलियम गैस से भरल एगो चैंबर में रखल बा। 1994 में भारत सरकार ई तय कइलस कि भारतीय संविधान के भी अमेरिकन संविधान के तरह ही गैस चैंबर में रखे के चाहीं। एकरा खातिर अमेरिका के गैटी इंस्टीट्यूट से समझौता कइल गइल। ओकरा बाद भारत के नेशनल फिज़िकल लाइब्रेरी आ गैटी मिलके भारतीय संविधान खातिर विशेष तरह के गैस चैंबर तैयार कइलस। जवना में हीलियम गैस बा। अब प्रश्न ई उठता कि भारतीय संविधान के रखे खातिर हीलियम गैस के चैंबर के का जरूरत बा? एकर उत्तर ई बा कि चूँकि हीलियम गैस एगो निष्क्रिय गैस ह, लिहाजा ओकरा में रखे जाये वाला संविधान अधिक दिन ले सुरक्षित रह सकेला। काहेकि ई गैस ना स्वयं क्रिया करेले आ ना ही कवनों दोसरा तत्त्वन द्वारा क्रिया होखे देले। वरना जइसन कि हम जानतानीं कि प्राकृतिक तौर पर हर पदार्थ के साथ कार्बनिक चाहे अकार्बनिक प्रतिक्रिया होला। एह से समय के साथ ओकर क्षय होखे लागेला। एह क्षय से बचे खातिर भारतीय संविधान के हीलियम गैस के चैंबर में रखल जरूरी रहे।

बाकिर एकर अर्थ ई नइखे कि संविधान के सुरक्षा खातिर एतने से भारत सरकार संतोष क लेहले होखे। काहेकि भारतीय संविधान काली रंग के स्याही से लिखल बा। स्याही के ऑक्सीकरण होखेला। यानी समय के साथ लिखल स्याही के रंग फीका पड़े लागेला। एह से संविधान के सुरक्षा खातिर उचित मात्रा में आर्द्रता भी देबे के होला। एह से संविधान के मूल प्रति खातिर 50 ग्राम आर्द्रता प्रति क्यूबिक मीटर के जरूरत होला। एह से एह एयर टाइट चैंबर के एह तरह से तैयार कइल गइल बा कि ओकरा में आर्द्रता के निश्चित अनुपात हमेशा बरकरार रहे। एकरा खातिर एह गैस चैंबर से हर साल गैस निकालल जाला आ नया गैस भरल जाला। एतने भर ना एह गैस चैंबर के हर दुसरा माह जाँचल भी जाला आ

चैंबर के अंदर के माहौल के सीसी टीवी से मानीटर भी कइल जाला।

हमनीं सभे जानतानी कि भारतीय संविधान संविधान-सभा के सहयोग से बनल बा। भारतीय संविधान के मूल प्रति हिन्दी आ अंग्रेजी में बा। एह दुनु में टाइपिग चाहे प्रिट के इस्तेमाल नइखे भइल। एह दुनु भाषा में संविधान के मूल प्रति प्रेम बिहारी नारायण रायजादा लिखले बाड़न। रायजादा के खानदानी पेशा कैलीग्राफ़ी के रहे। ऊ 303 नम्बर के 254 पेन होल्डर निब के इस्तेमाल करके भारतीय संविधान के हर पेज के बेहद खूबसूरती से इटैलिक स्टाइल में लिखले बाड़न। उनका एह संविधान के लिखे में 6 महीना के समय लाग गइल। जवना घड़ी उनका के ई जिम्मेवारी सौंपल गइल ओह घड़ी उनका से उनका ओह काम के मेहताना पूछल गइल तब ऊ कुछ भी लेबे से इनकार क देहलन। ऊ कहलन कि हमरा ना एको पइसा चाहीं ना कवनो महंगा उपहार। बाकिर ऊ अपना ओह सेवा खातिर एगो शर्त रखलन कि संविधान के हर पृष्ठ पर ऊ आपन नाम लिखिहन आ संविधान के अंतिम पृष्ठ पर अपना नाम के साथे ऊ अपना दादाजी के भी नाम लिखिहन। उनकर ई शर्त मान लेहल गइल।

जवना समय भारतीय संविधान पर काम बहुत तेजी से होत रहे। ठीक ओही घड़ी जवाहरलाल नेहरू संविधान के सजावे वाला के खोज करत रहलन। उनकर ई खोज बंगाल के शान्ति निकेतन में आके पूरा भइल। उहाँ नन्दलाल बोस कला भवन के प्राध्यापक के हैसियत से काम करत रहले। प्रधानमंत्री नेहरू शान्ति निकेतन आइल रहलें। ओही जा उनका से नेहरू जी के भेंट भइल। पं. नेहरू उनका से भारतीय संविधान के सजावे खातिर आमंत्रित कइलें आ ऊ मान लिहलें।

भारतीय संविधान के नंदलाल के निर्देशन में शान्ति निकेतन के कलाकारन द्वारा अद्भुत चित्रन से सजावल गइल बा आ इंदौर के कलाकार दीनानाथ भार्गव आ उनकर साथियन द्वारा संविधान के पृष्ठन के बाॅडर अकेरल गइल बा।

भारतीय संविधान में मोहनजोदड़ो, वैदिक काल, रामायण, महाभारत, बुद्ध के उपदेश, महावीर के जीवन, मौर्य साम्राज्य, गुप्त काल, मुगल काल के सुन्दर चित्रन के साथ ही गाँधीजी, सुभाष चन्द्र बोस आ हिमालय से लेके सागर इत्यादि के चित्र अत्यधिक सुन्दर बन पड़ल बा। वास्तव में भारतीय संविधान के ई सब चित्र भारतीय इतिहास के विकास यात्रा ह। एह चित्रन के शुरुआत होता भारतीय राष्ट्रीय प्रतीक अशोक स्तंभ के शेर से।

संविधान के हर पृष्ठ पर चित्र बनावल संभव त ना रहे। बाकिर भारतीय संविधान में कुल 22 भाग बा। प्रत्येक भाग के प्रारम्भ में 8-13 इंच के एगो चित्र बा। संविधान के एह चित्रन में से एगो चित्र के लेके विरोध भी भइल रहे । बाद में वोटिग के बाद ई निर्णय भइल कि संविधान में लिखल शब्द ही संविधान के हिस्सा ह, संविधान पर बनल चित्र ना।

अंत में हम इहे कहे के चाहेब कि हमनीं के पूर्वज लोग कठिन परिश्रम से अपना देश खातिर बेहतरीन संविधान के निर्माण कइले बा। एकरा के बनावे में 60 देशन के संविधान के अवलोकन कइल गइल आ एकरा के बनावे में 6400000 रुपया खर्च भइल। साथ ही 2 साल 11 महीना 18 दिन के समय लागल। संविधान खातिर 100 से ऊपर बैठक भइल। जवना में पहिला बैठक 9 दिसम्बर 1946 के भइल आ अंतिम बैठक 24 जनवरी 1950 के भइल। हमनीं भारतीय खातिर ई संविधान अनमोल बा। एहसे अब एकरा गरिमा के बनाये रखे के जिम्मेदारी खाली सरकार पर ही नइखे बल्कि भारत के प्रत्येक नागरिक पर भी बा।

◆ ◆ ◆

डॉ. ज्योत्स्ना प्रसाद
पटना

नारी महान

कैलाश अउरी नरेश सेठ दुनू जने भाई रहे लोग । बाजार में कपड़ा के दुकान रहे, खूब चले, आमदनियो ठीके ठाक रहे। कैलाश जेठ रहलें लेकिन बड़ी घुमक्कड़ रहलें। उनका काम पारे ना लागे। उनके चुत्तर कबो धन्धा पर बइठबे ना करे। खाली चभर चभर पान खासु अउरी एने से ओने घूमसु। कैलाश के बियाह हो गइल रहे, दू गो लइका रहले सन। उनके मलिकाइन बड़ी सुन्दर रहली। जेतने सुन्दर ओतने दबंग। दोकानि चलावसु देवर नरेश सेठ लेकिन हिम्मत ना कि एको पइसा एने ओने कS देसु। साँझि खान दोकानि से आवते भउजी सारा पइसा उनकी पाकिट से झारि लेसु।

नरेशो का ई मंजूर रहे। एके बाउरो ना मानसु। खुदे ले जा के भउजाई की आगे सगरो थाती धS देसु। एकरी चलते भउजाई की ओर से उनके भी मान जान कम ना रहे। कैलाश के भोजन के थरिया भले बाहर धरा जाउ लेकिन नरेश सेठ भउजाई की बिछवने पर बइठि के खासु, खात में उनके तनी बेनियो डोलावल जाउ, अगर उँघी लागे तS तनी आँखियो दे लेसु। उनके खाता-पतर के सगरी हिसाब-किताब भउजी की बिछवने पर होखे। देखे वाला तरह तरह के बातियो बतियावे लेकिन देवर भउजाई का तनिको एके भीर ना।

एही के ले के नरेश सेठ के अगर तिलकहरु आवे सन तS लोग बियाहे काटि देउ। बाद में कैलाश का तनी एके शिकायत बुझाए लागल तS अपनी मेहरारू की विरोध की बावजूद नरेश के बियाह कS दिहलें। नरेश सेठ बो भी सुन्दर सुकान्त तS रहली, लेकिन तनी साँवर रहली। अब एके घर मे भउजाई गोर अउरी मेहरारू साँवर, देखि के नरेश सेठ का भउजाई की आगे आपन मेहरारू पसन्दे ना पड़े। दोकानी से आवसु तS सीधे भउजाई की लगे जाके बइठसु। रुपया पइसा सब भउजाइये की लगे धरसु। कौनो सामानों ले आवसु तS भउजाइए की लगे धरसु । मन करे तS अपनी घर में ढूकसु ना तS बाहरे बाहर रहसु।

नरेश बो का अपना मरद के ई आदत ठीक ना लागल, लेकिन नया नोचर मेहरारू अबे बोलसु तS लोग शिकायत मानी, सोचि के आठ-दस दिन ले चुप रहली। लेकिन बाद में एकदिन त्रिया चरित्र के प्रदर्शन करत उनसे कहली "राउर बियाह हमसे भइल बा। ए बेरा ले रउरा जौन कइनी तौन कइनीं। लेकिन अब ओ तरे कइले कइसे काम चली। अब हमनीं का एक साथे नया जीवन के शुरुआत करे के बा। अब रउरा रास्ता बदले के पड़ी।,, सुनते नरेश सेठ रिसिया गइलें।

"तूँ अपनी काम से काम राखS। तहरी कहले हम भइया भउजी के ना छोड़ब।,,

"लेकिन हम छोड़े के कहाँ कहSतानीं। हम तS बस ई कहSतानीं कि हर सम्बन्ध के एगो सीमा होला। भउजी भउजी होली अउरी मेहरारू मेहरारू। भउजी कबो राउर मेहरारू ना कहइहें। राउर खर खानदान अब तबे चली जब हमरी गर्भ से राउर जामल लड़िका होई।,,

"माने हम भउजी के आपन मेहरारू बनवले बानीं ! इहे नू तूँ कहल चाहSताड़ू?,, नरेश सेठ अउरी रिसिया गइलें।

"अउरी ना तS का ! उनकी घर में बार बार रउरी अइला गइला के जरूरत का बा? ,,

"देखS,, तूँ अपनी हद में रहS। तूँ ए घर में बाड़ू एतने बहुत बा। एकरा से आगे तूँ सोचबो जनि करिहS।,, कहत नरेश सेठ गोड़ पटकत चलि गइलें। सुनि के नरेश सेठ बो सन्न रहि गइली। मन में तरह तरह के प्रश्न हिलोरा मारे लागल, "का ई हमार घर ना हS? ए लोग की दयावश हम ए घर मे बानीं? मरद हमार ना हवें?,, सोचत मन उद्विग्न हो गइल। लेकिन केकरा से कहसु। जब ऊ सुने के तैयारे नइखें तS।

एकरे बाद महीना दू महीना ले फेरु नरेश सेठ मेहरारू की ओर तकबो ना कइलें। एने सासु तS रहबे ना कइली अउरी देयाद के तमखा मान के ना, बाति बाति में उड़िलावत रहसु। चले के ढंग नइखे, बइठे के ढंग नइखे, रसोई के ढंग नइखे, हजार गो पइ निकालि निकालि के झंपिलावत रहसु। नरेशो एइपर कान ना करसु। उनका तS भउजी के हर कसूर मंजूर रहे।

अपनी मरद के प्यार खोजत नरेश बो के जिदगी दिन पर दिन अउरी नरक बनल जात रहे। राति के सुतसु तS अपनी हालत पर कुहुकसु लेकिन का करसु, जब जेकरी सहारे डूबे उतराए के बा उहे आपन नाहीं रहे तS? मरद के आपन बनावे के कई कई को उधापनो कइली लेकिन नरेश उनके भाव ना दिहलें।

जब साल भर बीति गइल तS एकदिन भाई से शिकायत कइली। भाइयो बहनोई के बोला के समझवलें, लेकिन कौनो प्रभाव ना। हीत नात नेमी परेमी सभे समझावल। लोग की लगे तS ऊ सकारि लेसु कि "अब उनके मानेब" लेकिन बाद में फेरु उहे चाल। एकरा खातिर पर- पंचायत सगरी भइल लेकिन उनका पर कौनो प्रभाव ना पड़ल।

बियाह भइले दू बरिस बीति गइल लेकिन नरेश के जब रंग ढंग ना सुधरल तS एकदिन नरेश बो उठली अउरी रोवत नइहर चलि गइली। ऊ बूझली कि नइहर जाएब तS उ अइहें, लेकिन नरेश ओने ताकहू ना गइलें। ए के नरेश बो का बड़ी दुःख भइल। अपनी तकदीर पर दिनराति उनकी आँखि से लोर टपकते रहे।

दू बरिस बाट जोहत जोहत जब नरेश सेठ झाँकियो ना परलें तS एक दिन नरेश बो अपनी मांग के सेनुर धो के भाई से कहि दिहली, कि अब हम एही नगर में मेहनत मजूरी कS के, चाहे भीख भौन माँगि के खाएब, लेकिन ससुरा ना जाएब। सुनते भाई अवाक हो गइलें अउरी लगले कहे-

"रे नइहर में तोर जिनगी कौनेंगा पार लागी।,,

"लेकिन भइया, ओहूजा तS उहे दसा बा। अगर दलिदर की साथे हमार बियाह भइल रहित, अउरी ऊ हमके आपन मानित तS हम खुश रहितीं। हम उपास कS के उघार रहिके भी ओकरी साथे रहि लितीं। घर नइखे तS पेड़ की नीचे रहि लीतीं, बिछावना नइखे तS भुइयाँ सूति रहितीं। अगर ऊ हमसे प्रेम करितें तS हमरा कौनो सुख के गरज ना रहल हS। लेकिन जेकरी सहारे ससुरा में रहे के बा, जब ऊ सहारा ही हमार नइखे तS ऊ धन बीत कौनी काम के?

"लेकिन इहाँ कौन ढेर आथ अलम बा कि तहरो गुजर होई? तहार दूसर बियाहो करे में तS पइसा लागी?,,

"कौनो जरूरत नइखे, अगर आथ अलम नइखे तS हमार बियाह गरीब से, आन्हर से, लंगड़ से, लूल से, केहू से कS दS,, लेकिन अब हम ओइजा ना जाएब।,, बहिन की जिद्द की आगे भाई हारि गइलें अउरी उनके बियाह दूसरा जगह हो गइल। कइसन दुलहा से बियाह भइल केहू ना जानल ।

बीस साल के समय कम ना होला । बीस बरिस में नरेश सेठ में भी काफी तब्दीली आ गइल रहे। ओकरे बाद दू दू गो बियाह कइलें लेकिन सही मायने में सुख कौनो से ना मिलल। एगो आइल, अउरी बुझाइल कि अब इनहूँ के परिवार ठीक हो जाई। लेकिन ओकरा अबे एके गो बेटा भइल तले देयादिन की उत्पीड़न से तंग आ के ऊ छव महीना के दूध मुँहा बेटा के छोड़ि आत्महत्या कS लिहलसि। ए घटना से नरेश सेठ के आँखि खुलल अउरी भाई से अलगा हो गइलें। लेकिन अलगा होते लड़िका के परिवरिश कैसे होई ई समस्या आ गइल । अब लड़िका पोससु की दोकान चलावसु । लड़िका के पोसे खातिर दूसर बियाह कइलें। लेकिन ऊ आइलि तS एकदम कर्कशा नारि। ओकरा लड़िका के देखले छठि आँखि। ऊ तS बुझाउ कि दुनो के बदला भउजाई से निकालि ली। भउजाई की सवाई दबंग ऊ रहे। झोंटा झोंटउव्वल सब भइल। भउजाइयो का बुझा गइल कि सगरी दलिहन के होरहा ना होला।

ए कुलि से नरेश सेठ के एकदम दुर्दिन आ गइल। लड़िका अउरी मेहरारू की बीच मे पेरा के रहि गइलें। दू तीन बरिस ले दुकानि बंद हो गइल। खइलो पीयला के आफत आ गइल। अपनी दुर्दिन पर ऊ रोवसु। रोज पछतासु कि पहिलकी बियही की साथे उनके व्यवहार ठीक ना रहे। ओकरी आँसू के हिसाब भगवान चुकावSताड़े । कई बेर मन उबियाउ तS ओके खोजत पहिलका ससुरारी जासु लेकिन उहाँ कौनो अता पता ना चले कि ऊ कहाँ गइलि? बाद में जब लड़िका तनी पोढ़ा गइल तS फेरु दुकानि खोललें लेकिन ऊ रौनक ना आ पावल ।

पूष के महीना रहे । शीत लहर में हाड़ कँपा देबेवाला जाड़ से लोग परेशान रहे। लगभग दस दिन की बाद ओइदिन तीजहरिया की बेरा किरिन उगल रहे। सब दुकानदार घामे बइठि के धूप लोढ़त रहलें। नरेश सेठ दुकानि खुलहे छोड़ि के भोजन करे घरे गइल रहलें। जब घर से खा के अइलें तS देखSताड़ें कि हीन दीन स्थिति में एगो बूढ़ उनकी ठीक दुकानि की सामने उनकी चौकी पर सूतल बा । देंहि में मोटका कोट पर नौ मन मइल, देंहि बुझाउ कि कबो पानी से भेंटे नइखे। गोड़ में मइल कुचइल पैजामा, एड़ी में अरे अर फाटल बेवाइ, पूरा देंह में अरे अर पछनी, बड़े बड़े दाढ़ी अउरी बार से बुझाउ कि मोबिल चुअता। देहि से दुर्गन्ध आवे, देखला पर एतना घिना आवे कि बुझाऊ कि सालन से ऊ नहइले नइखे। ओकर गन्दगी देखि के नरेश सेठ पहिले तS चहलें कि भगा दीं, लेकिन दयावश छोड़ि देहलें।

घण्टा भर बीतल लेकिन ओकरी देंह में तनिको हलचल ना। निराभेद पटाइल रहे। केहू की अइलहूँ पर तनी गोड़ ना बटोरे कि केहू बइठो। देखि के बाउर लागे लेकिन तबो परहेज कS के रहि जासु। कुछू देर बीतल तS नरेश सेठ तनी रिसिया के बोललें,, "ए बाबा, अब साँझि भइल, तनी उठि के अब बइठS।" सुनते ऊ रिसिया गइल, "लS, जा तानीं। तनी सूतल बानीं तS तहार जान जाता"। कहत उठल अउरी झनकि के जाए लागल। लेकिन ओके देखि के नरेश सेठ अवाक हो गइलें कि ऊ तS दूनू आँखि के आन्हर बा। बुझाइल की गिर जाला। क्षण भर में ही नरेश का अपनी कहला के पश्चाताप भइल अउरी लपकि के ओकर हाथ पकड़ि के गिरला से बचावत ले आ के फेरु चौकी पर बैठा दिहलें।

तनिए देर बाद पच्छिम दिशा में सूरज छिपे के तैयारी कइले अउरी एकरी साथे सिहिर सिहिर पछुआ खून जमावे

वाला ठण्डा बरिसावे लागल। जाड़े सबके दाँत कटकटा उठल। एकरी साथे जगह जगह आगी बारि के लोग घेरि के बइठि आगी तापे लागल। लेकिन ओ अन्हरा का बुझइबे ना करे कि जड़वता। गुस्सा से भरल चुपचाप चौकी पर बइठल रहे।

तले पूरब से एगो मेहरारू जौना की तन पर शुद्ध वस्त्र भी ना रहे, नीचे साया रहे कि ना नइखे कहल जा सकत लेकिन ऊपर बेलाउजो ना रहे, खाली एगो झिलगाह लूगा में लिपटले जाड़ से थरथर थरथर काँपत आइलि अउरी आवते नरेश सेठ के देखि के घूघ से आपन मुँह तोपत अन्हरा की आगे खाड़ हो गइल। ओके घूघ काढ़ल देखि के नरेश तनी असमंजस में भी पड़लें कि आखिर ई औरत के हS कि उनके देखि के घूघ काढ़ि लिहलS सिहS। लेकिन मन के बाति मने में राखि लिहलें, कुछू कहलें ना। ऊ मेहरारू आ के अन्हरा की आगे खाड़ भइलि अउरी अँचरा की खूँटा से एगो पुड़िया खोलि के अन्हरा की हाथ में थम्हावत रिसि से मुँह चमकावत धीरे से कहलसि "हँ, लS,, हे जाड़ पाला में गांजा बिना तहार कारे नइखे चलत।,, ओ मेहरारू के देखि के बड़ी दया आइल। हे ठंडी में भी बेचारी की देंहि पर एगो सूइटरो ना, जाड़े देंह अउरी होठ काँपत रहे । साँवर शरीर पर अभाव देखावत रूप। पूरा शरीर पर विपत्ति के आगाज देखि के नरेश का बड़ी दया आइल। ऊ मेहरारू अन्हरा के हS? अबे ऊ सोचते रहलें तले अन्हरा पूड़ियवा हाथ मे लेके टोवलसि अउरी रोवे लागल ओ मेहररुआ के गरियावे "रे इहे तीस रुपया के गाँजा हS रे? रूपयवा ले जा के ई चोरा घारSतिया हो दादा ! ए चोरिनिया की साथे अब हम कइसे रहीं हो दादा।",, कहत खूब रिसिया गइल अउरी खूब तड़पि के बोलल "जो फेरि के हमार पइसा ले आउ।,, कहत ऊ ओके खूब गरियावे लागल। लेकिन ऊ औरत कुछू ना बोले, चुपचाप हत्यार की तरे खड़ा रहे।

स्थिति देखि के नरेश सेठ बूझि गइलें कि ऊ औरत अन्हरा के मेहरारू हS अउरी एकरा के इहाँ धूप में सुता के एकरा खातिर इहाँ से पाँच किलोमीटर दूर बटोरन सेठ किहाँ पैदल गाँजा ले आवे ऊ गइल रहलि हS। जौना की गोड़ में एगो चप्पल भी नइखे, देंही पर एगो सुइटर भी नइखे, हे ठंडी में ऊ पाँच किलोमीटर कवनेंगा गइल आइल होई महसूस कS के नरेश सेठ सिहर उठलें अउरी अन्हरा के डाँटि के पड़ि गइलें।

"जा तूँ फेरि के ले आवS, ई नाहीं जाई ! आपन तकदीर नइखS देखत कि कौन पाप कइलS कि आन्हर हो गइलS अउरी फेरु उहे धन्धा नधले बाड़S। हे ठंडी में बेचारी फेरु पाँच किलोमीटर जाई आई तS ओकर का दसा होई? साँझ इहें हो गइल बा, फेरु जाए आवे में कौन बेरा होई? ई नइखे बुझात ।,,

नरेश सेठ के डाँटल सुनि के अन्हरा चुप हो गइल अउरी आपन छड़ी ओ औरत के थम्हावत उठल "हँ, चलु" कहते ऊ औरत छड़ी के एगो सिरा धS के आगे आगे चलि देहलसि अउरी एगो सिरा धइले अन्हरा पीछे पीछे। नरेश सेठ दूर ले ओकने के जात देखि के हुलसि उठलें। "ओह, गजब ई मेहरारू बिया। दुनिया में अइसन लोग भी बा नू। कमाएवाला मरद आन्हर बा, नशेड़ी बा, लेकिन तबो ओही के ले के सती बनल बिया। ओकरा खातिर ना जाड़ पाला लागSता ना गरमी। केतना दुख भोगSतिया? ,, आपन दुख अउरी अन्हरा के सुख के तुलना करत दुख से भरि गइलें।

तले तुक्का बो काकी आ गइली। अउरी आवते कहे लगली "ए नरेश सेठ, इहे तहार असली बियही हई, पहिलकी।,

सुनि के नरेश सेठ अवाक हो गइलें। दुकानि छोड़ के दउरल गइलें, आगे से जा के घेरलें, अउरी जब कहलें कि तहार दुःख देखि के आजु हमरा बड़ी दुःख भइल बा तS ऊ औरत हाथ उठा के तपाक से उनके रोकि के कहे लागलि

"हमरा कौनो दुःख नइखे। हमार मरद जब हमरी साथे बा तS खइला पहिरला के दुःख कौन दुख हS? कमासुत नइखे आन्हर बा, लेकिन भीख माँगि के भी साँझि के ले आवेला तS हमरी लगे धरेला। दिनभर के दुखसुख हमसे बतियावेला, हमसे लड़ेला, झगड़ेला, कबो ऊ रिसिया जाला तS हम मनाइले, कबो हम रिसिया जाइले तS ऊ मनावेला। इहे नू मेहरारू के सुख हS। मरद अगर साथे होखे तS दुनिया के कौनो अइसन विपत नइखे जौना के मेहरारू काटि ना ले। मरद अगर निहंग होई, मेहरारू मेहनत मजदूरी कS के चाहे भीख भौन माँगि के ओहू के खियाके दिन काटि ली। लेकिन रुपया-पइसा, गहना-बिखो धन-दौलत सब भरले होखे अउरी मरद ओके मनबे ना करे तS मेहरारू का ई विपत काटल बड़ी मुश्किल होला। तहरी साथे जौन दू बरिस के दिन कटनीं ऊ विपत रहे, ना कटा पावल।,, कहत ऊ मेहरारू चलि देहलसि।

सुनि के नरेश सेठ शर्म से झुकि गइलें अउरी कहत चलि अइलें कि "सच में नारी महान होली।,,.

◆ ◆ ◆

सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा
कुशीनगर उ0प्र0

ए सुगना

ए सुगना! तू चेहरा चमका लऽ!
देर सबेर ई धोवहीं के पड़ी
अब ना काम ई टालऽ!
ए सुगना! तू चेहरा चमका ल ऽ!

माया घाम से चाम करियाइल,
करिया दाग हटा लऽ,
सत गुण के अवलेह पोत के,
भगती भस्म लगा लऽ!
ए सुगना..... !

भाव भगति में मन ना लागे,
संत शरण अपना लऽ,
संत शरण सत्संग से अपना,
मन के भरम मिटा लऽ!
ए सुगना.... !

मन के भरम हटाइ सुगनवा,
प्रभु से प्रीत लगा लऽ,
प्रभु से प्रीत के चंचल चित्त के,
तु अनुरागी बना लऽ!
ए सुगना..... !

बनि अनुरागी प्रभु चरण के,
अमर आनन्द के पा लऽ,
अमर आनन्द पाई 'रामसागर'
जिनगी अमर बना लऽ!
ए सुगना... !

◆ ◆ ◆

राम सागर सिंह
सुरत (गुजरात)

पियबऽ त मुअबऽ

ए घरी पूरा देश में राजनैतिक नजरिया से पियल आ पी के मुअला पर खूब गरम बहस हो रहल बा। हमरा राजनीति से का लेबे-देबे के बा? लेकिन ए बिसय के रामलाल जी के दिलचस्प विवेचना हमरा के उकसा दिहलें बा। अब सगरे दोष रामलाल पर मढ़ि के बिसय पर आवत बानीं। लेकिन रामलाल जी अइसन का कहि दिहनीं? रउरो जाने खातिर ब्यग्र हो गइनीं नू! त चलीं बात उन्हें से शुरू करत बानीं।

रामलाल जी के कहनाम बा कि जे आइल बा, ऊ जाई। जनम आ मरन के चक्कर से मुक्ति त भगवान विष्णुए दे सकत बाड़ें। हमनीं के साधना अब्बे एतना ऊँचाई पर नइखे पहुँचल कि सीधे भगवान विष्णु के सम्पर्क में रहीं जा ! अरे भाई ! जेकर जेतना लिखल बा, ऊ ओतने दिन ले रही, रउरा लाख माथा धुनि लीं। जेकर नइखे लिखल, ओकरा खातिर कइसन संवेदना? हमनी सनातनी हईं। हमनी किहाँ जनम आ मउअत दुनू उत्सवे के अवसर ह। जेकर नइखे लिखल ऊ आत्मा शरीर के चोला बदलि लेला। आत्मा त अमर ह। फिनु शोक आ संवेदना कइसन? मुआवजा कइसन? जब नइखे लिखल त गइल तय। अब ओ के बहाना असली-नकली का? बात की जड़ में जाईं। जेकरा जाए के रहे , ऊ त गइल। अब ऊ लौटि के ई थोरे देखे आई कि मुआवजा मिलल कि ना? नकली बनावे, बेंचे आ उन्हन के सहजोग - सहायता करेवालन के दण्ड मिलल कि ना? जब उन्हन का कवनो रूचि नइखे त सरकार का करी? लोग का सरकार के कोसला के का जरूरत बा? का ई जाएज बा? अरे भाई! सरकार के सहजोगे से त ईश्वर के लिखल साधे में मदद मिलल ह। ईश्वर के काम में सहजोग त सरकार के ईश्वरीय पुनीत कारज भइल कि ना? गइला से केहू के केहू रोकि पवले बा का? फिनु सरकार कइसे ऊ रोकि सकत बिया? आ अगर सरकार ई रोके के उतजोग करे के भूलाइलो करे त का ऊ ईश्वर के काम में बाधा डालल आ पाप ना होई? बिहार राज त धार्मिक उन्नति के दर्शन के केंद्र ईसा पूर्व के सैकड़न वरिसन से रहल बा। हमनी धार्मिक हईं आ ईश्वर के काम-काज में दखल ना देइले। एकर प्रशंसा केहू नइखे करत। अपना पलटू कुमार जी का कुर्सी लिखल बा त मिलि रहलि बिया। उनका ओकर जोगाड़ो मिलि जाला। सब ईश्वरीय ह। फिनु विरोधी काहें कूदि रहल बाड़ें? अरे भाई! जब बंदी ना रहे तब्बो मिलत रहे। तब त ऊ ठेका पर जा के लेबे परत रहे।

अब बंदी बा त घर ले आसानी से पहुँच रहल बा। एतना नागरिक सुविधा का जनसेवा ना ह? नकली - असली पहिले खुलो में रहे, अब बंदियों मे बा। का कहनीं? बंदी भइला से अब महंगा मिले लागल बा? अरे भाई, ए बंदी में, वैश्विक आर्थिक संकट में महंगाई कहाँ आ कवना देश में नइखे? आ जानि लीं, एसे बेरोजगार आ पढ़ल-लिखल जुवा, जुवतिन के रोजगार के नया अवसरो त मिलल बा ! आजु बेरोजगार जुवक, जुवती होम डेलिवरी करत बा लोग त ई रोजगार सृजन भइल कि ना? का सरकार के ई जिम्मेदारी ना ह कि ऊ पढ़ल-लिखल जुवा, जुवतिन के रोजगार दिआवे में प्रत्यक्ष भा परोक्ष मदतो ना करे? का ई रोजगार सृजन ना भइल? ई त सरकार के बड़प्पन बा कि एकर ढोल नइखे पीटत। फिनु हल्ला काहें? परिस्थिति त बदली ना। उहाँ की सरकार के इहे त सुशासनी सुविधा ह। समझीं, सरकार जनता के सेवा खातिर होखेले। जेकर जइसन आर्थिक स्थिति, ओही तरह के सेवा। सेवा खातिर सरकार कृत संकल्प होले।

सरकारी काम- काज में जवन होला, ऊ साधारन अदिमी का ना लउकेला आ जवन ना होला, ऊ अज्ञानतावश विरोधी खोजेलें। बा कि ना ई भेदभाव के नजर? अरे भाई , जवन नइखे लउकत ऊ देखे के मेहनतिए काहें करे के ह? पियबऽ त मुअबऽ !

रामलाल जी के विवेचन दिलचस्प बा नू? हम त ई कहिके आपन पीछा छोड़ा लिहनीं आपन पल्ला झाड़ लिहनीं हँ कि हमरा राजनीति से का मतलब? लेकिन एगो बात रामलाल जी से पुछला बिना ना रहल गइल। हम पूछि दिहनीं कि अचानके रउरा एतना दार्शनिक कइसे हो गइनीं आ एतना लग्गे आके मति बताईं, काहें कि रउरा मुँह से दारू के बास आ रहल बा।रामलाल जी सहजता से हँसिके बोलनीं- बढ़िया , विदेशी आ महंगा स्कॉच पी के आ रहल बानीं। आबकारीवाल भेजवा देलें। थानावाला त खाली व्हिस्की भेजेलें। आखिर हम कच्चा खेलाडी त हईं ना। सभके पोलपट्टी के मसाला तइयार राखिले। समय- समय पर ई मसाला ओ लोगन के देखा देइले। अइसहीं ऊ लोग थोरे मुफुत सेवा करेला। आजु ले आबकारी विभाग के कव छोट भा बड़ अधिकारी से लेके कर्मचारी पर कबहूँ कव गाज गिरल देखले भा सुनले बानीं का? लेकिन पुलिसवाला त अपनी बेवकूफी में पकड़ा जालें। हम चुप गइनीं। हमनीं भारतीय ए समय उदासीन होके चुप्पी सा लिहला के अभ्यासी हो गइल बानीं जा। रउरो हमरा सा बानीं नू?

◆ ◆ ◆

प्रशान्त करण

राँची

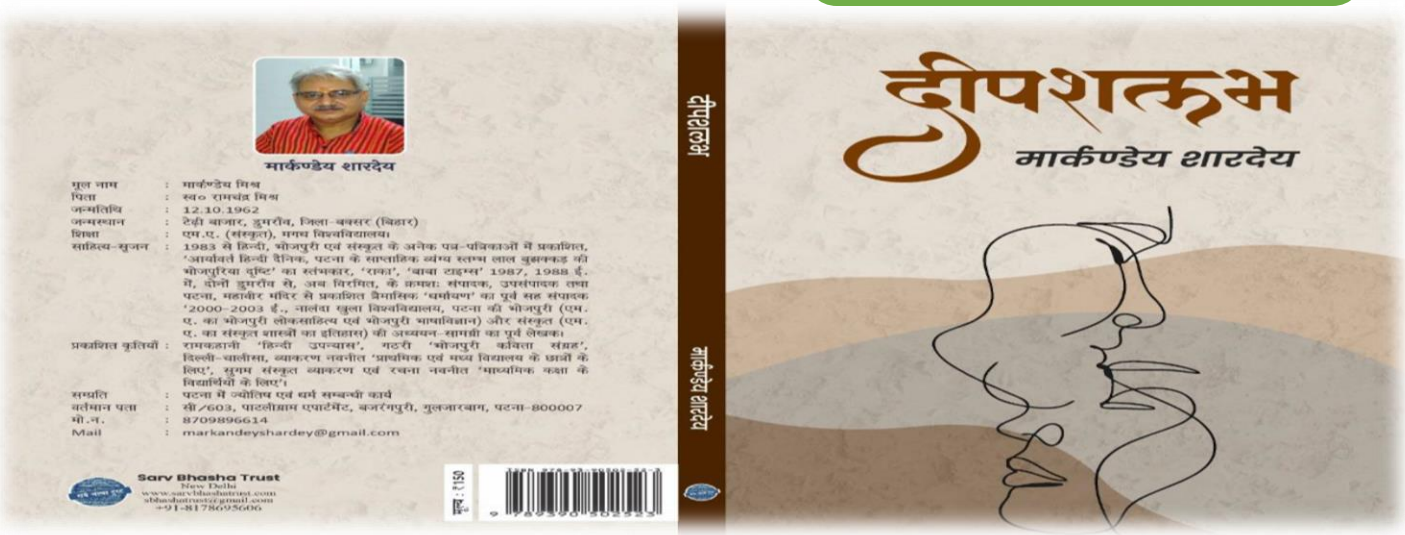

पाठकगण! एह बेर मार्कण्डेय शारदे जी के प्रबन्ध काव्य 'दीपशलभ' के सातवाँ आ आखिरी सर्ग प्रस्तुत बा। एमें नायक सुरनाथ शर्मा भिन्नचित्तते में बंगाल के अपना प्रान्त के नवाब आ मेहरुन्निसा के पति शेर अफगान के बलवाइयन से बचाव करsताड़ें आ अन्त में महाराज भर्तृहरि-लेखा संन्यास ग्रहण कs लेताड़े। संपादक.....)

सप्तम सर्ग

सभे के बुद्धि नइखे एक जइसन।
सभे के मन न बाटे एक अइसन।
सभे के सोच आउर काम अलगा।
सभे के शक्ति के परिणाम अलगा।

बहा दी प्रेम के केहू सुनिर्झर।
घृणा से बनी केहू सृष्टि-संहर।
चरण के काँट केहू झट निकाली।
घुसा दी हृदय में केहू भुजाली।

करी केहू सदा गुण के उजागर।
कही केहू सदा दूषण अधिकतर।
सुयश नृप शेर के सगरो सुनाइल।
धरा बंगाल के अति लहलहाइल।

करत नृप के रहन जन-जन बड़ाई।
रहे सुख-चैन से सभ ना रहे कवनो बुराई।
लफंगा-चोर के दुर्भाग्य आइल।
कुचालिन के हृदय में डर समाइल।

कहे के ना रहे चोरी-चमारी।
सुशासन से रहे सभ तुष्टिधारी।
रहे खुरफात बस, युवराज जन के।
मचावत रहन जा उत्पात चुपके।

कुछे दिन तक कइसहूँ ठहर पावसु।
प्रजा के हृदय में विद्रोह लावसु।
लहे ना त लवटिके जासु-आवसु।
बहुत पकड़ासु आउर भागि पावसु।

धनेश्वर-सुता से ना भइल शादी।
अतः युवराज भइलें बड़ फसादी।
मेहर सुख-चैन से पति-संग रहली।
सुधव अंगी अउर ऊ अंग रहली।

अचानक एक दिन नररक्त-पायी।
बनाके झुंड अइले सन् कसाई।
सफलता-संग शयनागार अइलें।
उड़ावे के मुड़ी तइयार भइलें।

तलक एगो तड़पि के बोलि देलस।
सभे में पाप का बा छाप लेलस?
अरे सूतल अवस्था में न मारऽ।
जगा के गर भले छप से उतारऽ।

सुनत सकुचा गइल सभकर करेजा।
सपदि विचलित भइल अति हिस्र भेंजा।
लिहल हथियार हाथे में तँवाइल।
नृपति के नीन अचके जा पराइल।

जगावे के परल ना जागि गइलें।
सभे तलवार लेले पास अइलें।
उठाके खड्ग नृप तइयार भइलें।
नयन अतिक्रोध से अंगार भइलें।

लड़त तलवार से तलवार जाके।
करे आवाज बहुते वेग पाके।
गिरे लागल मुड़ी कट तालफल अस।
गिरे लागल गतर आ गतर के रस।

पसरि के खून सगरो कीच कइलस।
बहे लागल भयानक रूप धइलस।
ठहरलें ना बहुत त भागि गइलें।
रहन जे मर्द ऊहे मृत्यु पइलें।

अकेले शेर सभ से मार कइलें।
बड़ा चातुर्य से संहार कइलें।
तनिक ऊहो घवाही भइल रहलन।
बहत तन से रक्त के द्वार पवलन।

दरद उनुका तनकियो ना बुझाइल।
रहे वीरत्व अबहीं बड़ भुखाइल।
चतुर्दिक् आँखि उनुकर घूमि आइल।
सिरिफ एगो रहे नर चुप लुकाइल।

कहे लगलें अरे तें आउ जल्दी।
नरक अब शेर से तें पाउ जल्दी।
लुकइला से बची ना प्रान सुन ले।
तनी शमशेर के पहिचान गुन ले।

अरे आपन सपन साकार कर ले।
लड़े के हृदय के तइयार कर ले।
करेजा छोट लेके शेर मरबे।
मरे के काम बा त देर करबे।

खुदे बंगेश ओही ठाँव गइलें।
घसेटत पलंग के निज पास अइलें।
कहे लागल जुगल कर जोरि सविनय।
महापापी हईं कुछ बा न संशय।

मरे के चाह के जल्दी पुराईं।
यमालय यातना खातिर पठाईं।
रुकीं मत शीघ्र आपन काज कर लीं।
बड़ा सौभाग्य रउरे हाथ मर लीं।

उठाइबि हम न आयुध खुद उठाईं।
झुकल गरदन बिया अलगा गिराईं।
गिराके खून के पवनार कर दीं।
सँघतियन के सँघे शव मोर धर दीं।

सुनत बंगेश के गरमी बुताइलि।
मनस् में चिन्त्य पऽ चिन्ता समाइल।
बड़ा ई शिष्ट लागत बा नराधम।
बुझाता भइल बाटे हृद्-व्यतिक्रम।

बुला पेंचे भइल बा दुष्टधर्मा।
बुला कर्मण्य हऽ होखल कुकर्मा।
तनी एकर सुनी पहिले कहानी।
असलियत का बिया हम आजु जानी।

प्रमद के वेग काहें दो उठेला।
न जाने शत्रु प्रति काहें बढ़ेला।
सुशायित रहीं त का ई जगवलस?
अधरमिन के धरम के ओर कइलस?

सही, ईहे मनुज के कंठ के स्वर।
बचवलस प्रान के बाटे कृपा बड़।
कइल उपकार के कइसे भुलाईं?
सुसरधा के सुमन कइसे चढ़ाई?

कहल ना जा सके ई का करी कब।
फँसाई जाल में मारी फँसबि जब।
सशंकित भइल कुछ अनुचित न बाटे।
सदा अन्तःकरण ई बात काटे।

'सुनल चाहीं बतावऽ आत्मपरिचय।
छिपा के सत्य के कहिहऽ न कतिपय'।
'सुनीं, नृप! नाम हऽ सुरनाथ शर्मा।
बँगाली विप्र कुल सच्चा सुधर्मा।

न हिसा करे खातिर हम समइलीं।
सचाई बिया हिसक-संग अइलीं'।
'कहऽ काहें निशाचर वेष धइलऽ?
स्वकुल के धरम के निःशेष कइलऽ'?

'बहुत लमहर बिया एकर कहानी।
सुनाईं के तरे हे भूप ज्ञानी!
रहे ई कामना सुचिताह पइतीं।
हृदय के बात आपन कुल्हि उगिलितीं।

मिलल ना कबो हमके योग अइसन।
जरे तन बोरसी के आग –जइसन।
अचानक साँझ खा हम आजु आके।
बइठलीं शम्भु-मन्दिर पास जाके।

मनःसंताप से बेचैन रहलीं।
बइठि एकान्त में हम मौन गहलीं।
पता ना रात कब खा पोढ़ होखल।
विहग के बन्द होखल वेद घोखल।

निकट नरकंठ गुप-चुप कुछ सुनाइल।
तबहियें होश भागल लौटि आइल।
सुनाइल ई कि रउरे जान लेबे।
विपक्षिन के सुखद उत्थान देबे।

चलल बाड़ें सभे तइयार होके।
बहुत धन प्राप्त कर ईमान खोके।
बचाईं के तरे ई भाव आइल।
कुछो ना एक पल हमरा बुझाइल।

तलक कहलीं कि हमहूँ साथ हो लीं।
रहबि हमहूँ सँगे ई बात खोलीं।
बहुत काठिन्य से तइयार भइलें।
कइसहूँ रिगिर पऽ आपन बनइलें।

पहरुअन से बचे के प्रश्न आइल।
सभे के भाल पऽ रेखा खिचाइल।
जुगुति तबतक सुघर झट से बतइलीं।
सभे के सोच के छन में हटइलीं।

बतवलीं चलीं जा दू दल बनाके।
यथा मारीच रघुवर के भगाके।
लियवले ले गइल अति दूर वन में।
दशानन के मिलल मौका विजन में।

सुनत ई बात सभका नीक लागल।
सफलता के सहज अनुमान जागल।
पहिल दल पहरुअन के दूर कइलस।
दुसरका सहज में भीतर समइलस।

समाके सफलता पऽ खुश भइल सभ।
बुला साम्राज्य-सुख झट पा गइल सभ।
शयनरत पलँग पऽ अपने के पइलें।
सराहत भाग्य के अनघा फुलइलें।

चुको मत दाँव सभके मन-समाइल।
जलदिये म्यान से तलवार आइल।
रहे ना शक्ति केहू में लड़े के।
रहे ना युद्धकौशल में अड़े के।

भला, रउरा सँघे के लड़ सकेला!
हजारन पऽ पड़बि भारी अकेला।
बड़ाई मिल्र तऽ करबे करेलें।
विपक्षी भी समर में पा डरेलें।

कबो विक्रान्त से आक्रान्त लड़िहें!
कबो वनराज सोझा स्यार अड़िहें!
जगाके ना रहे दमखम कि मारीं।
अतः सूतल निरखि गरदन उतारीं।

न हमरा नीति के उपयुक्त लागल।
करम ई क्लीवता से युक्त लागल।
रहाइल ना, डपटि के बोलि देलीं।
हृदय के भाव टटके खोलि देलीं।

'अरे! ई कापुरुष-अस काम करब?
शयनरत शेर के अइसहीं मरब?
जगाके मारि डालऽ नीक होई।
बहादुर बन लड़ऽ ई ठीक होई।

सुनत सभ स्तब्ध होके ठिठक गइलें।
सभे कुछ देर खातिर काठ भइलें।
तलक राउर तुरत ही नीन भागल।
अरिन के देखि तन में क्रोध जागल।

रहे तलवार सिरहाना उठइलीं।
लड़इयन के कतरि के ढेर कइलीं।
करेजा छोट ले ले जे रहल ऊ।
गिरत ढिमिलात भागल बच गइल ऊ।

हम्हीं जिन्दा इहाँ अब बचल बानी।
सजा दीं जे बुझा, हे भूप ज्ञानी'!
सुनत बंगेश कहलें, 'अब बताईं।
मिले के बात का बा कहि सुनाईं।

कहीं, परिवार में सभ बा सलामत!
कहीं केहू बढ़वले बा अदावत!
कहीं, भू-भवन के बाटे जरूरत!
कहीं, का धातु-रत्नन के जरूरत!

सुशासन में कमी कवनो बुझाता!
प्रजा के ओर से गड़बड़ सुनाता!
सहायक राज्य के बाड़ें सही सब!
ठगी चोरी रहजनी बढ़ल बा अब!

कहे के का रहल, अब खुल बताईं।
कहीं हम का करीं कवनो भलाई'?
जुगल कर जोरि के सुरनाथ कहलें।
विनय के रूप में ऊ मनुज रहलें।

'सुशासन में न कवनो खोंट बाटे।
व्यवस्थित काज राउर चलऽताटे।
प्रजा में भय न बा तवनो तरह के।
इहाँ अन्याय से केहू न डँहके।

न बानी शत्रुन से हमहूँ सतावल।
न बा परिवार में केहू दुखावल।
कृपा भगवान के सुख-चैन से सब।
न कुछुओ के कमी हमरा किहाँ अब।

न हम धन-धान्य माँगे के बिचरलीं।
न असरा में रवाँ हम पास अइलीं।
प्रजा राउर हईं तऽ धर्म बा कुछ।
भलाई के करेके कर्म बा कुछ।

भला ई विप्र कुछुओ दे सकेला!
मगर सुविचार आपन रख सकेला।
कहे के बस, इहे बा सुनीं नृपवर!
बढ़ल अब जा रहल विद्रोह के स्वर।

विपक्षी जन प्रजा के बरगलावसु।
प्रलोभन दे कुचालिन के बढ़ावसु।
न जानी के कहाँ के हऽ कुकरमी।
न जानी के कहाँ के हऽ अधरमी।

सभे के हम बुझाईं ला जे पागल।
इहे कारन जे हमरा से न सहमल।
घुमक्कड़ हम हईं, घूमत रहींला।
सदा ही आत्मचिन्तन-रत रहींला।

कबो केहू के कवनो शब्द पवलीं।
मथानी बुद्धि के आपन चलवनी।
बहुत जन सदा राउर यश उचारसु।
तबो कुछ हाड़ हलुआ में निरेखसु।

जरूरी बा विरोधिन के दबावल।
कुचालिन के हृदय में डर बढ़ावल।
न रिपु के छोट मानल जा सकेला।
न कवनो रोग छोड़ल जा सकेला।

खुदे बानी चतुर आ नीतिद्रष्टा।
सुशासन-अवयवन के विज्ञ स्रष्टा।
उहे कहलीं जे हमरा बा बुझाइल।
क्षमा करि देबि, कथनी ना सोहाइल।

अगर आज्ञा बिया तऽ जात बानी।
बनवले रहीं हरदम सावधानी'।
सुनत ई शेर में आदर फफाइल।
गला के हार उनुका कर रखाइल।

न शर्मा के कुछो के चाह रहुए।
न उनुकरा भोग के परवाह रहुए।
पुनः करजोरि कहलें, 'हे नृपतिवर!
न चाहीं कुछो भौतिक वस्तु सुखकर।

रखीं ई बा न हमरा काम लायक।
बने हम जा रहल संन्यास-धारक।
इहे सब साधना के हवें बाधक।
गृही जन भले मानसु सुखद साधक।

निवेदन करे बस, हम पास अइलीं।
हृदय के बाति सउँसे कहि सुनइलीं।
इहाँ से जा रहल बानी विजन में।
सुखी-उन्नत रहीं आ ख्यात जन में।

◆ ◆ ◆

मार्कण्डेय शारदेय

नाम के किस्सा

हम अपना नाम से बहुत परेशान रहेनीं। एतना कॉमन नाम भी ना होखे के चाहीं। रास्ता चलत कब केने से कोई पुकार दी, ए मनोज! चाहें रे मनोजवा...। अचकचा के तकला के बाद पता चलेला कि हमरा के नइखे बुलावल जात।

जहाँ जा हमरा नाम के एक दू आदमी मिलिए जाला। अभी जौन ब्रांच में बानीं उहाँ हमरे नाम के कैंटीन बॉय बाड़ें- मनोज तिवारी। गनीमत बा कि लोग उनकरा के तिवारी आ तिवारीजी कह के पुकारेला। मनोज कह के पुकारित त हमरा मुश्किल हो जाइत। रोकत रोकत मुँह से निकलिए जाइत, जी सर! ओने से फर्माइश आइत, चाय ले आओ।

बीच में तीन साल खातिर ट्रांसफर होके बरौनी चल गइल रहनीं। उहाँ एक महीना त सब ठीक रहे दूसरे महीना हमरे नाम के अकाउंटेंट ज्वाइन कइलें। हम पासिंग में रहनीं। दुनू आदमी के नाम मनोज। ऊ मनोज कुमार झा, हम मनोज कुमार वर्मा। बैंक में एगो गनीमत बा नाम से ना टाइटल से पुकारल जाला। फेर का पूछे के रहे। झा जी आ वर्माजी के जे वी जी कंपनी खुल गइल। दुनू आदमी मिल के ब्रांच दौड़ा देहनीं सन।...ई सब त बड़ा सुखद अनुभव बा। शेयर करे में मजा आवेला। लेकिन कभी कभार अनझटके में बड़ा गड़बड़ हो जाला। एक दिन सड़क पर चलत रहनीं बगल से एगो अजनबी आदमी गुजरलें, का हो मनोज! का हाल बा? हम अचकचइले आपन हाल बतवतीं तले नजर पड़ गइल। कान में उनकरा मोबाइल सटल रहे। समझ में आ गइल हमार हाल नइखन पूछत।

फेसबुक पर भी केतना मनोज होइहें एकर गिनती नइखे। खाली हमरा मित्र सूचि में आधा दर्जन मनोज बा लोग।

सिवान में घर बनवनीं, अयोध्यापुरी में। सामने एगो शंकर तुरहा के मकान बा। उनकर छोट बेटा के नाम मनोज ह। सबेरे सबेरे शंकर के माई टनक आवाज में पुकारस, रे मनोजवा! केने बाड़ीस रे s s! आवाज एतना टनक रहे कि सड़क पार करके हमरा घर में घुस जाव।बेटा हमार अइसन मौका चूकस ना। बोलते क्यों नही हैं पापा! तुरहिन दादी आपको बुला रही हैं।

एहीसे बेटा के नाम रखे के भइल त सोचनी कि अइसन यूनिक नाम रखीं कि ओकर जोड़ा ना लागे। विष्णु सहस्त्र नाम में से खोज के नाम रखनीं- उद्भव। अब बेटा अपना नाम के लेके परेशान रहेला। स्कूल में रहे त अक्सर झनकत आवे, ऐसा नाम आप रख दिए हैं! क्या मजाल कि कोई एकबार में समझ जाय।

अब त आपन नाम बतावेला त साथ में स्पेलिंग भी बता देबेला-U D B H A V ताकि कौनो कन्फ्यूजन ना रह जाव। एन आई टी पटना में पढ़त रहे त एगो फोटो खींच के हिंदुस्तान टाइम्स में भेजलस। फोटो ऑफ़ द डे में ओकर खिचल फोटो छपल। हमरा के फोन कइलस, पापा! मेरा खिचा फोटो अख़बार में छपा है। देखिएगा।

हिंदुस्तान टाइम्स खरीदनीं। फोटो बहुत सुंदर रहे। गंगा नदी के ऊपर उगत सूरज के फोटो। नीचे लिखल रहे- फोटो बाई उद्भव। उद्भव ना। मन हमार थोर हो गइल। एतना यूनिक नाम भी ना रखे के चाहीं। हम अपना कॉमन नाम से परेशान बानीं त ऊ अपना यूनिक नाम से। दुनू अतिए हो गइल।

भाग-2

एने सिवान में 'विकल्प' के तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन रहे। 'जागृती' के दीपक ऑर्गेनाइज कइले रहले। अपना कार्यक्रम में हमरा के जरूर बुलावेलें। हम उनकर संस्था के सदस्य त् ना हईं, मगर निमंत्रित रहेनीं। घरे आ के कार्ड दे गइलें। कह गइलें कि तीसरे दिन ओपन सेशन है। उस दिन इतवार है। आपकी छुट्टी रहेगी। जरूर आइयेगा।

कार्ड पढ़नीं त मुख्य मुख्य लोग में हमरो नाम छपल रहे। हम अचकचइनीं। फील गुड भइल। हमरा के एतना मान दिहलें। इतवार के लहकल गइनीं त फील बैड हो गइल। मनोज कुमार वर्मा मुजफ्फरपुर से पधारल

विकल्प से जुड़ल साथी रहलें आ उहे मंच संचालन करत रहलें। वक्ता में हमरो नाम रहे। जब हमार बारी आइल आ संचालक महोदय हमरा के निमंत्रित करे खातिर उठलें त हम चिल्ला के कहनीं, वक्ता का नाम मत लीजियेगा नहीं तो लोग समझेंगे कि खुद से खुद को निमंत्रित कर रहे हैं।ऊ हँसे लगलें। भाइयों, मैं अपने हमनाम को निमंत्रित कर रहा हूँ।

उनकर लिखल एगो किताब के विमोचन भी रहे। एगो प्रति हमरो मिलल। ले आ के घरे रख दिहनीं। बेटी जुलाई में बंगलोर से सिवान आइल त ओकर नजर किताब पर पड़ल। बड़ी खुश भइल। पापा! आप किताब छपवाये हैं! हम बुझल मन से कहनीं, ना बेटा! हम ना हईं। ई मुजफ्फरपुर के मनोज कुमार वर्मा हउअन।

कवि शायर लोग अपना नाम में उपनाम लगा लेबेला लोग। ई ख्याल हमरो मन में आइल रहे। एहूसे हमार नाम अनकॉमन हो जाइत। आठवाँ में पढ़त रहनीं त एगो कविता लिखनीं आ बाबूजी के साथे मंच पर चढ़ गइनीं।हमार बाबूजी हिंदी के अच्छा कवि रहनीं। सिवान के कवि सम्मेलन में आदर के साथ बुलावल जाईं। उहाँ के नाम में भी एगो उपनाम रहे। सिवान के साहित्यिक संसार में सभे उहाँ के वोही उपनाम से बोलावे। हमूँ एगो उपनाम जोड़ लिहनीं आदर्श।

मनोज आ मनोजवा सुनला से त अच्छा रहे आदर्श आ आदर्शजी सुनल। जे सज्जन (सज्जन कही कि दुर्जन) मंच संचालन करत रहलें,जब हमार नाम पुकारे के भइल त कहलें, अब मैं जिस कवि को आमंत्रित कर रहा हूँ उनका नाम है मनोज कुमार वर्मा 'आदर्श'। अब आजकल के लड़के कितने आदर्श होते हैं यह कोई बतानेवाली बात नही है। एतना व्यंग्यात्मक अंदाज में कहलें कि हमार सब आदर्श ओही बेरा हवा हो गइल। कान पकड़ लिहनीं कि अब कौनो उपनाम ना जोड़ेम। जौन नाम स्कूल में रजिस्टर्ड हो गइल जिंदगीभर उहे रही। लेकिन मन त मने ह। रह रह के हिलोर मारे। कविता त मंच पर चढ़े खातिर लिखाइल रहे, बेसिकली त हमार मन कथा कहानी में लागे। कुछ कहानी लिखाइल भी, मगर छपे के मुकाम तक ना पहुँचल। ना त एगो नाम सोचले रहनीं मनोज मन। 'मन' मने में रह गइल। अस्सी-पचासी के बीच कुछ जनवादी तेवर के कविता लिखनीं त 'हंस' में छपे खातिर भेजनीं। नाम लिखनीं-मनोज कृष्ण। ओ घरी ले जीवन में प्रभु के प्रवेश हो गइल रहे। सोचनीं कि जन्म जन्मांतर के साथी बाड़ें त उनकरे नाम साथे जोड़ लीं। हंस से कविता लौट के आ गइल। साथ में राजेंद्र यादव के हाथ के लिखल चिठ्ठी रहे। चिठ्ठी संभाल के रख लिहनीं आ नाम छोड़ दिहनीं। ओकरा बाद नाम में कुछु जोड़े घटावे के कोशिश छोड़ दिहनीं। जौन छपल तौन एही नाम से छपल।

साहित्यिक दुनिया में मनोज वर्मा नाम से ढेरे कवि कथाकार बा लोग। सोचनीं कि मनोज कुमार वर्मा हम अकेले ही होखेम। 'अभिव्यक्ति' में हमार कविता छपल त ओही अंक में हमरे नाम के एगो आउर कवि छपल रहलें। अबकी जननीं ह कि ऊ इहे मुजफ्फरपुरवाला मनोज कुमार वर्मा हउअन।

फेसबुक ज्वाइन कइनीं त उद्भव हमार प्रोफाइल बनावत रहे। कहलस, नाम में से कुमार हटा देते हैं? हम कहनीं, रहने दो जैसा है। काट छाँट मत करो। तब से सब ठीके चलत रहल ह कि एने देखनीं ह दिलीप भाई दिलीप भोजपुरिया से दिलीप पैणाली हो गइल बाड़ें। फेर हमार मन हिलोर मारता। सोचतनीं कि आपन नाम व. कु.मनोज कर लीं। जे पहिले से जानता से समझिये ली कि व. कु.माने का भइल। जे ना जानत होई ऊ अगर पूछिहें त हम बता देम, हमरा नाम के फुल फॉर्म भइल-वक्र कुटिल मनोज!

पंच सब के का राय बा?

◆ ◆ ◆

मनोज कुमार वर्मा
सीवान (बिहार)।

लखनलाल सेवा करे

बनवाँ में बाड़ें भाभी भइया,
लखनलाल सेवा करे।

खाए के कन्द-मूल फल लेइ आवे
सांँझो-बिहाने के लवना जुटावे
नदिया से पानी भरवइया,
लखनलाल सेवा करे।

पीछे-पीछे दिन भर लागल रहेलें
पहरा में राति भर जागल करेलें।
बाँटें दुख भरल समइया,
लखनलाल सेवा करे।

बाड़े बड़भागी गइले संहे संहे बनवाँ
हम चूकि गइनीं कचोटेला मनवाँ।
ई दिन देखवली मोर मइया,
लखन लाल सेवा करे।

प्रभु के खड़ाऊँ सिहासन पुजाई
महल तियागब हम कुटिया बनाई
करीले संङिरहा चटइया,
लखनलाल सेवा करे।

जग में हम भरत जइसे होइहें न त्यागी
राज-पाट अछइत बनब बएरागी
हमरो परान रघुरइया,
लखनलाल सेवा करे।

◆ ◆ ◆

माया शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक- सिरिजन
पंचदेवरी, गोपालगंज
बिहार

घुरहू आ उनकरा मेहरारू में जबरदस्त झगड़ा होत रहे। दुनू जने एक दोसरा से भिड़ल रहलें।घुरहू जोर से चिचिअइलें-"तू हमरा के का समझले बाड़ू? तू हमरा संगे कुक्कुर अइसन बेवहार करत बाड़ू।"घुरहू के मेहरारूओ चिचिया के कहली-"हम तहरा के कुकुर नइखीं समझत लेकिन भगवान खातिर भूँकल बंद करऽ।"

रामाशीष अपना मेहरारू के रेलगाड़ी में चढ़ा के अपना बाबूजी के तार भेजलें-"वाइफ लोडेड, अरेंज डिलीवरी।"

निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव

रूलिग पार्टी के नेता भोरे-भोरे अपना कुत्ता का साथे सैर करत रहस।विरोधी पार्टी के नेता ओने से गुजरत रहस। ऊ पूछे लगलें-"तू गदहा का साथे काहे घूमत बाड़ऽ?"रूलिग पार्टी के नेता खिसिया के कहलें-"भकचोंन्हर हवऽ का? लउकत नइखे कि हम अपना कुक्कुर के घुमावत बानीं।"विरोधी पार्टी के नेता-"हम रउरा से ना रउरा कुकुरा से पूछत रहीं।"

रामखेलावन स्वदेशी चीजन के अपनावे खातिर भाषन देत रहस आ लोगन से कहत रहस कि हमनीं का स्वदेशी चीज के ही इस्तेमाल करे के चाहीं।भीड़ में से केहू कहल, "ई नेताजी बड़का डपोरशंख बाड़न। इनकरा घर में अंगरेजी इस्टाइल के टॉयलेट लागल बा। ई स्वदेशी चीजन के वकालत करत बाड़न।"रामखेलावन कहलें-ई हमरा देशभक्ति पर सवाल खड़ा करत बाड़ें। ई हमरा घर में कमोड लागल देखले बाड़ें बाकिर ई थोड़े देखले बाड़न कि हम ओकर इस्तमाल देशी इस्टाइल में करीले ओपर चुकामुका बइठ के।"

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

नवकी कलम

देसवा ह सोने के चिरइया

देसवा ह सोने के चिरइया,
एकर शान बढइहऽ होऽ।
विश्वगुरु ई हवे पुरातन,
ई पहचान बचइहऽ होऽ।
देसवा ह सोने के चिरइया...

इहाँ लुटेरा डरलें डेरा,
ई इतिहास सुनावेला।
फूट डारि हुकूमत कइलें,
सगरी बाति बतावेलाऽ
भाईचारा अपना के,
जग में परचम लहरइहऽ होऽ,
विश्वगुरू ई हवे पुरातन,
ई पहचान बचइह होऽ
देसवा ह सोने के चिरइयाऽ.....

हरिहर बाग बगइचा शोभे,
रंग-बिरंगी फुलवारी।
भागीरथी करेली सिचन,
करे हिमालय रखवारी।
गांव-गांव तपसी वन हउए,
एकर मान बढ़इहऽ होऽ।
विश्वगुरू ई हवे पुरातन,
ई पहचान बचइहऽ होऽ।
देशवा ह सोने के चिरइयाऽ.....

कई धरम आ कई जाति,
पंथन से देश सुशोभित बा।
राजनीति के कउआ सन के,
ए पर नजर प्रलोभित बा।
खा जइहें सन समरसता के,
ओकनी के हुलकईहऽ होऽ
विश्वगुरू ई हवे पुरातन,
ई पहचान बचइहऽ होऽ
देसवा ह सोने के चिरइयाऽ.....

हिन्दू-मुस्लिम,सिख-इसाई,
सीमा पर हुंकारे लेंऽ
माई के जयघोष बोलि के,
दुश्मन दल के मारे लेंऽ
वीरन के धरती हउए ई,
माटी तिलक लगइहऽ होऽ
विश्वगुरू ई हवे पुरातन,
ई पहचान बचइहऽ होऽ
देसवा ह सोने के चिरइयाऽ.....

◆ ◆ ◆

रामेश्वर तिवारी 'राजन'
विजयीपुर, गोपालगंज

कहाँ बा ?

लोग के लोग से अब लगाव कहाँ बा!
पेड़ बड़हन बाकि अब छाँव कहाँ बा!

लाख कहे सभे कि बा़चल बा बाकि,
अपना गाँव में अब ऊ गाँव कहाँ बा!

नफ़रत,जलन, ईरखा भरल परल बा एतना,
कि मोहब्बत दिल में ठहरे ऊ ठाँव कहाँ बा!

काल्ह गरीब रहे ऊ अमीर बनल अस कि
ज़मीं पर पड़त अब उनकर पाँव कहाँ बा!

खुशी रहे फकीरी में भी अमीरी लेखा,
साँचो पहिले नियन अब अभाव कहाँ बा!

◆ ◆ ◆

के बा ?

जरुरत में काम अब आवत के बा!
बिना स्वार्थ के नेह लगावत के बा!

बात मुँहे पर कहे के जमाना बा ई
बुझउवल बुझत आ बुझावत के बा!

उमेद बेहिसाब रखल ठीक नइखे कि
अब दोसरा ला लोर बहावत के बा!

सभे सरवन बा माई बाबू के अपना,
त वृद्धाश्रम के दिन देखावत के बा!

मन के मइल मेटा जाव एही बहाने,
जग,परोजन अइसन करावत के बा!

कहे के त सभे आपने बा इहाँ बाकि
अपनापन अपना में जतावत के बा

शैलेन्द्र कुमार
कोलकाता

भारतवासी

भारतवासी जाने कब, सब होइहें एक जुट,
आज जेनिये देखीं ओनिये, मचल बाटे लूट।

हर काम में पइसा चाही, छोट होखे भा बड़,
छोट-छोट बाति के लेके, जाता लोगवा लड़।
ईष्या डाह भरल बा, ढ़ेर भीतरी कूट-कूट...
आज जेनिये देखीं ओनिये, मचल बाटे लूट।

आपन सब शक्ति देखावे में बाटे परेशान,
मुर्खन के ई हवे असलियत, हवे ई पहचान।
आपस मे मतभेद रहता, अस परल फूट...
आज जेनिये देखीं ओनिये,मचल बाटे लूट।

वाह-वाह कइला से बंधु, चली नाहीं काम,
इहे हाल रही त दुनिया, कइसे करी सलाम।
भारत के सर्वश्रेष्ठ बनावे, बदे बनाई गुट..
आज जेनिये देखीं ओनिये, मचल बाटे लूट।

◆ ◆ ◆

दीपक तिवारी
श्रीकरपुर,सिवान

नारी

नारी हई नदिया के धारा,
जवन मुड़ ना पावेली
अपने उद्गम पर दुबारा।
हँसत-खेलत, किलकत-उछलत,
दुसरे के जिनगी में सुख के रंग भरत,
चलेली बनके अविचल धारा।

कबो दुःखवन के पहाड़ मिलल,
कबो जंगल समान अँधियारा।
तबो ना ऊ घबरइली,
पोसली केतने जिनगी के,
कइली जगत उजियारा।

अनजान डगर पर खुद के सम्हरली,
बढ़त गइली अइसे जइसे बढ़े मइया गंगा के धारा।
कबो उनके झुकावल गइल,
कबो उनके तड़पावल गइल,
हरदम उनके सतावल गइल,
कबो दुसरे डगर देखावल गइल।
ए सब दुःखवन से होके बेखबर,
ऊ रहेली हरदम आला।

रहेली हरदम नरम सुभाव में,
कबो-कबो उफान में आवेली।
जब अति हो जाला त
आपन रौद्र रूप देखावेली,
पपियन के कऽ के संहार,
सब पाप बहा ले जावेली।

जब जानेली वहशी दुनिया में
केहू नइखे उनकर सगा-सम्बन्धी,
माई-बाप आ भाई।

सबके पलली अपनी कोखियां में,
देहली सृष्टि बनाई।
कहे "चमन देहाती" जनली जब
अकेले बानीं दुनिया में
गइली सागर में समाई॥

◆ ◆ ◆

पुरन्जय गुप्ता "चमन देहाती"
कुशीनगर (उत्तर प्रदेश)

अईसन रतिया फेरू नू आई

अइसन रतिया फेरु से आई
भोर भइल अब उठऽ हो ललना,
छोड़ि द तकिया गदा रजाई,
धरऽ जमीन पर आपन पउआँ,
अइसन रतिया फेरु से आई।

अँखिया तू खोलऽ ना सियाराम बोलऽ ना,
देखऽ जगावेली तोहार माई,
धरऽ जमीन पर आपन पउआँ,
अइसन रतिया फेरु से आई ।

देखि लऽ उगि घाम गइल बा,
गउआँ सोनहुला धाम भइल बा,
झामड़ा पर घेवड़ा बाटे फुलाइल,
देखऽ तितलियन के राज भइल बा,

उठऽ ना बछिया के जा धरि लावऽ,
नाहीं तऽ गइया हइ सानी ना खाई,
धरऽ जमीन पर आपन पउआँ,
अइसन रतिया फेरु से आई।

अब ढेर भइल दुलारल तोहके,
अब हम तोहके दुलारबि नाहीं,
अखिरी बेरि जगावत बानीं,
अब राजा कहि कहि जगाइब नाहीं,

उठबऽ तऽ उठऽ आ नाहीं त कहऽ,
लेके बेहाया के डंटा हम आईं,
धरऽ जमीन पर आपन पउआँ,
अइसन रतिया फेरु से आई ।

◆ ◆ ◆

ऋषि तिवारी
चकरी , सिवान , बिहार

भोजपुरी के जन बिसराईं

बृजेश शुक्ला (नेऊरा)
देवरिया

हिन्दी इंगलिस खूब पढ़ाईं, लइकन के अंगरेज बनाईं
बाकी एगो बात सुनीं, भोजपुरी के जन बिसराईं।

चाऊमिन बरगर रोज चबाईं, रेस्टोरेंट मे डिनर कराईं
अपना लाल के लिट्टी चोखा माँड़ भात के स्वाद बताईं।

टेबल लैम्प से करीं पढाई, चाहे बेदांतू से कोचिग कराईं
ढेबरी जरा के रोशन भइल ओ लोगन के गाथा गाईं।

घुमीं देश विदेश अकेले चाहे मित्र के साथे जाईं
जबे आईं अपना घरे माई बाबूजी के पाँव दबाईं।

सभे खुश रही अपना में कबो कवनो दुख ना आई
बाकी एगो बात सुनीं भोजपुरी के जन बिसराईं।

◆ ◆ ◆

कवन दिन देखावेलन विधाता

कुछ दिन पहिले के बात ह शायद अक्टूबर महीना के सबेर के बेरा रहे 6 चाहे 7 बजत होई हमरा चैनल गेट पर एगो 75 साल क बूढ़ा बाबा आवाज देहलन। उनकर आवाज सुन के हमरा घर के सबसे दुलरुवा अउर हमार जान गोली बाबू. (ई कुकुर हवन) खूब जोर जोर से भौंके लगलन। ओह बेरा हम ब्रश कइला के बाद गोली बाबू के साथ बइठल रहनीं। जब गोली भौंके शुरू कइलन त हमार बड़का भाई देखे गइलन गेट पर कि एही बेरा कवनो हित-नात त ना न आ गइलन। ई बात ए से दिमाग मे आइल काहे कि घर के लगिए गाड़ी के शोरूम बड़ी ढेर बा त रिश्तेदार लोग पहिले हमरा घरे आवेला, चाय-पानी के बाद शोरूम पर जाला लोग। अच्छा ई सब त होत रहेला मेन बात पर आवत बानीं। त जब हमार भाई गेट पर गइलन त बूढ़ा बाबा से पूछलन कि का बात बा? अब ऊ बूढ़ा बाबा का बतवलन का ना बतवलन भाई साहब धीरे से अपना कमरा में जा के अउर कुछ पइसा ले जा के उनका के दे देहलन, बूढ़ा बाबा आगे चल गइलन।

अब जब भाई साहब गेट पर से लौटलन त हमार बाबा जवन कि उत्तर प्रदेश पुलिस में दरोगा पद से रिटायर हवन अउर उनकर आदत ह पूछताछ के ऊ भइयवा के बोला के आपन जाँच पड़ताल शुरू क देहलन। बाबा के सब बात बता के जब भइयवा आइल घर में तब हमरा मुँह से निकल गइल कि का रे आवारा अब कौना आवारा के पइसा देबे गइल रहले ह? पहिले त भइयवा हमरा के आँख गरोड़े लागल फिर बतावे लागल कि अरे एगो बूढ़ा बाबा आइल रलहन, उनकर बेटा अस्पताल में भर्ती बा त पइसा मांगत रलहन त उहे हम उनका के कुछ पइसा दिहनीं हँ।

अब हमरा मन में कईगो सवाल आवे लागल काहे कि हमार स्वभाव भी कुछ कुछ हमरा बाबा जइसन ही बा एगो बात पर हजार गो सवाल पूछेवाला।

फिर हम अपना भइयवा से पूछनीं कि पुछले ह ना तू कि काहे उनकर बेटा अस्पताल में बा? तब भइयवा बतावे लागल कि अरे उनकर बेटा बिजली मिस्त्री ह। सरकारी कर्मचारी ओकरा के कुछ पइसा दे देलन स अउर ऊ सरकारी बिजली विभाग के कर्मी के काम क देला। एतना बोलला के बाद भइयवा के फोन बाजे लागल त ऊ कुछ 10 मिनट बात कइला के बाद हमरा से पूछलस कि अब ना पुछबे कि आगे के बतिया त बताव? हमरा हँसी आ गइल। फिर ऊ बतावे शुरू कइलस - भइल का रहे कि एक दिन पहिलवा छिटपुट बरखा भइल रहे अउर एक जगह बिजली के खम्भा से ही बिजली खराब हो गइल रहे। आजकल घन्टा भर भी बिजली ना रहे त लोग पागल हो जाता,ओह दिन भी लोग तेजी में सरकारी बिजली विभाग के कर्मचारी लोगन के फोन मिलावत रहे त कवनो कर्मचारी ही बूढ़ा बाबा के बेटा के भेजले रहल ह खम्भा पर चढ़ के बिजली बनावे अउर ओहिजे ओकरा के करेंट लाग गइल ह अउर उ खम्भा पर से गिर गइल बा। हम जब पूछनीं ह त बूढ़ा बाबा बतावे लगलहन कि "ए बाबू ई हमार एकलौता बेटा हवन। इनकर दू गो छोट बेटा बा लोग पढ़ाई कइला के बाद भी नौकरी ना लागल त अब घर चलावे खातिर इहे छोट मोट काम करेलन।"

अब जब अस्पताल में देबे खातिर पइसा ना रहल ह त हम अपना पतोह के बबुआ लगे छोड़ के के गाँवे-गाँवे घूमत बानीं, लोग कुछ त हमरा पर दया करी।

एतना कहला के बाद भइयवा चुप हो गइल। अब हमरा मन में इहे सवाल उठत रहे कि आखिर ए धरती पर अइसन केतना मजबूर लोग होई अउर उनकर दुःख दूर करे के आई? काहे कि बहुते सम्पन्न लोग बा लेकिन ओह लोगन के 1 रुपया भी शायदे कहीं नेक काम में लागत होई। विधाता भी कवन दिन देखावेलन? ई हमके ओह दिन समझ आइल। ऊ बूढ़ा बाबा के गाँवे-गाँवे घूम के अपना बेटा खातिर चंदा मांगे के पड़ गइल। ऊ बाबा लोगन के आगे आपन गमछा फइलावत होइहन बड़ा आस ले के ओकरा बाद भी कुछ लोग

उनका के मना क देत होइहन त का बीतत होई उनका ऊपर? ई सोच के ही करेजा काँप जाला अउर ना चाहला के बाद भी अँखियन से लोर झरे लागेला।

रउवा सभे से करजोर निहोरा बा यदि केहू अइसन मिले चाहे रउवा दुआरे आवे त ई कोशिश जरूर करीं कि ओह इंसान के कष्ट ना पहुँचे अउर जेतना हो सके ओतना सहयोग जरूर करीं।

◆ ◆ ◆

सुहानी राय

दहेज

दहेज नाम तीन अक्षर के जोड़ से बनल खाली एगो शब्द ना ह। बाकि ई अपने में अइसन वाक्य, लेख भा कहानी ह जे के नाम सुनला मातरो से एगो ग़रीब बाप डर के भयभीत हो उठेला।

आज ई खाली नाम मात्र के तीन अखर आ शब्द ना रहिके सउसे समाज पर कोढ़ के मोटरी बन गइल बा

अउरी एकर इतिहास अइसन बा जे ई दहेज शब्द के रोग खाली आपने भारत में ना लगभीर विश्व के कई देशन में आपन प्रभाव बिखेर लमहर रोग बन चुकल बा।

उर्दू भाषा में एहके जहेज कहल जाला। यूरोप, अफ्रीका अउर दुनिया के बाकी देशन में दहेज के पुरान आ लंबा इतिहास रहल बा।

ई दहेज के सही मायने से अर्थ समझल जाओ त् ई 'ऊ सम्पति होला जे विवाह के समय लड़की के परिवार के ओर से खुशी-खुशी अपना बेटी के होखेवाला परिवारवालन के नेग दियाला।

बाक़िर आज के आधुनिक समय में ई दहेज प्रथा, नाम से कुप्रथा बनके हर जगह फइल रहल बा।

पिछड़ा अउर मिडिल समाज में त ई रोग कीड़ा के समान भीतर ले घुस के भितरे-भीतर खोखला कर रहल बा आ अइसन नइखे जे खाली गरीबे आ सामान्य लोग, तमाम बुद्धजीवी समाजो आज ए दहेज नामक रोगाणु प्रथा के बढ़ावा दे रहल बा लो।

जे के परिणाम ई बा जे आजु भारत के हर तबका, हर परिवार में रउवा सभे के ई नजारा, समाचार सुनेके भा देखके मिल जाई।

खासतौर पे समृद्ध अउर मध्यम वर्ग में दहेज जादा से जादा बटोरे के होड़ लागल बा।

ई लोग एक दूसरे के प्रति ई भावना बनवले बाड़ें जा जे फलां आदमी के बेटा के अमुक दहेज मिलल त हमरा लइका के ओकरा से दुगुना मिले के चाहीं। बाकि एहिमें पिसत के बा?

हर बेटी के ऊ मजबूर लाचार बाप!

" ई जवना कहानी से रउआ सभे रूबरू होखे जा रहल बानीं, जवना के घटना बड़ा हृदय विदारक बा। अउर सैकड़ो अइसन घटना ए देवभूमि भारत में हर साल घटित हो रहल बा। बाकि हमनीं के ई सब सुनके खेद व्यक्त कइला के सिवा कुछ कर ना पावेनीं जा।"

हमरा गाँव के बगल में एगो गाँव बा बगही!

गाँव के नाम अजीब ना लागे के चाहीं। काहें कि अपना ए देश में गाँवन के अइसन-अइसन भाँति-भाँति के नाम रहल आम बात ह। बगहिएँ में एगो किसान बाड़ें 'खूबलाल'।

खूबलाल के अवस्था अनुसार नाहीं त खूबे गरीब कहल जा सकता आ नाहीं एकदम से मिडिल समाज में जगह दिहल जा सकता।

बाकि हँ परिवार के गुजारा बसर करे ला खेत से अनाज अउर आर्थिक परेशानी से निपटेला अपने के राजमिस्त्री के मजूरी से जोरले बाड़ें।

हँ, देखीं इयाद आइल, पिछला कुछ सालन से उनके जेठ बेटा (जवन गुजरात में मजूरी करेला) के सहायता से सब कुछ चलता।

उनका परिवार में उनके मेहरारू समेत दुइ बेटा आ एगो लड़की सरिता रहे, जे के बियाह इहे दु बरिस पहिले चार कोस दूर के गाँव परतापपुर में भइल रहे।

खूबलाल बेटी के बियाहे खातिर पहिले त खूब दौड़ धूप कइलें, बाद में प्रतापपुर में ही सुखी आ सपन्न परिवार में उनका मन योग्य लइका भेंटा गइल। बाक़िर ममिला इहाँ अटक गइल, जे लइका के बाउजी दहेज में मोट रकम के मांग करत रहलें।

कहे के मतलब ई जे लइका के जन्म से लेके अब ले पालन-पोषण में लागल खर्च के पाई-पाई जोड़ के मांग भइल रहे।

काहेकि लइका के पास आमदनी के अइसन कवनो जरिया ना रहे, जे ओतना रकम चुका दिहल जाउ। ऊ रकम मांगल गइल बाप के नाम पर.., बाप ओ गाँव के एगो इज्ज़तदार मास्टर रहलें आ अगल-बगल के दुइ चार गाँव में काफी लोग उनकर नेवतहरी रहलें।

मास्टर साहब के अइसन सोच रहे.....'जे जेतना ज्यादा दहेज लेहब ओतना ज्यादा ही यश फइली, आपन वर्चस्व बढ़ी।'

एतने ले ना, अभिन ऊपर से इहो मांग रहे जे तिलक में कुल्ह लकड़ी के समान, कुल्ह मशीनरी समान (जइसे- फ्रिज, कूलर, पंखा, टीवी, वाशिग मशीन) में कवनो प्रकार के कमी ना होखे के चाहीं।

खूबलाल दोराहा पर खड़ा रहलन। एक त ऊ छोड़ के हट जास भा दूसरा एतना दहेज देके बेटी के ब्याह कर देस। बड़ी असमंजस में पड़ गइल रहलें बेचारु। ई लइका छोड़ के हटे के विचार में ए से ना रहलें जे पिछला दुइ साल से गाँव-गाँव घूम-घूम के थक गइल रहलें।

लइका खोजत खोजत मन पाक गइल रहे आउर फेर ए लइका में दहेज के सिवा दूसर कवनो कमियो ना रहे। मतलब सब कुछ बड़ी अच्छा रहे।

बड़ी कुल्ह सोच विचार कइला पर एक दिन फेर ऊ गाँव के भाई पाटीदार के साथे मास्टर साहब के दुवरा पर पहुँचलन।

मास्टरो साहेब बड़ी अच्छा से सबकर आवभगत इज्ज़त सत्कार कइलें।

बात विचार भइल अउर सभे मिल के प्रयास कइल "जे दहेज में कुछ रहम कइल जाइत त बड़ी मेहरबानी होइत। काहेकि इनका पास ओतना भर देबे के क्षमता नइखे आ फेर आपु त बड़का आदमी बानीं।

पइसे ले सब ना नू होला? एगो गरीब भाई रउरा गोड़ पर गिरल बा। दया धर्म के नाते राउर कर्तव्य बनता जे ओकरा के उत्तम स्थान दीं, जे ओकरो भला हो जाव।

फेर बदले में त ई आपन सरिता जइसन गुणवान जान से बढ़ के दुलारी बिटिया आपके घर में लक्ष्मी बनाके भेजते बाड़ें।"

मास्टर साहेब त पहिले कुछ नाहीं नुकुँर कइलें बाकि बाद में लोग जब उनका बेटा के ऊपर चर्चा कइल, तब जाके एहिजा मास्टर साहेब पोल खुलत देख के रकम में कमी करे खातिर तइयार भइलें।

लेकिन साथ में कठोर हिदायत रहे, "जे ई बात गाँव में केहू के कानों-कान खबर ना लागे के चाहीं अउर नाहीं दहेज के समान में कवनो कमी होखे के चाहीं!"

मोटरसाइकिलो के मांग भइल जेइ पे खूबलाल खड़े ही गोड़ पर गिर गइलें। साथे गइल लोगो चिरौरी कइल लेकिन मास्टर साहेब भड़क के हाथ खड़ा कर लेहलें 'हम घर से द्रोही ना नू बनम!'

अंत में हार पाछ के खूबलाल के बड़का लइका तइयार भइल जे गाड़ी दियाई बाकिर अगर कहीं तनी कम बेस होइ त् रउआ हर्ज नरज सहि के रह जाइब।

सब बात विचार भइल फेर दुनु बगल से जवन भी रश्म रहे पूरा भइल। तब दुनू समधी अँकवार मिललें अउर बियाहे के दिन बार तय भइल।

खूबलाल शादी में लइका पक्ष के स्वार्थ पूरा करे भर में आपन पुश्तैनी जमीन के कुछ टुकड़ा बेंच पूरा कइलें।

भरपूर दहेज देइ अउर सरिता के मनजोग परिवार में हाथ पीला करा के सोचलें जे कान्हे पर से बड़ी भारी भीर कम भइल।

अपना जुरती से जादा दहेज चुकावत में अब तक के सारा जमा पूंजी आ जयजाद के क्षय भइला के बादो खूबलाल के कलेजा में ई सन्तुष्टि रहे, जे बेटी बड़ी सुखी आ सम्पन परिवार में बिया।

"लेकिन इंसान जवन सोचे आ उहे होखे त इंसान भगवान ना बन जाइत!"

शायद, सरिता के करम में ई लिखले ना रहे जे ऊ औरन के भाँति सुखी अउर सम्पन्न जीवन जियती।

शादी के छठमासो ना बीतल रहे जे सरिता के पति ओकरा साथ मारपीट कइल शुरू कर देहलस।

बात- बात पे हाथ उठा दिहल करे अउरी बेहूदापन से गाली दिहल करे। अउर जब सरिता पूछो जे गलती कवन रहे..??

त बिना जाने सुने अउर मारपीट करे लागे।

कहे जे तोर बाप भिखमंगा बा। गाड़ी के पूरा पइसा ना दिहलस। बगल में ही गरीब से गरीब लइकन के बढ़िया दाम के गाड़ी मिलल बा।

मास्टर साहेब बुद्धि के पनिपातर कबो अनभके में अपना औरत से कह देहले रहलें जे 'मोटरसाइकिलो के पूरा पइसा कहाँ मिलल दस हजार त इज्जत खातिर हमहीं लगवनीं।' बस इहे बात लेके मास्टर के कर्कशा मेहरारू सरिता के रोजे ताना कसी सुनावे, बेटा के चढ़ावे अउर बेटा बड़ कुपातर जवन माई कहे उहे करे!

पहिले त खाली उतने ले रहे बाद में धीरे-धीरे सभे हर बात पर ताना देबे लागल।

तनीमनी गलती ना होवे तले गाली दिहल शुरू कर देबे लोग। मास्टराइन कहे लागस 'तोर बाप भिखमंगा बा आंगने में ससुर के कुछ न दिहलस समाजके सोझा सगरी इज्जत के माटी मिल गइल.....।'

तरह तरह के बात अउर झगड़ा। बेचारी सरिता डरे कपस के घर में धीरे-धीरे सिसिक सिसिक रोवे जे ओहू खातिर मत मारे झगड़े लागो लोग।

कुछ दिन तक त चुप रहि सुनलस, रोवलस बाकि जब आँख के पानी मरे लागल अउरी बात बर्दास्त से बाहर होखे लागल तब उहो मुँह खोले लागल। शायद देखल जाउ त ऊ कवनो बुरा नाहिए कइलस काहेकि अपना किहाँ एगो खिस्सा कहल जाला कमजोर से बेर-बेर अझुराइब त ऊ कहिया ले खेपी मार ना त् गारियो से गइल! पलट के गरियाई त जरूर! परन्तु सुकुमार अकेली सरिता एहिजा अउरी दबोचा गइली। जब तनिक कवनो बात पर मुँह खोलस भा चाहे जबाब देस कि जेकरा बुझावे हाथ उठा देव। आइल दिन कवनो ना कवनो बात के लेके मार देव लोग भा ओहसे ना होखे त दुइ चार गो झूठ साँच जोड़ के मर्द के हाथे पिटवावल जाउ।

बाक़िर ऊ सब कुछ सह के अपना माई बाप से कबो कुछु ना बतावे, जे ओकरा साथे का घटना घट रहल बा। काहेकि ओके पता रहे, जे अगर ए बात के खबर बाबूजी चाहे माई के लागी त ऊ लोग टूट जईहें।

एक त बाबूजी आपन सब कुछ बेंच बिला के ओकर शादी कइले रहलन, बढ़िया घर परिवार देख के अउर जब ई समाचार सुनिहें त उनका ऊपर दुःख के पहाड़ ही गिर पड़ी।

एहसे सरिता सब कुछ खुदे सह के माई-बाउजी से ए बारे में कुछ चर्चा ना करे। पर कहल जाला माई त माई ही होवेली। ओकर माई हमेसा ओकर कुशल-मंगल पूछे ला फोन करो अउर जे दिन लड़ाई झगड़ा अधिक भइल रहे ओ दिन सरिता के बोली सुनिए के ओकरा शंका होखे जे कुछ बात जरूर बा। बाकि सरिता आपन होशियारी में माई के फुसला के टाल देव।

परन्तु फेर एक दिन अइसे ही बात करते में माई ताड़ गइली जे ओकर बेटी अभिये के रोवल बिया कवनो दिक्कत जरूर बा ऊ ससुरा में खुश नइखे।'

कारण पुछली त सरिता 'जइसन नाम ओइसने गुण, केतना दिन छुपा के रहि जासु।

'अच्छा जेकर विचार उदार होला, मन साफ होला। जे दूसरा के भलाई ही सोचत होखे अउर ओकरा बादो ओकरा साथ थोडकी बुरा व्यवहार होखे भा गलती होखे त् ऊ आदमी ढेर विचलित हो उठेला।' इहा त् सरिता निश्छलता के मूर्ति मतलब कहिया ले अपना के रोक के राखस कहिया ले अपना के टूटे से बचा राखस, महतारी के सोझा भावना पर ना काबू रख पवली अउर बिलख पड़ली।

अगिला दिने भरोहीं खूबलाल अपना भाई भयवदी के साथे मास्टर के दुवारे पहुँचले। सभे मिलके मास्टर साहब के जबदस्त भेंवल, उनकर खूब फजीहत भइल। मास्टर त् आपन हाथ ही उठा लिहलें जे हमर का दोष हम त् दिन भर इस्कूल रहिले, कुछो मालूम नइखे। खूबलाल डरा धमका के अपना घरे चलि अइलें। लेकिन मास्टर के परिवार ए बात पर अउरी तिलमिला उठल बाकिर डरे जुबां से कुछ बाहर ना निकलल। भितरे-भीतर सभे घुट पी के रहि गइले। ई ख़बर गाँव में कानो-कान आग जइसन फइल गइल। दुइ चार दिन नरम रहे लेकिन मास्टराइन अपना आदत से बाज ना अइली। धीरे-धीरे फेर शुरू कर दिहली। खूबलाल अउर गाँव के लोगन के धमकी से ई फायदा भइल जे सरिता के पति हाथ उठावल बन्द कर दिहलस, जइसे ओकरा सास के बड़ा जोर के धक्का लागल। ऊ चाहत रहे जे हमर बेटा हर बात पर एकरा के मारपीट करत रहे।

कुछ दिन बाद बुढ़िया एगो नया षडयंत्र रचे लागलि। कुछ अइसन कुछ होखे जे बेटा फेर से तंग कइल शुरू करो अउर हमरा उपरवाँती मारो - पिटो। जवन हम कहीं उहे करो।

एक दिन साँझि में सरिता के ऊपर लमहर लांछन लागल, अउर ई लांछन सुनिए के सरिता मुँह के बल गिर गइली। कई घण्टा अधमुँहे पड़ल रह गइली। ई लांछन रहे उनका चरित्र पर! कवनो स्त्री के चरित्र ओकर बेशकीमती अनमोल गहना होला अउर उहे गहना ओकरा से उतार लिहल जाउ त ओकर कवनो अस्तित्व ना रहि जाला। सरिता पर का बीतल होई ई अनुमान लगावल कठिन होइ। ससुराल से मिलल ए चोट के सरिता बर्दास्त ना कर पइलस अउर ओहि दिन घर छोड़ के बाप के घर चल गइल। एह बात पर दुनू परिवार में अउर कहासुनी भइल।पंचायत बइठल सब मान-मनउवल भइल ओहके बाद मामला लगभग शांत भइल। फेर सरिता के पति आइल अउर ओकरा के विदाई करा ले गइल।

ससुराल जाएके सरिता के रत्ती भर मन ना रहे बाकिर बाबूजी, माई के बात उनकर इज्जत पर धब्बा ना लागो ए डर से ससुराल जाए बदे तइयार भइली।

माई विदा करत कहली 'बेटी का करबु अब त तोहर गुजर बसर ओहिजा नु बा, चाहे करम में जवन लिखल होखे! गलती त होइए गइल बा जेइके अब कवनो सुधार नइखे!' अउर दुःख विपत लागले ना रहेला भगवान चहिहें त तोहार दिन लौटी। एको गो बाल बच्चा होखते सबकर मति बदल जाई। तूही सबका खातिर नीमन हो जइबू।'

माई के ई बात ओकरा दिल पर बइठ गइल अउर इहे सन्तोषे ससुराल आ गइल।

दुइ ढाई महीना बीतल। लागल जे अब सब कुछ सुधर गइल, ममिला ठंड पड़ जाई। ओकरा नइहरो के सभे निश्चिन्त भइल जे अब सरिता बस जइहें। रोज के भाँति सरिता के माई अपना बेटी के हाल समाचार ला फोन कइली बाकि बन्द आइल। त् सोचली जे कवनो काम में होई, साँझि के बात करम। साँझियो में बन्द! बेचैन हो गइली जे तबियत नइखे नु खराब भइल। दमाद के फोन कइली त् पता चलल जे तनी बोखार सोखार लागत बा।

अगिला दिन फेर कइली लेकिन अबो बन्द ही बतावे। उनका मन मे तरह-तरह के शंका उठे लगाल। मन में बड़ी बेचैनी जागल। ऊ दिन कइसहूँ खेपली आ अगिला दिन भोरहीं खूबलाल के भेजली। खूबलाल अइलें त मास्टर के मुँह उतरल रहे। उनका पूछते ही मास्टर तमतमाइल कहलें 'अइसने बेटी जन्मवलऽ अउर रहन देहलऽ जे घर कवनो बात होता त घर छोड़ के भाग जातिया।'

सुनके खूबलाल के मुख करिया हो गइल। लागल जे झाई मार दी बाकि अपना के संयत करत कहलें जे सरिता त हमरा इहाँ गइल ही नइखे? मास्टर खिसिया के भड़क गइलें। भीतर से उनकर मलिकाइन बोल पडली 'अरे हम कहनीं त् दोषी हो गइल रहनीं। हम पहिले ही जानत रहनीं जे इनकर बेटी बिगड़ैल बिया।'

हकासल पियासल खूबलाल घरे अइलें। अपना मालिकाइन से बात सुनवलें। सुनते ही उनकर मालिकाइन भड़कली..। ऊ विश्वास ही ना करस जे उनके बेटी अइसन कर सकेले। सरिता के माई के लागल जे एहिमें कुछ ना कुछ जरूर घात बा। दुनू आदमी पुलिस थाना गइल लोग।

मास्टर के परिवार ऊपर मामला लिखावल लोग। पुलिस तफ्तीश कइलस त मास्टर सीधे उलट गइलें 'जे हम खुदे अपना बहू के बहकावे अउर ओकर गुमसुदगी के मामला दर्ज करावे जातानीं।'

जाँच जारी रहे बाकि कवनो सुराग ना मिले।

गाँव देहात में एगो खीसा कहल जाला "जब पाप इंसान के माथे चढ़ि नाचे लागेला त ऊ खुदे मौगत जोहे लागेला।"
एक दिन सरिता के पति नशा में थाना पहुँचल अउर सारा कहानी दरोगा से रोइ-रोइ सुना दिहलस।

उहे बतवलस जे ओ दिन भी ऊ दारू पी के घरे आइल रहे। ओ दिन माई से सरिता के कवनो बात के बतकही भइल रहे। ओहि खिसि माई हमर पियला के फायदा उठा के हमके भड़का दिहली। सरिता के चरित्र पर गलत सलत बात कहिके हमरा हाथे सरिता के मार खियवली। ओहि बीचे हमरा से एगो गलती भइल हम सरिता के गर्दन पकड़ लिहनी अउर बुझाइल ना उनके प्राण निकल गइल। हम दुइ आदमी के खून कइनीं। हम दोषी बानीं, हम अपना मेहरारू और अपना बच्चा के मरले बानीं।

अउर रोवे लागल.....।

रोवत रोवत कहे जे 'अबे हप्ता दिन पहिले त सरिता हमके खुशखबरी सुनवली जे हम बाप बनेवाला बानीं! बाकि हमर माई हमर बसल घर उजाड़ दिहली।'

इहो बतवलस जे जब सरिता मर गइली त ओहि राते सभे मिल के ओकरा के बगीचा के जमीन में दबा दिहलें।

एक दिन साँझि में सरिता के ऊपर लमहर लांछन लागल, अउर ई लांछन सुनिए के सरिता मुँह के बल गिर गइली। कई घण्टा अधमुँहे पड़ल रह गइली। ई लांछन रहे उनका चरित्र पर! कवनो स्त्री के चरित्र ओकर बेशकीमती अनमोल गहना होला अउर उहे गहना ओकरा से उतार लिहल जाउ त ओकर कवनो अस्तित्व ना रहि जाला। सरिता पर का बीतल होई ई अनुमान लगावल कठिन होइ। ससुराल से मिलल ए चोट के सरिता बर्दास्त ना कर पइलस अउर ओहि दिन घर छोड़ के बाप के घर चल गइल। एह बात पर दुनू परिवार में अउर कहासुनी भइल।पंचायत बइठल सब मान-मनउवल भइल ओहके बाद मामला लगभग शांत भइल। फेर सरिता के पति आइल अउर ओकरा के विदाई करा ले गइल।

ससुराल जाएके सरिता के रत्ती भर मन ना रहे बाकिर बाबूजी, माई के बात उनकर इज्जत पर धब्बा ना लागो ए डर से ससुराल जाए बदे तइयार भइली।

माई विदा करत कहली 'बेटी का करबु अब त तोहर गुजर बसर ओहिजा नु बा, चाहे करम में जवन लिखल होखे! गलती त होइए गइल बा जेइके अब कवनो सुधार नइखे!' अउर दुःख विपत लागले ना रहेला भगवान चहिहें त तोहार दिन लौटी। एको गो बाल बच्चा होखते सबकर मति बदल जाई। तूही सबका खातिर नीमन हो जइबू।'

माई के ई बात ओकरा दिल पर बइठ गइल अउर इहे सन्तोषे ससुराल आ गइल।

दुइ ढाई महीना बीतल। लागल जे अब सब कुछ सुधर गइल, ममिला ठंड पड़ जाई। ओकरा नइहरो के सभे निश्चिन्त भइल जे अब सरिता बस जइहें। रोज के भाँति सरिता के माई अपना बेटी के हाल समाचार ला फोन कइली बाकि बन्द आइल। त् सोचली जे कवनो काम में होई, साँझि के बात करम। साँझियो में बन्द! बेचैन हो गइली जे तबियत नइखे नु खराब भइल। दमाद के फोन कइली त् पता चलल जे तनी बोखार सोखार लागत बा।

अगिला दिन फेर कइली लेकिन अबो बन्द ही बतावे। उनका मन मे तरह-तरह के शंका उठे लगाल। मन में बड़ी बेचैनी जागल। ऊ दिन कइसहूँ खेपली आ अगिला दिन भोरहीं खूबलाल के भेजली। खूबलाल अइलें त मास्टर के मुँह उतरल रहे। उनका पूछते ही मास्टर तमतमाइल कहलें 'अइसने बेटी जन्मवलऽ अउर रहन देहलऽ जे घर कवनो बात होता त घर छोड़ के भाग जातिया।'

सुनके खूबलाल के मुख करिया हो गइल। लागल जे झाई मार दी बाकि अपना के संयत करत कहलें जे सरिता त हमरा इहाँ गइल ही नइखे? मास्टर खिसिया के भड़क गइलें। भीतर से उनकर मलिकाइन बोल पडली 'अरे हम कहनीं त् दोषी हो गइल रहनीं। हम पहिले ही जानत रहनीं जे इनकर बेटी बिगड़ैल बिया।'

हकासल पियासल खूबलाल घरे अइलें। अपना मालिकाइन से बात सुनवलें। सुनते ही उनकर मालिकाइन भड़कली..। ऊ विश्वास ही ना करस जे उनके बेटी अइसन कर सकेले। सरिता के माई के लागल जे एहिमें कुछ ना कुछ जरूर घात बा। दुनू आदमी पुलिस थाना गइल लोग।

मास्टर के परिवार ऊपर मामला लिखावल लोग। पुलिस तफ्तीश कइलस त मास्टर सीधे उलट गइलें 'जे हम खुदे अपना बहू के बहकावे अउर ओकर गुमसुदगी के मामला दर्ज करावे जातानीं।'

जाँच जारी रहे बाकि कवनो सुराग ना मिले।

गाँव देहात में एगो खीसा कहल जाला "जब पाप इंसान के माथे चढ़ि नाचे लागेला त ऊ खुदे मौगत जोहे लागेला।"
एक दिन सरिता के पति नशा में थाना पहुँचल अउर सारा कहानी दरोगा से रोइ-रोइ सुना दिहलस।

उहे बतवलस जे ओ दिन भी ऊ दारू पी के घरे आइल रहे। ओ दिन माई से सरिता के कवनो बात के बतकही भइल रहे। ओहि खिसि माई हमर पियला के फायदा उठा के हमके भड़का दिहली। सरिता के चरित्र पर गलत सलत बात कहिके हमरा हाथे सरिता के मार खियवली। ओहि बीचे हमरा से एगो गलती भइल हम सरिता के गर्दन पकड़ लिहनी अउर बुझाइल ना उनके प्राण निकल गइल। हम दुइ आदमी के खून कइनीं। हम दोषी बानीं, हम अपना मेहरारू और अपना बच्चा के मरले बानीं।

अउर रोवे लागल.....।

रोवत रोवत कहे जे 'अबे हप्ता दिन पहिले त सरिता हमके खुशखबरी सुनवली जे हम बाप बनेवाला बानीं! बाकि हमर माई हमर बसल घर उजाड़ दिहली।'

इहो बतवलस जे जब सरिता मर गइली त ओहि राते सभे मिल के ओकरा के बगीचा के जमीन में दबा दिहलें।

एक दिन साँझि में सरिता के ऊपर लमहर लांछन लागल, अउर ई लांछन सुनिए के सरिता मुँह के बल गिर गइली। कई घण्टा अधमुँहे पड़ल रह गइली। ई लांछन रहे उनका चरित्र पर! कवनो स्त्री के चरित्र ओकर बेशकीमती अनमोल गहना होला अउर उहे गहना ओकरा से उतार लिहल जाउ त ओकर कवनो अस्तित्व ना रहि जाला। सरिता पर का बीतल होई ई अनुमान लगावल कठिन होइ। ससुराल से मिलल ए चोट के सरिता बर्दास्त ना कर पइलस अउर ओहि दिन घर छोड़ के बाप के घर चल गइल। एह बात पर दुनू परिवार में अउर कहासुनी भइल।पंचायत बइठल सब मान-मनउवल भइल ओहके बाद मामला लगभग शांत भइल। फेर सरिता के पति आइल अउर ओकरा के विदाई करा ले गइल।

ससुराल जाएके सरिता के रत्ती भर मन ना रहे बाकिर बाबूजी, माई के बात उनकर इज्जत पर धब्बा ना लागो ए डर से ससुराल जाए बदे तइयार भइली।

माई विदा करत कहली 'बेटी का करबु अब त तोहर गुजर बसर ओहिजा नु बा, चाहे करम में जवन लिखल होखे! गलती त होइए गइल बा जेइके अब कवनो सुधार नइखे!' अउर दुःख विपत लागले ना रहेला भगवान चहिहें त तोहार दिन लौटी। एको गो बाल बच्चा होखते सबकर मति बदल जाई। तूही सबका खातिर नीमन हो जइबू।'

माई के ई बात ओकरा दिल पर बइठ गइल अउर इहे सन्तोषे ससुराल आ गइल।

दुइ ढाई महीना बीतल। लागल जे अब सब कुछ सुधर गइल, ममिला ठंड पड़ जाई। ओकरा नइहरो के सभे निश्चिन्त भइल जे अब सरिता बस जइहें। रोज के भाँति सरिता के माई अपना बेटी के हाल समाचार ला फोन कइली बाकि बन्द आइल। त् सोचली जे कवनो काम में होई, साँझि के बात करम। साँझियो में बन्द! बेचैन हो गइली जे तबियत नइखे नु खराब भइल। दमाद के फोन कइली त् पता चलल जे तनी बोखार सोखार लागत बा।

अगिला दिन फेर कइली लेकिन अबो बन्द ही बतावे। उनका मन मे तरह-तरह के शंका उठे लगाल। मन में बड़ी बेचैनी जागल। ऊ दिन कइसहूँ खेपली आ अगिला दिन भोरहीं खूबलाल के भेजली। खूबलाल अइलें त मास्टर के मुँह उतरल रहे। उनका पूछते ही मास्टर तमतमाइल कहलें 'अइसने बेटी जन्मवलऽ अउर रहन देहलऽ जे घर कवनो बात होता त घर छोड़ के भाग जातिया।'

सुनके खूबलाल के मुख करिया हो गइल। लागल जे झाई मार दी बाकि अपना के संयत करत कहलें जे सरिता त हमरा इहाँ गइल ही नइखे? मास्टर खिसिया के भड़क गइलें। भीतर से उनकर मलिकाइन बोल पडली 'अरे हम कहनीं त् दोषी हो गइल रहनीं। हम पहिले ही जानत रहनीं जे इनकर बेटी बिगड़ैल बिया।'

हकासल पियासल खूबलाल घरे अइलें। अपना मालिकाइन से बात सुनवलें। सुनते ही उनकर मालिकाइन भड़कली..। ऊ विश्वास ही ना करस जे उनके बेटी अइसन कर सकेले। सरिता के माई के लागल जे एहिमें कुछ ना कुछ जरूर घात बा। दुनू आदमी पुलिस थाना गइल लोग।

मास्टर के परिवार ऊपर मामला लिखावल लोग। पुलिस तफ्तीश कइलस त मास्टर सीधे उलट गइलें 'जे हम खुदे अपना बहू के बहकावे अउर ओकर गुमसुदगी के मामला दर्ज करावे जातानीं।'

जाँच जारी रहे बाकि कवनो सुराग ना मिले।

गाँव देहात में एगो खीसा कहल जाला "जब पाप इंसान के माथे चढ़ि नाचे लागेला त ऊ खुदे मौगत जोहे लागेला।"
एक दिन सरिता के पति नशा में थाना पहुँचल अउर सारा कहानी दरोगा से रोइ-रोइ सुना दिहलस।

उहे बतवलस जे ओ दिन भी ऊ दारू पी के घरे आइल रहे। ओ दिन माई से सरिता के कवनो बात के बतकही भइल रहे। ओहि खिसि माई हमर पियला के फायदा उठा के हमके भड़का दिहली। सरिता के चरित्र पर गलत सलत बात कहिके हमरा हाथे सरिता के मार खियवली। ओहि बीचे हमरा से एगो गलती भइल हम सरिता के गर्दन पकड़ लिहनी अउर बुझाइल ना उनके प्राण निकल गइल। हम दुइ आदमी के खून कइनीं। हम दोषी बानीं, हम अपना मेहरारू और अपना बच्चा के मरले बानीं।

अउर रोवे लागल.....।

रोवत रोवत कहे जे 'अबे हप्ता दिन पहिले त सरिता हमके खुशखबरी सुनवली जे हम बाप बनेवाला बानीं! बाकि हमर माई हमर बसल घर उजाड़ दिहली।'

इहो बतवलस जे जब सरिता मर गइली त ओहि राते सभे मिल के ओकरा के बगीचा के जमीन में दबा दिहलें।

ओहि रात में पुलिस के टीम बगीचा में पहुँचल। जाँच पडताल भइल त जमीन से सरिता के लाश मिलल। पूरा मास्टर परिवार के गिरफ़्तारी भइल।

जब ई खबर खूबलाल के मिलल त उ टूटल वृक्ष के जइसन दहाड़ मार के मुखड़िया गिर पड़लें।

उनका औरत के पहिले से ही मन में शंका भइल रहे अउर ऊ शंका सच हो गइल।

एगो निरपराध बेटी के जान तनिक सा रकम अउर झूठ के इज्जत खातिर बरबस ही ले लिहल गइल। खूबलाल बेटी के लाश देखि के विलाप करे लगलें अउर ओकर लाश पकड़ के भोजपुरी गाना के कुछ लाइन कहलें, जे के सुनके उहाँ मौजूद लोगन के कलेजा दहल गइल..

"जनती जे जारल जइबू आग में दहेज के

पाप नाहीं करती हो बेटी ससुरा में भेज के..!"

अब सवाल आवता जे.....

'का मास्टर परिवार जइसन लोभियन के जेल में डाल के गिरफ्तार कर दिहला भर से खूबलाल जइसन बाप के सरिता जइसन लड़की वापस मिल जइहें ? जे ओइसन निर्लजन के सरिता जइसन बहू फिरू मिल जाई ?

एगो सरकारी आँकड़ा बा जे भारत प्रदेश में दहेज के कारण औसतन हर एक घण्टा में एक लड़की के मौत हो जाला तथा राष्ट्रीय अपराध रिकॉड ब्योरो के आँकड़ा के हिसाब से हिंदी भाषी राज्य सबसे आगे बा। जे के कारण भारत में आज भ्रूण हत्या अपना चरम पर बा। सरकार कानून त बनावेला पर ओकरा बनला के बाद हमनीं के समाज ओह क़ानून के नंगा करके छोड़ देला।

'का सचमुच इहे मोल बा बेटी के हमनीं के संस्कृति में? इहे सिखावेला हमनीं के सभ्यता जवना के ढोल पूरा संसार भर घूम के पिटेनीं जा...?'

जे दूसरा के बेटी के साथ मानवता के समूचा बंधन तूर के खाली व खाली ओकरा के कष्ट आ दुःख के दंश देके मार दिहल जाव..?

हमनीं के काहे भूल जाइले सन जे आपनो बेटी केहू के घर में बहू बनके जाई, चाहे बिया!!

समय बड़ी तेजी से गुजरता अउर समय के भीतर हमनीं के ई सामाजिक सुधार ना भइल। देहज रूपी कीड़ा के अंत ना भइल, त् बड़ी जल्दी सभे के महाप्रलय के मुख में समावे खातिर तैयार रहे के पड़ी।

इति...।

◆ ◆ ◆

नन्दीश्वर द्विवेदी "राजन"

ग़ोपालगंज (बिहार)

राउर बात

भोजपुरी अब बोली से भाषा बने के यात्रा पर निकल रहल बा। लिजलिज भाव,विदेसी भाषा के भाव आ सैली के तस्करी,साहित्य के नामपर रूढ विधर्मी धार्मिक सामग्री के ठूस-ठास से मुक्त हो के स्वभाव आ भाषा के सृजन करत मौलिक साहित्य रचना के श्री गणेश आप लोग जइसन युवा रचनाकार से ही संभव बा। बधाई। सृजन सिद्ध करता कि भोजपुरी में प्रतिभा के आगमन हो गइल बा। जरूरत बा साजे -सँवारे के।

सुधाकर मणि त्रिपाठी

सुंदर रचना के भरमार बा। एक से बढ़ के एक रचना बा, कनखी पढ़ी के दिल बाग़ बाग़ हो गइ। सिरिजन के १८वाँ अंक में, पढ़ के बड़ी निमन लाग। सम्पादकीय टीम के हार्दिक बधाई।

रघुनंदन शर्मा, सासाराम,बिहार

हम सिरिजन के नियमित पाठक हई, समय से प्रकाशन सिरिजन के खास पहचान ह, नियमित वाला गुण भीड़ से अलगा खड़ा क देला सिरिजन के। टीबी चैनल देत सनेसू चीतामय भा देश नरेसू- डॉ अनिल चौबे के नियमित कॉलम कनखी हमरा बढ़ मन भावेल। बिनोद जी के लिखल कहानी नेग भी हमार मन मोह लेहलस। बाकी कुल्हिये रचना बढ़िया बा। गीत गजल त गुनगुनाये लायक बा।

पशुपति यादव, बक्सर, बिहार

सिरिजन के १८वाँ अंक बड़ी सुंदर अंक बन पड़ल बा सब रचना स्तरीय आ संजोगे जोग बा सिरिजन परिवार के मेहनत देखत बनत बा। बधाई सिरिजन परिवा।

कनक किशोर, रांची, झारखण्ड़

सिरिजन के १८वाँ अंक पढ़नी पढ़ के लागल समय के दरपन समय पर, लगनशील के इजहार बा ई अंक।

विद्या शंकर विद्यार्थी, रामगढ, बिहार

सम्यक समायोजन के साथ उत्कृष्ट आवरण पृष्ठ बा सिरिजन के १८वाँ अंक के ••• मां भवानी की कृपा से पत्रिका के हर अंक अपने आप में एगो विशेष होत जा रहल बा, एकरा खातिर सम्पादकीय टीम आ प्रबंधकीय टीम के हर एक भाई बहिन के हार्दिक बधाई आ शुभकामना ब।

सुरेश कुमार, मुंबई

कहल जाला न दुनिया के कुल्हिये पकवान फीका बा माई के हाँथ के ब्यंजन के आगे । सिरिजन के १८वाँ अंक पढ़े के मिलल, अपना माई भाषा में कहानी, कविता, गीत गजल कुल पढ़ी के बड़ा बढियाँ लागल। हम त ठान लेले बानी अब से नियमित हम पत्रिका के पढ़ब। बधाई बा सिरिजन के प्रकाशकीय टीम के निस्वार्थ भाव से आपन कर्म करे खातिर।
दुष्यंत ठाकुर, सीतामढ़ी, बिहार

दुष्यंत ठाकुर, सीतामढ़ी, बिहार

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया के भोजपुरी साहित्यिक आ सांस्कृतिक महोत्सव-5

भोजपुरी खातिर समरपन, सहकार आ सामूहिक प्रयास के नाम ह "जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया"।

विगत ०२ नवंबर २०२२ के भोजपुरी के प्रयाग अमहीं मिश्र में भोजपुरिया पानी आ जवानी अमिट निसानी खींच के "जय भोजपुरी -जय भोजपुरिया" परिवार के संरक्षकद्वय श्री सुरेश कुमार आ कन्हैया प्रसाद तिवारी 'रसिक' आ अध्यक्ष श्री सतीश कुमार त्रिपाठी जी की अगुआई में अपना पाँचवाँ बार्षिक साहित्यिक आ सांस्कृतिक महोत्सव में एगो नया कहानी लिखलसि जवना के इयाद बहुत दिन ले मन- मस्तिष्क पर चढ़ल रही।

सर्वश्री सतीश कुमार त्रिपाठी जी, अध्यक्षा जी, ज्वाला बाबू, विमलेन्दु भूषण पाण्डेय जी, सेवानिवृत्त प्राध्यापक जीतेन्द्र नाथ पाण्डेय जी, केशव तिवारी उर्फ चुन्नू बाबा आ शिवाजी तिवारी जे के दीया जरा के भोजपुरी के महान गीतकार "अंजन जी" के छायाचित्र पर माला आ पुष्प चढ़ावते कार्यक्रम के विधिवत शुरुआत भइल। आचार्य धर्मेंद्र नाथ मिश्र जी आ रत्नेश मिश्र जी के स्वस्तिवाचन से माहौल पवित्र हो गइल।

अध्यक्ष जी के स्वागत भाषण आ भोजपुरी की दशा-दिशा पर वक्तव्य पर पांडाल से "जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया" के जोरदार नारा गूँजल। ज्वाला बाबू "जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया" के कइल आ भभिस में करे जाएवाला कारज के बारे में जानकारी दिहनीं कि भभिस में परिवार के केहू सवांग/सवांगी का आपन रचना छपवावे के परेशानी ना उठावे के परी। "जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया" परिवार सबके रचना बारी- बारी से छपवावे के सार्थक आ इमानदार प्रयास करी।

एकरा बाद परिवार के दू सवांग बाबूराम भगत जी आ राजेश ठाकुर जी के असमय बैकुंठवासी भइला पर उपस्थित समुदाय द्वारा खड़ा हो के दू मिनट मौन रहि के सरधांजली देत माहौल तनिक गमगीन त भइल लेकिन नियति के शाश्वत गति मान के कार्यक्रम आगे बढ़ावल गइल।

भोजपुरी खातिर समरपन, सहकार आ सामूहिक प्रयास के नाम ह "जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया"।

विगत ०२ नवंबर २०२२ के भोजपुरी के प्रयाग अमहीं मिश्र में भोजपुरिया पानी आ जवानी अमिट निसानी खींच के "जय भोजपुरी -जय भोजपुरिया" परिवार के संरक्षकद्वय श्री सुरेश कुमार आ कन्हैया प्रसाद तिवारी 'रसिक' आ अध्यक्ष श्री सतीश कुमार त्रिपाठी जी की अगुआई में अपना पाँचवाँ बार्षिक साहित्यिक आ सांस्कृतिक महोत्सव में एगो नया कहानी लिखलसि जवना के इयाद बहुत दिन ले मन- मस्तिष्क पर चढ़ल रही।

सर्वश्री सतीश कुमार त्रिपाठी जी, अध्यक्षा जी, ज्वाला बाबू, विमलेन्दु भूषण पाण्डेय जी, सेवानिवृत्त प्राध्यापक जीतेन्द्र नाथ पाण्डेय जी, केशव तिवारी उर्फ चुन्नू बाबा आ शिवाजी तिवारी जे के दीया जरा के भोजपुरी के महान गीतकार "अंजन जी" के छायाचित्र पर माला आ पुष्प चढ़ावते कार्यक्रम के विधिवत शुरुआत भइल।
आचार्य धर्मेंद्र नाथ मिश्र जी आ रत्नेश मिश्र जी के स्वस्तिवाचन से माहौल पवित्र हो गइल।
पधारल अतिथि सब के स्वागत में मंच व्यवस्थापक सर्वश्री मुन्ना तिवारी, राजेश तिवारी, दयानिधि मिश्र आ डब्लू दूबे के नेतृत्व में अमहीं मिश्र, छठियाँव बाजार आ डिघवा के सैकड़न लोग उमंग, उल्लास, उत्साह आ समर्पित भाव से लागल रहे।

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय के भोजपुरी के प्रोफेसर डॉ. जयकान्त सिंह जी अपना वक्तव्य में गोपालगंज के भोजपुरी साहित्य के विरासत के चर्चा करत कहनीं कि "जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया" राष्ट्रीय स्तर के महोत्सव करा के मील के नया पत्थल गड़ले बा। ई सनेस गाँव-गाँव ले पहुँचे के चाहीं जे ए सम्मेलन के सार्थकता सभे जानो।

भोजपुरी आ हिन्दी के वरिष्ठ आ श्रेष्ठ साहित्यकार मऊ से पधारल डॉ. कमलेश राय जी के ए परिवार द्वारा हर साल दिहल जाएवाला प्रतिष्ठित "अंजन सम्मान" अध्यक्ष त्रिपाठी जी आ जयकान्त सिंह जी द्वारा समर्पित करत घरी पूरा पांडाल ताली से गूँज गइल।

"जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया" परिवार श्रेष्ठ रचना खातिर अपना परिवार के दू सवांग/सवांगी के श्रेष्ठ रचनाकार के सम्मान से सम्मानित करेला। ए साल ई सम्मान वरिष्ठ रचनाकार, सेवानिवृत्त शिक्षक आ सुन्नर अनुकरणीय सुभाव के धनी आदरनीय मदन मोहन पाण्डेय जी आ श्री अरविन्द श्रीवास्तव जी के दिहल गइल।

ए बीच में पूरा हरख आ उल्लास से संगीत सुभाष के हर्फ प्रकाशन से प्रकाशित भोजपुरी गीतन के किताब "कलरव में राग अमंद" आ बलिया निवासी कृष्णमुरारी राय जी के श्रीमद् भगवद्गीता के भोजपुरी भावानुवाद के विमोचन अध्यक्ष जी, जयकान्त सिंह जी, ज्वाला बाबू, जीतेन्द्र नाथ पाण्डेय, कमलेश राय आ अउर उपस्थित गणमान्य साहित्यकार सब का हाथ से भइल।

कविसम्मेलन के शुरुआत पहिलहीं से घोषित अध्यक्ष श्री अखिलेश्वर मिश्र (बेतिया) की अध्यक्षता में भइल जवन गोपालगंज जिला के वरिष्ठ, सुयोग्य, सुशिक्षित आ स्वनामधन्य कवि संजय मिश्र संजय जी के संचालन में देर साँझि ले चलल। उपस्थित कविगन:-
सर्वश्री
०१- डॉ. कमलेश राय
०२- संजय मिश्र संजय
०३- सत्यप्रकाश शुक्ल
०४- अरविन्द श्रीवास्तव
०५- मदनमोहन पाण्डेय
०६- पाण्डेय अकेला
०७- लोकनाथ तिवारी
०८- हिमांशु शेखर पाण्डेय
०९- जीतेन्द्र नाथ पाण्डेय
१०- सर्वेश तिवारी श्रीमुख
११- अवनीश मिश्र
१२- नन्दीश्वर मिश्र
१३- हृदयानंद विशाल
१४- रविनंदन सैनी
१५- कु. रेखा
१६- अखिलेश्वर मिश्र
१७- श्याम श्रवन
१८- सुजीत कुमार पाण्डेय
१९- राजकुमार बावरा
२०- अमरेन्द्र कुमार सिंह
२१- जीतेन्द्र तिवारी
२२- विनोद गिरि
२३- कृष्ण मुरारी राय
२४- आकाश महेशपुरी
२५- मधुसूदन पाण्डेय
२६- हरेन्द्र पाण्डेय
२७- उमेश चौबे
२८- ममता जी

२९- माया शर्मा
३०- माहिर विचित्र
३१- शैलेन्द्र असीम
३२- अशोक शर्मा
३३- कृष्णा कुमार श्रीवास्तव

महोत्सव के दूसरा सत्र के उद्घाटन पूर्व विधायक बैकुंठपुर, बिहार प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष श्री मिथिलेश तिवारी जी फीता काट के सहयोगी नरसिह तिवारी जी, शिवाजी तिवारी जी, भूपेंद्र शाही जी, कौशल किशोर मिश्र (डिम्पल)जी, गोपालगंज भाजपा क्रीड़ा मंच के अध्यक्ष संतोष मिश्र जी आ गणमान्य लोगन के साथे कइनीं। अपना सम्बोधन से मिथिलेश तिवारी जी उपस्थित जनसमूह के मन मोहि लिहनीं आ भोजपुरी खातिर नया नजरिया बनावे के प्रेरित क गइनीं।

सीवान जिला के मूल निवासी, कोलकाता में रहि के शिक्षा- दीक्षा आ साथे संगीत के विधिवत शिक्षा ले रहल अजय सिह सिसोदिया जी के बेटी श्रद्धा सिसोदिया आ समृद्धि सिसोदिया (सिसोदिया सिस्टर्स) के स्मृति शेष तिस्ता के इयाद आ सम्मान में "जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया" परिवार के "तिस्ता सम्मान" प्रसिद्ध लोक कलाकार श्री उदय नारायण सिह जी के हाथ से देत घरी उपस्थित जनसमूह ताली के घनघोर गर्जना से स्वागत कइलसि।

"जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया" परिवार अपना परिवार के एक सवांग /सवांगी के श्रेष्ठ गायक के सम्मान देला। ए साल ई सम्मान सुकोमल सुरन आ मधुर सुभाव के धनी श्री रवीश कुमार सानू जी के दिआइल।

भोजपुरी गीतन में फूहड़पन के मन, वचन आ कर्म से जोरदार विरोध करेवाला श्री नन्दकुमार तिवारी जी के मंच पर आवते पुरजोर स्वागत भइल। अध्यक्ष त्रिपाठी जी की अगुआई में पूरा "जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया" परिवार उल्लास आ उत्साह से तिवारी जी के स्वागत कइल। तिवारी जी अपना सम्बोधन से भोजपुरी गीतन में फूहड़पन के जोरदार आ तार्किक विरोध कइनीं आ जनसमूह के नजर में आपन आ "जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया" के सम्मान बढ़ा गइनीं।

अजय गिरि के स्वागत गीत, प्रिस उपाध्याय के सरस्वती वंदना के बाद सिसोदिया सिस्टर्स के अति उत्तम प्रस्तुति, उदय नारायण सिह आ सृष्टि सिह के पारम्परिक गीत पर जुगलबंदी, कमलेश हरिपुरी जी के शास्त्रीयतायुक्त लोक संगीत, प्रीति कुशवाहा के धमाकेदार प्रस्तुति, श्रेयांश मिश्र के मधुर सुर, गोपाल राय जी के अनूठा गायन, राकेश तिवारी जी के पंचम सुर, विनोद गुप्ता के मँजल आवाज आ राहुल शर्मा के शानदार गवनई के श्रोता रात भर आनन्द उठवलें। तब जा के कार्यक्रम अगिला महोत्सव होखला तक ले स्थगित कइल गइल।

सांस्कृतिक सत्र के संचालन रामप्रकाश तिवारी जी कइलें। उनका कुशल संचालन खातिर बहुत बहुत धन्यवाद।

रउआ पधरनीं, ए खातिर "जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया" परिवार अपना अध्यक्ष की अगुआई में कविगण, गवइया, सुनवइया आ ए अवसर पर आपन बेशकीमती समय देबेवाला सभ गणमान्य, प्रेमीजन आगंतुक के तहे दिल से धन्यवाद देता।

हमरा लगे ओतना दमदार शब्द नइखे कि हम असों के कार्यक्रम के बरनन कर सकीं। बाकिर ई कहे में कवनो अतिशयोक्ति नइखे कि जवना लक्ष्य खातिर "जभो-जभो" के स्थापना भइल रहे ओह लक्ष्य के पूरा करे के ओर "जय भोजपुरी- जय भोजपुरिया" परिवार सशक्त रूप से अगहर के भूमिका लगातार निभा रहल बा।

माई भाषा भोजपुरी के प्रति रउवा लोग के समरपन आ समर्थन के फल बा कि आजु "जभो-जभो" भोजपुरी के एगो अग्रणी संगठन के रूप में वैश्विक प्रसिद्धि आ पहचान बनवले बा।

"जय भोजपुरी- जय भोजपुरिया" परिवार आभारी बा भोजपुरी के महान रचनाकार, प्रख्यात कवि अंजन सम्मान से सम्मानित आदरणीय डॉ. कमलेश राय जी के।
ए साल के कार्यक्रम में परिवार के श्रेष्ठ कवि के पुरस्कार से सम्मानित आदरणीय श्री मदन मोहन पाण्डेय जी अउ श्री अरविन्द श्रीवास्तव जी के। "जभो-जभो" परिवार के ओर से बहुत-बहुत शुभकामना।

"जभो जभो" द्वारा हरेक साल नवोदित कलाकार के दिहल जाएवाला "तिस्ता सम्मान" ए साल सिसोदिया सिस्टर्स के प्रदान कइल गइल। सिसोदिया सिस्टर्स के साथ-साथ ए साल के श्रेष्ठ गायक के पुरस्कार पावेवाला परिवार के गायक श्री रवीश कुमार शानूजी के पूरा परिवार के तरफ से हार्दिक शुभकामना।

हर साल के तरे एहू साल भोजपुरी साहित्य के दू गो पुस्तक "कलरव में राग अमंद" (लेखक-श्री संगीत सुभाष) अउ "श्रीमद्भगवत गीता के भोजपुरी भावानुवाद" (अनुवादक-श्री कृष्ण मुरारी राय) के विमोचन जभो-जभो के बार्षिक समारोह में भइल ह। "जभो-जभो" परिवार दुनो साहित्यकारन के भोजपुरी के सेवा खातिर आभारी बा।

परिवार आभारी बा संगीतकार राजन द्विवेदी जी की अगुआई में अपना वादन से सब बड़हन गायक लोग आ जनसमूह के अति आनन्दित करेवाला पूरा टीम के। तहन लोगन के मंगलमय उज्जवल भभिस के मंगलकामना बा।

असों के कार्यक्रम में शामिल समस्त कविगन, गायकबृंद, संगीतकार अउ सुधी श्रोता, मंच संचालक के साथ अमहीं गाँव के समस्त भइया-बहिनी के तहे दिल से आभारी बा।

परिवार आभारी बा अपना संरक्षण सब के। विशेष आभार आ धन्यवाद श्री नरसिह तिवारी जी (उद्योगपति आ भाजपा नेता, गाजियाबाद) आ श्री शिवाजी तिवारी जी के जे "जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया" के ए सलाना महोत्सव में सब तरह के जोगदान दिहल।

आभार, देश- विदेश के आनलाइन कार्यक्रम देखनिहार, सुननिहार आ सहयोगकर्ता भाई- बहिन सब के।

आभार, सोशल मीडिया पर उपस्थित जानल- पहिचान आ अनजान भोजपुरिया भाई- बहिन के जे अपना वाल से कार्यक्रम के प्रचार क के भोजपुरी - भोजपुरिया खातिर आ ए महोत्सव खातिर सार्थक आ असरदार माहौल बनावल।

धन्यवाद बा पंकज भोजपुरिया जी, ज्ञानवर्धन गोविद राव जी, बिनोद भोजपुरिया जी, अंगद मिश्रा जी, प्रभुनाथ सिह जी, अरविद गुप्ता जी, मिथलेश साह जी, योगगुरु शशि प्रकाश तिवारी जी, रामेश्वर तिवारी (डब्लू जी), बृजेश शुक्ला जी, अनुपम तिवारी जी, दिलीप दिवाना जी, भूपेश जी (अंजन जी के कनिष्ठ सुपुत्र), शशि तिवारी (भठवाँ तिवारी), जुगानी जी, इन्द्रेश मणि द्विवेदी जी, दद्दन त्रिपाठी जी, श्री नारायण मिश्र जी, प्रिंस तिवारी जी, छोटे तिवारी जी, गगन तिवारी जी, तेजपाल जी, दुर्गेश्वर नाथ तिवारी जी, विकास मिश्र गोलू जी, सत्येंद्र तिवारी जी, विवेक गुप्ता जी, नरेन्द्र मिश्र जी, मिथिलेश पाण्डेय जी, राजीव जी, सुरेन्द्र सिंह जी आ सैकड़न अउर कार्यकर्ता सवांग के जे तन मन से आगन्तुक सब के सेवा- सुविधा में हर घरी तत्पर रहि के कार्यक्रम के सफल बनावल।

विशेष धन्यवाद संस्थापक सवांग गणेशनाथ तिवारी जी के जे विदेश में नौकरी से समय से निकाल के सोशल मीडिया पर प्रचार सामग्री के निरंतर बनावत गइल आ हरेक पल के सूचना राखि के सुझाव पेठावत गइल।

बहुत बहुत धन्यवाद पुरंजय कुमार गुप्ता (चमन देहाती) जी के। इहाँ का अपनी कठिन नौकरी से समय निकलनीं आ सोशल मीडिया खातिर प्रचार के सामग्री बहुत जल्दी - जल्दी परिवार के अनगिनत सवांग /सवांगी के भेजनीं।

काम भइल बा त कुछ कमी बेसी जरूर भइल होई। जाने-अनजाने भइल कवनो असुविधा खातिर सबसे करबद्ध माफी बा। रउरा सब के सुझाव आ सलाह के इंतजार रही। एही शब्दन के साथ अगिला साल फिनु भोजपुरिया जुटान के आशा में ढेर सारा सुकामना के साथे-

संगीत सुभाष,
उपाध्यक्ष,
"जय भोजपुरी जय भोजपुरिया"
प्रधान सम्पादक - "सिरिजन", भोजपुरी तिमाही ई पत्रिका।

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया के

भोजपुरी साहित्यिक आ सांस्कृतिक महोत्सव-5 समारोह के के कुछ फोटो

मीडिया के नजर में जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया के

भोजपुरी साहित्यिक आ सांस्कृतिक महोत्सव-5

दो नवंबर को अमहीं मिश्र में बहेगी भोजपुरी काव्य रस की धारा

संवाददाता, भोरे

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया मंच के तहत दो नवंबर को आयोजित होने वाले भोजपुरी साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार कर ली गयी है. दो सत्रों में आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में भोजपुरी रस की धार अमहीं मिश्र की मिट्टी पर बहाने की खातिर भोजपुरी के कई बड़े कवि और कलाकार पहुंच रहे हैं. इसे लेकर तैयारी शुरू कर दी गयी है.

पहले सत्र में अंजन पुरस्कार वितरण के साथ होगा कवि सम्मेलन : दो नवंबर को अमही मिश्र में आयोजित होने वाले भोजपुरी साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम में पहले सत्र में अंजन पुरस्कार वितरण के साथ साथ भोजपुरी कवि सम्मेलन होगा. इस बार अंजन पुरस्कार यूपी के मऊ के रहने वाले भोजपुरी व हिंदी साहित्यकार डॉ कमलेश राय को दिया जायेगा.

इसके बाद आयोजित कवि सम्मेलन में अंतरराष्ट्रीय कवि डॉ. अनिल चौबे, संजय मिश्र संजय, अखिलेश्वर मिश्रा, अरविंद कुमार श्रीवास्तव, जितेंद्र नाथ पांडेय, मदन मोहन पांडेय, माया शर्मा, संजीव कुमार त्यागी, नंदेश्वर मिश्र नंद, अमरेंद्र कुमार सिंह, सर्वेश कुमार तिवारी, सत्य प्रकाश शुक्ल, रघुवंश मणि दूबे, श्याम श्रवण, रवि नंदन सैनी, कृष्ण मुरारी राय, कुमारी रेखा, जितेंद्र तिवारी, हृदयानंद विशाल, कृष्ण कुमार श्रीवास्तव, शैलेंद्र सिंह, माहिर विचित्र, सुजीत कुमार पांडेय, लोकनाथ तिवारी, आकाश भोजपुरी, नुरैन अंसारी, प्रणव पराग और राजकुमार बावरा अपनी कविता सुनायेंगे.

दूसरे सत्र में भोजपुरी सांस्कृतिक कार्यक्रम में होगा कलाकारों का जमावड़ा : दूसरे सत्र में भोजपुरी सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया है. इसमें भोजपुरी की कई बड़ी हस्तियां शामिल हो रही हैं. इस कार्यक्रम की शुरुआत तिस्ता सम्मान से होगी. यह सम्मान सिसोदिया सिस्टर्स को दिया जायेगा. इस कार्यक्रम में लोकगायक गोपाल राय, कमलेश उपाध्याय हरिपुरी, राकेश तिवारी, श्रद्धा सिसोदिया, समृद्धि सिसोदिया, विनोद गुप्ता, राहुल शर्मा, राधेश्याम, कुमार सृष्टि सिंह, श्रेयांश मिश्रा, प्रीति कुशवाहा, प्रिंस उपाध्याय, सर्वेश कुमार शानू, विनय तिवारी अपनी-अपनी प्रस्तुति देंगे. इसकी जानकारी देते हुए जय भोजपुरी जय भोजपुरिया के अध्यक्ष उद्योगपति सतीश कुमार त्रिपाठी ने बताया कि कार्यक्रम की तैयारी अंतिम चरण में है. इसकी रूपरेखा तैयार कर ली गयी है.

प्रभात खबर Mon, 24 October 2022
https://epaper.prabhatkhabar.com/c/70650693

वार्षिक महोत्सव दो नवंबर को

- जय भोजपुरी, जय भोजपुरिया का पांचवा वार्षिक महोत्सव
- कार्यक्रम में भोजपुरी से जुड़ी नामचीन हस्तियां शामिल होंगी

ससु, भोरे : भोजपुरी की माटी और धाती को स्वच्छ तथा समृद्धि रखने के लिए संकल्पित संस्था जय भोजपुरी, जय भोजपुरिया का पांचवा वार्षिक महोत्सव दो नवंबर को मनाया जाएगा। भोरे प्रखंड क्षेत्र के अमही मिश्र गांव में आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में जहां देश-विदेश की भोजपुरी से जुड़ी कई नामचीन हस्तियां शामिल होंगी, तो वहीं भोजपुरी के कवि और कलाकार अपने काव्य और कौशल का जलवा बिखेरेंगे।

संस्था के अध्यक्ष, उद्योगपति व अमाही गांव निवासी सतीश चंद्र त्रिपाठी ने बताया कि भोजपुरी के उत्तरोत्तर विकास के लिए यह संस्था संकल्पित है। इससे जुड़े लोग ने भोजपुरी में फैली अश्लीलता को सामाजिक जागरण के माध्यम से समाप्त कर इसे गौरवपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित करने के लिए लगे हुए हैं। महोत्सव में कवि और कलाकारों को सम्मानित करने के साथ ही कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम का पहला सत्र अंजन पुरस्कार व कवि सम्मेलन के लिए निर्धारित किया गया है। इसमें इस वर्ष अंजन पुरस्कार के लिए भोजपुरी और हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि व साहित्यकार यूपी के मऊ निवासी कमलेश राय को दिया जाएगा। कवि सम्मेलन में देश के जाने-माने कवि डॉक्टर अनिल चौबे, संजय मिश्र संजय, अखिलेश्वर मिश्र, अरविंद श्रीवास्तव, सुभाष पाण्डेय, जितेंद्र पांडे, राजीव त्यागी, मदन मोहन पांडे, हृदयानंद विशाल, नवदेश्वर मिश्र आदि अपने काव्य पाठ प्रस्तुत करेंगे, तो दूसरे सत्र में तीस्ता सम्मान तथा भोजपुरी गायन का कार्यक्रम रखा गया है। इसमें इस वर्ष तीस्ता सम्मान सिसोदिया सिस्टर को प्रदान किया जाएगा। भोजपुरी गीत गायन के लिए ख्याति प्राप्त लोक गायक गोपाल राय, कमलेश उपाध्याय, राकेश तिवारी, श्रद्धा सिसोदिया, समृद्धि सिसोदिया, विनोद गुप्ता, राहुल शर्मा, राधे श्याम कुमार, सृष्टि सिंह, प्रिंस उपाध्याय, प्रीति कुशवाहा आदि अपनी गीत और ग़ज़लों का जलवा बिखेरेंगे।

अमही में दो नवम्बर को होगा महोत्सव

भोरे। संस्था जय भोजपुरी जय भोजपुरिया की तरफ से बुधवार को भोजपुरी साहित्यिक-सांस्कृतिक महोत्सव- पांच का आयोजन आगामी 02 नवंबर को किया जाएगा। कार्यक्रम की सफलता को लेकर शुक्रवार को आयोजन समिति के सदस्यों की बैठक हुई। अमही मिश्र गांव निवासी और संस्था के अध्यक्ष सतीश चंद्र त्रिपाठी ने बताया कि कार्यक्रम को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने को लेकर बैठक में रणनीति बनाई गई।

हिन्दुस्तान

अपने युवा

जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया के 5वें वार्षिक महोत्सव की तैयारियां पूरी

भोरे। प्रखंड के अमही मिश्र गांव में आगामी दो नवंबर को जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया के तत्वावधान में आयोजित होनेवाले साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम के पांचवें वार्षिक महोत्सव की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं।

इस कार्यक्रम में देश के अलग-अलग भागों से आनेवाले भोजपुरी कवि और गायक अपनी प्रतिभा का जलवा बिखेरेंगे। संस्था के अध्यक्ष सतीश चंद्र त्रिपाठी ने बताया कि भोजपुरी की माटी और धाती को स्वच्छ व समृद्ध रखने के लिए हमारी संस्था लगातार प्रयास कर रही है। संस्था से जुड़े लोग भोजपुरी में फैली अश्लीलता को सामाजिक जागरण के माध्यम से समाप्त कर इसे गौरवपूर्ण स्थान दिलाने के कार्य में लगातार लगे हुए हैं। इसी उद्देश्य के तहत हमारी संस्था प्रत्येक वर्ष महोत्सव मनाती है। इस साल पांचवां वार्षिक महोत्सव दो नवंबर को आयोजित हो रहा है। कार्यक्रम दो सत्र में आयोजित होगा।

मेधावी कवि किए जाएंगे सम्मानित

दस्तक प्रभात प्रतिनिधि

देवरिया। भोजपुरी के माटी और छाती को समृद्ध एवं संकल्पित रखने के लिए भोजपुरी संस्था का पांचवा वार्षिकोत्सव 2 नवंबर को भोरे प्रखंड के अमही मिश्र गांव में संपन्न होगा इसमें दूर दराज से आए हुए तमाम भोजपुरी कवि भाग लेंगे । बताते चलें कि प्रतिवर्ष जय भोजपुरी जय भोजपुरिया के तरफ से कवि सम्मेलन का आयोजन ग्राम अमाही मिश्र थाना भोरे जिला गोपालगंज में होता है इस वर्ष नामचीन साहित्यकार अपनी कला की काव्यधारा बहाएंगे। संस्था के अध्यक्ष उद्योगपति सतीश चंद्र त्रिपाठी के द्वारा जानकारी मिली है कि भोजपुरी के विकास हेतु यह संस्था संकल्पित है कम के पहले सत्र में कवि सम्मेलन संचालन अंतरराष्ट्रीय कवि डॉ अनिल चौबे जी को सौंपा गया है । मऊ से आने वाले कवि कमलेश राय को अंजन पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। तत्पश्चात दूरदराज से आए हुए अंतरराष्ट्रीय कविगण कविता की गंगा बहाएंगे।आने वाले कवियों में अमरिंदर सिंह, अंश पांडे, रविनंदन सैनी, रामेश्वर तिवारी, हृदयानंद विशाल नवदेश्वर मिश्र सहित तमाम कवि अपनी भोजपुरी कविता से काव्य रस की धारा बहाएंगे।

जय भजपुरी जय भोजपुरिया आ सिरिजन परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि

भोजपुरी के सजग, जागरूक पहरुआ, ध्वज वाहक, भोजपुरी से अश्लीलता के उखाड़ के फेंके खातिर दृढ संकल्पित भूतपूर्वक वायु सैनिक आसु कवि रोहतास जिला के हथडीहा गाँव के रहवइया आदरणीय कन्हैया प्रसाद तिवारी "रसिक" जी के निधन 10 नवम्बर'22 के हो गइल। श्राद्ध कर्म 24 नवम्बर'22 के सम्पन्न भइल। स्थानीय गणमान्य नागरिकन के साथे साथ जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया परिवार के सदस्य लोग भी सदेह उपस्थित हो के आपन बिनम्र श्रद्धांजलि अर्पित कइल।

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

निहोरा

माईभाषा के सम्बन्ध जनम देवे वाली माई आ मातृभूमि से बा, माईभाषा त अथाह समुद्र बा, ओके समझल बहुत आसान काम नइखे। भोजपुरिया क्षेत्र के लोग बर्तमान में रोजी रोटी कमाए खातिर आ अपना भविष्य के सइहारे खाति अपनी माँटी आ अपनी भाषा से दूर होत चल जाता, ओहि दूरी के कम करे के प्रयास ह "सिरिजन" । जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया, आपन माँटी -आपन थाती के बचावे में प्रयासरत बिया इहे प्रयास के एगो कड़ी बा "सिरिजन" । भोजपुरी भाषा के लिखे आ पढ़े के प्रेरित करे खातिर एह ई-पत्रिका के नेंव रखाइल । "सिरिजन" पत्रिका रउवा सभे के बा, हर भोजपुरी बोले वाला के बा आ ओकरे खातिर बा जेकरा हियरा में माईभासा बसल बिया । ई रउरे पत्रिका ह, उठाईं लेखनी, जवन रउरा मन में बा लिख डाली, ऊ कवनो बिध होखे कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, भा गीत गजल, हाइकू, ब्यंग्य आ भेज दिहीं "सिरिजन" के ।

रचना भेजे के पहिले कुछ जरूरी तत्वन प धियान देवे के निहोरा बा :

1. आपन मौलिक रचना यूनिकोड/कृतिदेव/मंगल फॉण्ट में ही टाइप क के भेजीं। फोटो भा पाण्डुलिपि स्वीकार ना कइल जाई।
2. रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार जरूर पढ़ीं, रचना के शीर्षक, राउर रचना कवन बिधा के ह जइसे बतकही, आलेख, संस्मरण, कहानी आदि क उल्लेख जरूर करीं । कौमा, हलन्त, पूर्णविराम प बिशेष धियान दीं। लाइन के समाप्ति प डॉट के जगहा पूर्णविराम राखीं ।
3. एकर बिशेष धियान राखीं कि रउरी रचना से केहू के धार्मिक, समाजिक आ ब्यक्तिगत भावना के ठेस ना पहुंचो। असंसदीय, फूहड़ भाषा के प्रयोग परतोख में भी ना दियाव, एकर बिशेष धियान देवे के निहोरा बा ।
4. राउर भेजल रचना सम्पादक मंडल के द्वारा स्वीकृत हो जा तिया त ओकर सूचना मेल भा मैसेज से दियाई ।
5. आपन एगो छोट फोटो, परिचय जइसे नाम, मूल निवास, बर्तमान निवास, पेशा, आपन प्रकाशित रचना भा किताबन के बारे यदि कवनो होखे त बिवरण जरूर भेजीं।
6. रचना भा कवनो सुझाव अगर होखे त रउवा ईमेल - sirijanbhojpuri@gmail.com प जरूर भेजी ।
7. रउरा हाथ के खिचल प्राकृतिक, ग्रामीण जीवन, रीति- रिवाज के फोटो भेज सकतानी। धियान राखीं ऊ फोटो ब्यक्तिगत ना होखे ।

◆ ◆ ◆

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

निहोरा

माईभाषा के सम्बन्ध जनम देवे वाली माई आ मातृभूमि से बा, माईभाषा त अथाह समुद्र बा, ओके समझल बहुत आसान काम नइखे। भोजपुरिया क्षेत्र के लोग बर्तमान में रोजी रोटी कमाए खातिर आ अपना भविष्य के सइहारे खाति अपनी माँटी आ अपनी भाषा से दूर होत चल जाता, ओहि दूरी के कम करे के प्रयास ह "सिरिजन" । जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया, आपन माँटी -आपन थाती के बचावे में प्रयासरत बिया इहे प्रयास के एगो कड़ी बा "सिरिजन" । भोजपुरी भाषा के लिखे आ पढ़े के प्रेरित करे खातिर एह ई-पत्रिका के नेंव रखाइल । "सिरिजन" पत्रिका रउवा सभे के बा, हर भोजपुरी बोले वाला के बा आ ओकरे खातिर बा जेकरा हियरा में माईभासा बसल बिया । ई रउरे पत्रिका ह, उठाईं लेखनी, जवन रउरा मन में बा लिख डाली, ऊ कवनो बिध होखे कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, भा गीत गजल, हाइकू, ब्यंग्य आ भेज दिहीं "सिरिजन" के ।

रचना भेजे के पहिले कुछ जरूरी तत्वन प धियान देवे के निहोरा बा :

1. आपन मौलिक रचना यूनिकोड/कृतिदेव/मंगल फॉण्ट में ही टाइप क के भेजीं। फोटो भा पाण्डुलिपि स्वीकार ना कइल जाई।
2. रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार जरूर पढ़ीं, रचना के शीर्षक, राउर रचना कवन बिधा के ह जइसे बतकही, आलेख, संस्मरण, कहानी आदि क उल्लेख जरूर करीं । कौमा, हलन्त, पूर्णविराम प बिशेष धियान दीं। लाइन के समाप्ति प डॉट के जगहा पूर्णविराम राखीं ।
3. एकर बिशेष धियान राखीं कि रउरी रचना से केहू के धार्मिक, समाजिक आ ब्यक्तिगत भावना के ठेस ना पहुंचो। असंसदीय, फूहड़ भाषा के प्रयोग परतोख में भी ना दियाव, एकर बिशेष धियान देवे के निहोरा बा ।
4. राउर भेजल रचना सम्पादक मंडल के द्वारा स्वीकृत हो जा तिया त ओकर सूचना मेल भा मैसेज से दियाई ।
5. आपन एगो छोट फोटो, परिचय जइसे नाम, मूल निवास, बर्तमान निवास, पेशा, आपन प्रकाशित रचना भा किताबन के बारे यदि कवनो होखे त बिवरण जरूर भेजीं।
6. रचना भा कवनो सुझाव अगर होखे त रउवा ईमेल - sirijanbhojpuri@gmail.com प जरूर भेजी ।
7. रउरा हाथ के खिचल प्राकृतिक, ग्रामीण जीवन, रीति- रिवाज के फोटो भेज सकतानी। धियान राखीं ऊ फोटो ब्यक्तिगत ना होखे । ◆ ◆ ◆

जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया

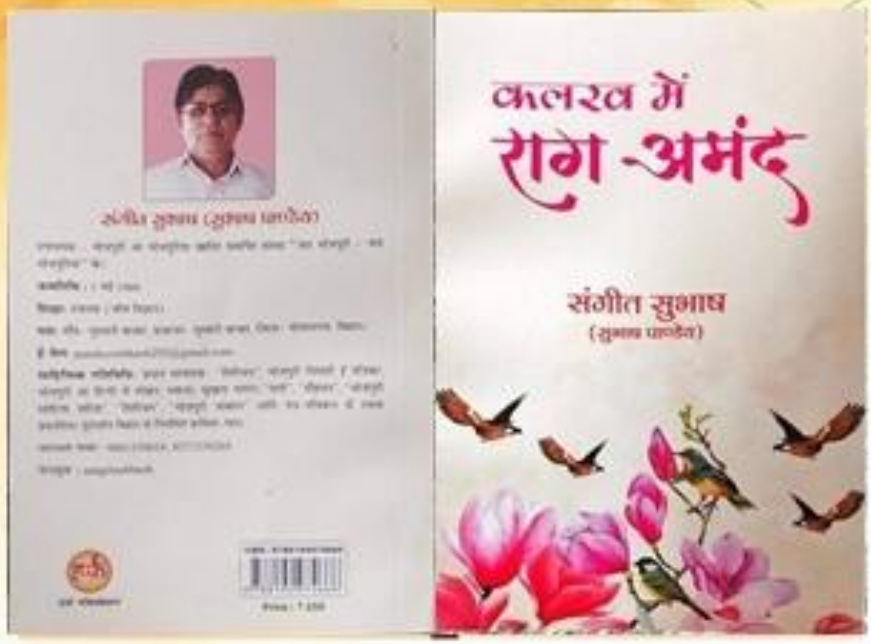

भोजपुरी साहित्य-संस्कृति के प्रचार प्रसार, सरंक्षण आ संवर्धन में भोजपुरी साहित्य के महत्वपूर्ण तारा श्री सुभाष पाण्डेय(संगीत सुभाष) जी के अतुलनीय योगदान बा।

रउरा द्वारा भोजपुरी किताब किन के पढ़ल चाहे केहू के उपहार में देहल, भोजपुरी खातिर बड़हन योगदान रही।

किताब खातिर सम्पर्क करीं :
हर्फ़ पब्लिकेशन
मोबाइल नं. 09625255734